फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 73 संख्याः 98 प्रभात जयपुर, बुधवार 9 नवम्बर , 2022 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

# राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

**Umrao Singh the General Who Said 'No'**

"The three tier concept of defence of NEFA as formulated by Gen Umrao Singh was tactically sound; had it been properly implemented."

**Yard Waste Value**

**Amazing Theme Parks In India** | A complete package of entertainment.

## जैसलमेर आया विदेशी गिद्धों का कुनबा

*सर्दी का मौसम शुरु होने के साथ ही प्रवासी मेहमान पक्षियों का आगमन शुरु हो गया है। जैसलमेर में हर बार की तरह इस बार भी प्रवासी पक्षियों के झुंड आए हैं। यूरेशियन ग्रिफन वल्चर व हिमालय ग्रिफन गिद्धों ने भी डेरा जमाना शुरु कर दिया है। राजस्थान में यूरेशियन ग्रिफन वल्चर कज़ाकिस्तान, अफगानिस्तान और बलूचिस्तान से आते हैं। सर्दी के मौसम में जब इन देशों में कड़ाके की ठंड पड़ती है तब इन क्षेत्रों के पक्षी तुलनात्मक रुप से गर्म प्रदेशों का रुख करते हैं। जैसलमेर के धोलिया और भादरिया में इन पक्षियों के समूह देखे जा रहे हैं। दरअसल इन इलाकों में मवेशी भारी तादाद में हैं तथा इन गिद्धों का मुख्य भोजन चूंकि मृत जानवर हैं इसलिए यहां इन्हें भरपूर भोजन मिलता है। ये गिद्ध मार्च, अप्रैल तक जैसलमेर के इन इलाकों में ही विचरण करेंगे। पर्यावरण प्रेमी राधेश्याम पेमानी ने बताया कि, जैसलमेर में गिद्धों का आना पर्यावरण के लिए बहुत ही सुखद है। ये संकटग्रस्त गिद्ध पर्यावरण को शुद्ध रखने में मददगार होते हैं। ये मरे जानवर खाते हैं जिससे प्रदूषण नहीं फैलता। उन्होंने बताया कि, प्रवासी गिद्धों के साथ- साथ स्थानीय रैंड हैंडेड, व्हाइट रम्पड, लाँग बिल्ड व ईजिप्शियन वल्चर भी नजर आ रहे हैं। इसके अलावा हिमालयन ग्रिफन और यूरेशियन ब्लैक वल्चर भी देखे जा रहे हैं। हिमालय ग्रिफन गिद्ध, हिमालय के उस पार, मध्य एशिया, यूरोप, तिब्बत आदि ठण्डे इलाकों से आते हैं, क्योंकि तेज सर्दी में वहाँ भोजन नहीं मिलता है। जैसलमेर जिले की सर्दी इन पक्षियों के लिए अनुकूल है। जिले में पशुपालन बहुतायत में होता है इसलिए इन्हें भोजन की कमी नहीं होती है। राधेश्याम पेमानी ने बताया कि, इन दिनों इस इलाके में कुत्तों की संख्या बढ़ने से मृत पशु बचते ही नहीं हैं। उन्होंने बताया कि लंपी नामक बीमारी के कारण पशुओं को मौत के बाद ज्यादातर दफनाया गया जिससे मृत पशु नहीं मिल पा रहे हैं। इसलिए इस बार इन संकटग्रस्त गिद्धों को भोजन की समस्या आड़े आ सकती है।*

# चीन के राष्ट्रपति शी यूक्रेन में न्युक्लियर बम के उपयोग की धमकी के खिलाफ खुलकर सामने आये

**जैसा कि विदित ही है, रूस कई बार सार्वजनिक धमकी दे चुका है कि, यूक्रेन के खिलाफ न्युक्लियर बम का सीमित उपयोग कर सकता है**

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 नवम्बर। यूक्रेन को काबू में करने के लिए रूस की परमाणु युद्ध की धमकी पर चीन ने रूस को यह स्पष्ट व संक्षिप्त संदेश भेजा है कि वह परमाणु विकल्प का इस्तेमाल करने से परहेज करे। उम्मीद है इससे विश्व की चिंता कुछ कम हुई होगी। चीन के राष्ट्रपति शी ने कहा है कि "परमाणु हथियारों का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए और परमाणु युद्ध नही लड़े जाने चाहिए।"

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की एक रिपोर्ट कहती है कि जर्मनी के चांसलर ओलाफ शुल्ज़ के साथ हुई अपनी मुलाकात में राष्ट्रपति शी ने यूक्रेन में चल रहे वर्तमान युद्ध में परमाणु हथियारों के इस्तेमाल के खिलाफ अपनी स्थिति बिल्कुल स्पष्ट कर दी थी। उनकी टिप्पणियों की भाषा उस संयुक्त शपथ के अनुरूप थी कि परमाणु हथियारों का उपयोग सिर्फ रक्षात्मक उद्देश्य के लिए ही किया जाएगा। यह संयुक्त शपथ एक समझौते में थी, जिसे इस वर्ष के जनवरी माह में चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और अमेरिका द्वारा हस्ताक्षरित किया गया था। ये पांच ही परमाणु शस्त्रों से सुसज्जित देश हैं जिन्हें वर्ष 1968 में हुई नॉन-प्रोलिफरेशन ऑफ न्यूक्लियर वैपन्स संधि से मान्यता प्राप्त है।

- **यह सख्त टिप्पणी चीन के राष्ट्रपति ने जर्मनी के चांसलर ओलाफ शुल्ज़ से मुलाकात के दौरान की।**
- **रूस इस टिप्पणी के बाद, कुछ रक्षात्मक मुद्रा में आया।**
- **रूस की तरफ से कहा गया कि, राष्ट्रपति शी की सख्त टिप्पणी का रूस व चीन के संबंधों पर कोई गलत असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि राष्ट्रपति शी द्वारा काम में ली गई भाषा बिल्कुल वो ही है, जो हथियार-अप्रसार नीति के संबंध में चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन व अमेरिका की नीतिगत व्याख्या में है।**
- **रूस की ओर से यह समझाया गया कि, रूस का, न्यूक्लियर बम के उपयोग का कभी भी कोई इरादा नहीं था, रूस ने न्यूक्लियर विकल्प के उपयोग की धमकी केवल इसलिये दी थी कि, नाटो संगठन की सेनाएं रूस में प्रवेश करने की हिम्मत न करें।**

शी का बयान पुतिन के बयान के एक महीने बाद आया है। पुतिन ने कहा था कि रूस अपने लोगों की सुरक्षा के लिए सभी उपलब्ध संसाधनों का इस्तेमाल करेगा और चुनौतियों से निबटने के लिए उसके पास बड़ी संख्या में परमाणु हथियार हैं।

पुतिन की टिप्पणियों ने पश्चिमी देशों को इसे लेकर चिंता में डाल दिया था कि मॉस्को अपने यूक्रेन आक्रमण में परमाणु हथियारों का प्रयोग कर सकता है, लेकिन पुतिन ने पिछले महीने कहा कि राजनीतिक अथवा सैन्य रूप से परमाणु हथियारों की जरूरत नहीं है।

चीन-रूस संबंधों के विशेषज्ञ कहते हैं कि दोनों देश एक-दूसरे के परमाणु सिद्धान्त को समझते हैं और शी का रूख उनके संबंधों को नुकसान नहीं पहुंचाएगा।

सिन्हुआ यूनिवर्सिटी के सैन्टर फॉर इन्टरनैशनल सिक्योरिटी एण्ड स्ट्रैटजी के एक वरिष्ठ अध्येता झाउ बो के अनुसार शुल्ज़ के समक्ष व्यक्त किया गया शी का बयान परमाणु हथियारों को लेकर चीन की दीर्घकालीन स्थिति को परिलक्षित करता है। यह कुछ ऐसा है जिससे मॉस्को भली भांति परिचित है और इसलिए वह संबंधों को खराब नही करेगा।

झाउ, जो कि पीपल्स लिबरेशन आर्मी के सीनीयर कर्नल भी रह चुके हैं, ने कहा कि "चीन ने रूस अथवा यूक्रेन में से किसी का भी पक्ष नहीं लेने का विकल्प है, लेकिन जब बात परमाणु हथियारों की आती है तो चीजें बिल्कुल अलग हो जाती हैं क्योंकि इसमें मानवता का बने रहना शामिल है।

उन्होंने कहा कि अमेरिका और नाटो को यूक्रेन में अपने सैनिकों को भेजने से रोकने में परमाणु हथियारों का उपयोग करने की रूस की धमकी को प्रभावी माना जा रहा है।

झाउ ने कहा कि "रूस की सरकार ने प्रत्यक्ष व स्पष्ट रूप से यह कभी नहीं कहा कि वह परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करेगी। उसने कई बार सिर्फ

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# नीतीश, गुजरात में भारतीय ट्राइबल पार्टी से गठबंधन करने से क्यों कतरा रहे हैं

**हालांकि, गुजरात में 2002 के बाद से नीतीश की पार्टी की स्थिति लगातार गिरती जा रही है, तथा 2017 में तो एक भी सीट नहीं जीत पायी थी**

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 नवम्बर। आगामी गुजरात विधानसभा चुनावों में नीतीश कुमार की जे.डी.यू. की तुलना में छोटूभाई वसावा की भारतीय ट्राइबल पार्टी (बी.टी.पी.) का प्रभाव कहीं ज्यादा है, लेकिन बिहार के मुख्यमंत्री को बी.टी.पी. के साथ गठबंधन करने के मामले में कुछ आपत्तियाँ है।

वसावा की इस घोषणा कि जे.डी.यू. के साथ चुनाव-पूर्व गठबंधन तय हो चुका है तथा कुमार बी.टी.पी का प्रचार करेंगे, के चंद दिन बाद ही, जे.डी.यू. के मुख्य प्रवक्ता के.सी. त्यागी ने आज दावे से कहा कि "अभी इस मामले में अंतिम निर्णय नहीं हुआ है।"

हाल ही में, वसावा के नीतीश कुमार तथा जे.डी.यू. अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ लल्लन सिंह से भेंट की थी। लेकिन बिहार के मुख्यमंत्री जिस कारण से बी.टी.पी. के साथ चुनाव-पूर्व गठबंधन करना नहीं चाहते, वह कारण यह है कि वे नहीं चाहते कि उन्हे विपक्षी एकता के हितों के विरूद्ध काम करने वाले के रुप में देखा जाए। चूँकि कांग्रेस तथा अरविन्द केजरीवाल की आप पार्टी भी गुजरात में चुनाव लड़ रही हैं, इसलिये बी.टी.पी. के साथ जे.डी.यू. का गठजोड़ विपक्ष या धर्मनिरपेक्ष दलों के बिखराव का संकेत दे सकता है।

- **गठबंधन से नीतीश की पार्टी को कुछ लाभ मिलता गुजरात में, वोट प्रतिशत बढ़ने से, पर, नीतीश की राष्ट्रीय भूमिका निभाने की महत्वाकांक्षा को जरूर झटका लगता।**
- **कांग्रेस व आप, दोनों गुजरात में गंभीरता से चुनाव लड़ रही हैं, तथा नीतीश द्वारा ट्राइबल पार्टी से गठबंधन करने से विपक्ष की एकता को झटका लगता। नीतीश की महत्वाकांक्षा का आधार ही विपक्ष की एकता है, अतः वे ट्राइबल पार्टी से गठबंधन का प्रस्ताव कैसे कर सकते हैं।**

जे.डी.यू. सूत्रों का कहना है कि पार्टी ने यह विचार जरूर व्यक्त किया था कि बी.टी.पी. जे.डी.यू के साथ अपने विलय के बारे में विचार कर सकती है। इस परिदृश्य में, जे.डी.यू. नेता चुनाव-पूर्व के गठबंधन के लिये कांग्रेस से सम्पर्क में आने की आशा सँजो सकते हैं।

प्रसंगवश बता दें कि वसावा का जे.डी.यू. के साथ 2007 से 2017 तक, 10 वर्षों की छोटी सी अवधि का जुड़ाव रहा है। जहाँ स्वर्गीय समाजवादी नेता मामा बालेश्वर दयाल की विरासत राजस्थान तथा गुजरात के कुछ क्षेत्रों में आज तक कायम है, लेकिन फिर भी,

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

## भारत-फ्रांस के वायुसेना अध्यक्षों ने फाइटर जेट उड़ाए

जोधपुर, 8 नवम्बर (कासं)। फ्रांस के वायुसेना प्रमुख स्टीफन माइल ने भारत का सुखोई फाइटर जेट उड़ाया, वहीं भारतीय वायुसेना के चीफ वी.आर चौधरी ने राफेल में उड़ान भरी। इसके साथ ही युद्धाभ्यास के दौरान स्वदेशी फाइटर जेट तेजस ने भी अपना कौशल दिखाया।

- **जोधपुर एयरबेस पर हो रहे भारत और फ्रांस के संयुक्त युद्धाभ्यास में फ्रांस के वायु सेना प्रमुख स्टीफन माइल ने सुखोई जेट और भारत के वायु सेना प्रमुख वी.आर. चौधरी ने राफेल उड़ाया।**

जोधपुर एयरबेस पर इन दिनों दुनियाभर के देशों की निगाहें टिकी हुई

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# 'जो नेता खुद को पार्टी से बड़ा समझे, वह पार्टी छोड़कर चला जाए, वर्ना पार्टी उसे गिरा देगी'

**राजस्थान की गुटबाजी पर प्रियंका गांधी के सलाहकार तथा पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के पौत्र व राजस्थान में "भारत जोड़ो" यात्रा के प्रभारी, विभाकर शास्त्री ने सभी नेताओं को चेतावनी दी**

जयपुर, 8 नवम्बर (का.प्र.)। राजस्थान में कांग्रेस में चल रही गुटबाजी पर भूतपूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के पोते एवं राजस्थान में भारत जोड़ो यात्रा के प्रभारी विभाकर शास्त्री ने कहा है कि " कोई नेता पार्टी से बड़ा नहीं है और जो व्यक्ति अपने आप को पार्टी से बड़ा समझता है तो वह खुद ही पार्टी छोड़ दे। अन्यथा पार्टी उसको गिरा देगी। यह केवल समय की बात है। पार्टी से बड़ा कोई नहीं होता है।" विभाकर शास्त्री कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी के सलाहकार भी हैं।

भारत जोड़ो यात्रा के संबंध में तैयारियां देखने आए विभाकर शास्त्री पहले तो राजस्थान को लेकर किए जा रहे सवालों से बचते रहे, लेकिन जब उनसे राजस्थान की गुटबाजी को लेकर बार-बार सवाल किया गया, तो उन्होंने सभी नेताओं को नसीहत देते हुए कहा कि पार्टी से बड़ा कोई नहीं है। कोई नेता खुद को पार्टी से बड़ा समझता है, तो उसे पार्टी छोड़कर चले जाना चाहिए। शास्त्री ने ऐसा कहकर गुटबाजी में लगे नेताओं को एक तरह से आलाकमान की ओर से संकेत देने का भी प्रयास किया है।

- **विभाकर शास्त्री ने यह भी कहा कि, पार्टी से बड़ा कोई नेता नहीं होता। जो व्यक्ति अपने आप को पार्टी से बड़ा समझता है, वह पार्टी छोड़ दे।**

दूसरी ओर राजस्थान सरकार में पावर सैंट्रलाइजेशन, मंत्री और विधायकों की नहीं चलने को लेकर मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास व राजेंद्र गुढ़ा की ओर से दिए जा रहे सार्वजनिक बयानों को लेकर गोविंद सिंह डोटासरा ने चेतावनी देते हुए कहा कि "ऐसे बयान ना दें, जिससे पार्टी का नुकसान होता हो। यह मंत्री, विधायकों की नैतिक

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

## बाल श्रम के आरोपी को सज़ा

जयपुर, 8 नवंबर। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत द्वितीय ने बाल श्रम कराने वाले अभियुक्त मोहम्मद सय्यूम को 14 साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर 72 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है।

अभियोजन पक्ष की ओर से अदालत को बताया गया कि, तीस जुलाई, 2015 को मानव तस्करी निरोधक यूनिट ने कोतवाली थाना पुलिस को बाल श्रम की सूचना दी थी। यूनिट की सूचना पर पुलिस ने नींदड रावजी का रास्ता स्थित मकान में दबिश दी थी। यहां पुलिस को दस बच्चे चूडियां बनाते हुए मिले। पूछताछ में बच्चों ने

- **बच्चों से श्रम कराने के आरोपी मोहम्मद सय्यूम को, पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत ने 14 साल की सज़ा सुनाई और 72,000 रू. जुर्माना भी लगाया।**

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# कर्नाटक में कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष ने मणि शंकर की भांति कांग्रेस की स्थिति अटपटी की

**जैसा कि विदित है, मणि शंकर अय्यर ने मोदी की, चाय पिलाने का काम करने की अति साधारण स्थिति पर कटाक्ष कर, कांग्रेस को रक्षात्मक मुद्रा में फंसा दिया था**

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरा-

नई दिल्ली, 8 नवम्बर। क्या कांग्रेस के लिये मणि शंकर अय्यर के "चायवाला" कटाक्ष वाली स्थिति फिर आ गई है। इस बार यह घटना कर्नाटक में उस समय घटी, जब राज्य के एक वरिष्ठ कांग्रेस ने यह प्रश्न कर दिया कि हमने एक देश के रूप में, फारसी मूल के शब्द "हिन्दू" शब्द को इतना ज्यादा महत्व आखिर क्यों दे रखा है। भाजपा ने कांग्रेस नेता की यह लूज बॉल झटक ली है तथा उस पर छक्का लगा रही है। भाजपा ने कांग्रेस पर आरोप लगाया है कि उसने संपूर्ण हिन्दू समुदाय का अपमान किया है।

- **कर्नाटक कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष, सतीश जर्कीहोली ने भी अप्रत्यक्ष रूप से "हिन्दू" की परिभाषा की, जो काफी असम्मानजनक मानी जा सकती है।**
- **गुजरात व हिमाचल के चुनाव के पहले, इस टिप्पणी ने कांग्रेस को "हिन्दू विरोधी" होने का तमगा पहना दिया है, और यह हिन्दू व गैर-हिन्दू ध्रुवीकरण, राजनीतिक दृष्टि से भाजपा को बहुत माफिक आ रहा है।**
- **यह समझते हुए कर्नाटक में कांग्रेस के प्रभारी महासचिव सुरजेवाला ने, जर्कीहोली की टिप्पणी से पार्टी की दूरी बनाई और टिप्पणी को दुर्भाग्यशाली बताते हुए, टिप्पणी को रिजैक्ट किया।**
- **कार्यकारी अध्यक्ष जर्कीहोली अडिग रहे और बोले, उन्होंने कोई गलत बात नहीं की, तथा माफी मांगने या टिप्पणी वापस लेने से साफ इंकार किया।**

शीघ्र ही होने जा रहे गुजरात एवं हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनावों तथा इनके कुछ समय बाद होने वाले कर्नाटक विधानसभा चुनावों से पहले, कर्नाटक कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष सतीश जर्कीहोली की यह विवादास्पद टिप्पणी कांग्रेस की संभावनाओं को बहुत ज्यादा नुकसान पहुँचा सकती है। मोदी को "चायवाला" कहकर, उनके बचपन की दीनता-हीनता का उपहास करने वाली मणि शंकर अय्यर की टिप्पणी की तरह ही, कांग्रेस नेता सतीश जर्कीहोली की इस विवादास्पद टिप्पणी ने कांग्रेस के नुकसान की एक जबरदस्त गुंजाइश पैदा कर दी है।

कांग्रेस के इस नुकसान को सुनिश्चित करने के लिये, भाजपा, उसके वरिष्ठ नेता एवं प्रवक्ता कांग्रेस को हिन्दू-विरोधी बताते हुये, उस पर निशाना साध रहे हैं तथा उस पर बहुसंख्यक समाज के खिलाफ नफरत फैलाने का आरोप लगाया है।

यह निश्चित रूप से एक ऐसा विवाद है जिसके बिना ऐसे नाज़ुक मौके पर, जब ऐसे विधानसभा चुनाव होने को हैं, जो 2024 के लोकसभा चुनावों के लिये वातावरण-निर्माण करेंगे, कांग्रेस आराम से अपना काम चला सकती थी। इस टिप्पणी के कुछ मिनटों के अन्दर ही, कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व जर्कीहोली के खिलाफ हो गया तथा उनसे उस टिप्पणी को वापस लेने के लिये कह दिया, जो उन्होंने एक सार्वजनिक सभा को संबोधित करते हुये कही थी। कर्नाटक कांग्रेस के नेता ने कहा था कि हिन्दू नाम दिया ही फारसियों ने है तथा इसका अर्थ अच्छा नहीं होता। विदेशियों

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

## रिज़ल्ट आने के 4 माह बाद भी नहीं मिली अंकतालिका

बीकानेर, 8 नवम्बर (कासं)। राज्य के शिक्षा विभाग में सभी जिलों में संचालित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से जारी कक्षा पांचवीं व आठवीं बोर्ड का परीक्षा परिणाम आने के चार माह बाद भी विद्यार्थियों को अंकतालिका नहीं मिली।

परीक्षा परिणाम 8 जून को घोषित हुआ था। विद्यार्थियों को अभी तक मूल अंकतालिका नहीं मिली है। इस वजह से दूसरे स्कूल में प्रवेश लेने से लेकर विभाग की ओर से मिलने वाली छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने व आधार अपडेशन का कार्य करवाने में अभिभावकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि विद्यार्थियों के पास वर्तमान में केवल ऑनलाइन अंकतालिका की प्रतिलिपि

- **दूसरे स्कूल में प्रवेश लेने, छात्रवृति आवेदन आदि काम अटके हुए हैं।**

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

## विचार बिन्दु

**अपना जीवन लेने के लिए नहीं देने के लिए है। –स्वामी विवेकानंद**

# डिजिटल आभासी संसार भौतिक जगत को प्रभावित करता है

अब एक डिजिटल संसार है। मानव जिस संसार में रहता है उसे प्रकृति ने इस धरती के भौतिक जगत में रचा। विज्ञान की बडी छलांग लगाते हुए मानव ने भौतिक संसाधनों के जरिये डिजिटल संसार रच दिया। यह डिजिटल संसार आभासी दुनिया है जो भौतिक अस्तित्व में नहीं होते हुए भी भौतिक जगत के लिए है। अब जब संसार होगा तो संवाद, अभिव्यक्ति, विरोध और संचार भी होगा। भौतिक संसार में संचार का नियामक समाज रहा है। समाज की ही एक इकाई के रूप में राज्य की भी भूमिका रही है। समाज और राज्य अपने अनुभवों से संचार के नैतिक प्रतिमान बनाते रहे हैं। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सामूहिक समझ से उनका नियमन होता है। मगर समाज और व्यक्ति के बीच खींचतान भी हमेशा चलती रही है। मानव की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता किस सीमा तक स्वीकार्य है और मानव की समाज से अस्वीकृति किस हद तक जा सकती है, यह मुद्दा भी हमेशा बना रहा है। जोधपुर के विलक्षण बुद्धिजीवी हरीश जोशी की आधी सदी से अधिक पहले आई पुस्तक: 'सामाजिक मानव और अमानवीय समाज' ने इसे जिस प्रकार रेखांकित किया वह आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यह वैचारिक द्वन्द्व इस समय फिर से सब को झकझोर रहा है। आभासी दुनिया की धमाकेदार उपस्थिति ने इस मुद्दे को और धार दे दी है। उत्पादों के प्रचार के लिए कंप्यूटरों के अंतर्जाल से बनी आभासी दुनिया में बाज़ार को लोक संवाद और जन संचार का कारोबार भी रास आ गया। कारोबारी कंपनियों ने उपयोगकर्ताओं को 'सोशल मीडिया' के मुफ़्त मंच उपलब्ध करा दिए जो अप्रत्याशित रूप से लोकप्रिय हो गये। इन मंचों पर लोग एक दूसरे से जुडें, अपनी दिलचस्पियों का साझा करें, अपनी बात कहें, किसी चीज से नाइत्तफ़ाक़ी है तो उसका विरोध करें यह अनुभव सभी को बहुत भाया। दुनिया भर में एक मर्तबा लगा कि सीमाओं की बाधा नहीं होने से कोई भी अधिनायकवादी राज्य लोक की आवाज़ को दबा नहीं सकेगा और क्रांतियां हो जाएगी। इससे राज्य के नियंताओं और अभिव्यक्ति के नये मंचों की कंपनियों के बीच स्वाभाविक ही ठन गई। राज्यों को लगता है कि आभासी दुनिया का सोशल मीडिया भौतिक जगत में लोगों को राजनैतिक, वैचारिक और धार्मिक समूहों में बांट रहा है, उनमें आपस में वैमनस्य बढा रहा है।

वास्तव में आज के डिजिटल समय में कुछ भी निजी नहीं रहा है। वहां जो भी बात होती है वह अंतत: सार्वजनिक हो जाती है। तब प्रश्न उठता है कि डिजिटल ज़माने में क्या जनसंचार जैसी कोई चीज होती हैं? यह तो सिर्फ संचार है। यहां हम कभी अपने आप से बात करते हैं, कभी मैसेंजर के माध्यम से किसी दूसरे से बात करते हैं। कभी हम फ़ेसबुक के माध्यम से व्यक्तियों के समूह से बात करते हैं। ट्विटर के जरिये इन सब से आगे जाकर विराट संख्या में लोगों से बात करते हैं। अब क्या बात की जाती है उससे आभासी दुनिया को कोई सरोकार नहीं होता। इंटरनेट पर लिखना और लिखे का साझा करना सरल हो गया है। मगर लेखन की शैली बदल गई है। उत्पाद की तरह ही अपनी बात को बहुतों तक पहुंचने के लिए यहां की वर्ड्स लिखने पडते है। इससे लिखी बात को, चित्र को या वीडियो को लोकप्रिय या वायरल किया जाता है। सर्च इंजिन ऑपटिमाईजेशन का ध्यान रखा जाता है। यह कारोबार के लिए था जिसका उपयोग करना चतुर राजनेता और समाजकंटक भी सीख गये हैं। यही सब सीखते हुए सोशल मीडिया के पाठ्यक्रम भी विश्वविद्यालयों में आ गये हैं। इन्हीं योग्यताओं से ट्रोलिंग में बेहूदा बातें भी जम कर होती हैं। पीछे पड लिया जाता हैं किसी के। विरोध में तर्क से अपनी बात नहीं राखी जाती बल्कि व्यक्तिगत तरीके से हमला किया जाता है। कोशिश होती है कि सामने वाले की हिम्मत टूट जाए।

यह सच है कि डिजिटल सोशल मीडिया भौतिक मीडिया के विपरीत ऐसा मंच है जहां किसी का नियंत्रण नहीं है। वहां किसी भी रूप, भाषा और शैली में अपनी बात दर्ज करने के लिए हमें किसी संपादक की सहमति की दरकार नहीं होती। सोशल मीडिया के मंच (प्लेटफ़ॉर्म) चलाने वाली कारोबारी कंपनियां यह कह कर अपना पल्ला झाडती लेती हैं कि उन्होंने तो केवल जगह दी है वहां कौन क्या करता है उसके लिए वे जिम्मेवार नहीं हैं। क्योंकि आभासी मंचों पर कोई भी सरकार केवल अंतर्जाल के तंत्र को बंद करके ही नियंत्रण कर सकती है इसलिए अनेक सरकारें अनेक मौकों पर इंटरनेट सेवा ही बंद कर देती हैं। ऐसा करने वाले देशों की सूची में भारत का नाम तीसरे नंबर पर आता है। राजस्थान में तो परीक्षाओं के दौरान भी इंटरनेट सेवाओं को बंद कर दिया जाना हमने देखा है। इसी माहौल में इन मंचों को नियंत्रित करने के लिए लिए दुनिया भर में और भारत में भी वैधानिक ढांचा बनाया जा रहा है। हमारे यहां इन प्लेटफ़ॉर्म को चलाने वाली दो बडी कंपनियां मेटा (फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि) और ट्विटर तथा शासन के बीच अदालती लड़ाइयां भी जारी है।

**ट्विटर एक हाइकू की तरह है। यहां आपसे अपेक्षा होती है कि आप संक्षिप्त और प्रभावी तरीके से अपनी बात रखें। सिर्फ अपने विचारों का सारांश प्रस्तुत करें। वे लोग जो बदलते समय के साथ कदम मिलाना चाहते हैं और जानना चाहते हैं कि दुनिया कितनी तेजी से बदल रही है वे इसे अपनाते हैं तो इसी के हो कर रह जाते हैं।**

सोशल नेटवर्क की माइक्रो ब्लॉगिंग साइट ट्विटर को चलाने वाली कंपनी और उसे खरीदने वाले एलन मस्क अभी खूब चर्चाओं में है। इस प्लेटफ़ॉर्म पर अभिव्यक्ति की निर्बाध आज़ादी को लेकर भी वैचारिक और कानूनी दोनों स्तर पर चर्चाएं गरम हैं। इस सोशल नेटवर्किंग और माइक्रो ब्लॉगिंग साइट के करोड़ों मुरीद हैं। वेब मेट्रिक्स एलेक्सा के आंकड़े कहते हैं कि अमेरिका और जर्मनी के बाद भारत वह तीसरा देश है जहां लोग सबसे ज्यादा ट्विटर पर हैं। जनवरी 2022 में भारत में ट्विटर के कुल दो करोड 36 लाख उपयोगकर्ता थे। इंटरनेट पर कारोबार का आकलन करने वाली कंपनी कॉमस्कोर इंक इससे आगे बढकर जनकारी देती है। कंपनी का कहना है कि भारत में ट्विटर का इस्तेमाल करने वाले ज्यादातर लोग 15 से 24 साल के बीच के हैं। बेशक, ट्विटर का इस्तेमाल करने वाले ज्यादातर लोग युवा हैं लेकिन ये वे लोग नहीं जो ट्विटर पर सबसे ज्यादा असर छोडते हैं। ट्विटर को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाले लोगों की उम्र 30 साल या उससे ज्यादा है। ये लोग मीडिया, राजनीति और शिक्षा के क्षेत्र से जुडे हुए हैं। ये वे लोग हैं जिनके विचारों से लोग प्रभावित होते हैं, जिनकी लिखी हुई बातों को लोग पढना चाहते हैं। ट्विटर की खास बात यही है कि यहां आपको कम शब्दों में बहुत कुछ कहना होता है। ट्विटर पर उपयोगकर्ता को स्पेस, फ्रीडम और च्वाइस मिलती है। वहां कोई संपादक नहीं है। यहां राजनीति के खिलाड़ी ही नहीं किसी भी समसामयिक मुद्दे पर जम कर विचार प्रकट करने वाले लोग भी मौजूद हैं।

ट्विटर को यह नाम उसके जन्मदाता जक डोरसी ने इसलिए दिया था क्योंकि उनकी कंपनी चाहती थी कि दुनिया भर की उत्तेजना, व्यग्रता और बेचैनी को कैद किया जा सके। शब्दकोश में ट्विटर का अर्थ है- चिडियों की चहचहाहट। इस साइट के लिए यह नाम इसलिए अच्छा था कि एसएमएस टाइप संदेशों के माध्यम से लोग अपनी बात लोगों को पहुंचा सकें- एक समूह में ट्विट कर सकें। उनकी चहचहाहट इंटरनेट की दुनिया में गूंजे। जब ट्विटर की शुरुआत हुई, तब इस पर ट्विट करने वालों का मकसद सिर्फ नेटवर्किंग और दोस्त बनाना था। वे बेमतलब की बातें भी किया करते थे। अब भी फ़िल्म अभिनेत्रियां या सेलेब्रिटीज़ अपनी रोजमर्रा की जिंदगी के बारे में बातें कर लिया करते हैं जो खूब हिट होती हैं क्योंकि उनकी जिंदगी में दिलचस्पी लेने वालों की कमी नहीं। लोगों का कहना है कि शॉर्ट मैसेज, यानी अधिक से अधिक 140 शब्दों में अपनी बात कहने की कला, बहुत प्रभावी होती है। 'ट्विटर आपको बाध्य करता है कि आप अपनी बात टू द प्वाइंट कहें। हालांकि बहुत से लोग जो अपने लंबे लेख साझा करना चाहते हैं वे अपने लेखों के लिंक्स दे कर रास्ता निकाल लेते हैं। किसी ने कहा है कि ट्विटर एक हाइकू की तरह है। यहां आप से अपेक्षा होती है कि आप संक्षिप्त और प्रभावी तरीके से अपनी बात रखें। सिर्फ अपने विचारों का सारांश प्रस्तुत करें। वे लोग जो बदलते समय के साथ कदम मिलाना चाहते हैं और जानना चाहते हैं कि दुनिया कितनी तेजी से बदल रही है वे इसे अपनाते हैं तो इसी के हो कर रह जाते हैं। उन्हें बहुत से फॉलोअर्स मिल जाते हैं जो इसे उनके लिये नशा बना देते हैं।

ट्विटर पर दुनिया के लगभग सभी प्रमुख राजनेताओं की उपस्थिति दर्ज है और अब बडे राजनेता प्रेस विज्ञिप्तयां जारी करके अपनी बात अपने फॉलोअर्स तथा अन्य तक नहीं पहुंचाते बल्कि इस प्लेटफ़ॉर्म से सीधे ही लोगों तक पहुंचाते हैं। अब तो सरकारें भी अपनी नीतियों तथा कार्यक्रमों की घोषणाएं ट्विटर पर ही करती हैं। परंपरागत मीडिया के संपादकों का दखल और उनका रुतबा इस डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से समाप्त हो गया है। मीडिया रिपोर्टरों को भी यह बहुत मुफीद आया है। ट्विटर यूजर्स की टिप्पणियां और सवाल, उनकी रिपोर्टों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं।

आंकड़े बताते हैं कि अधिकांश ट्विटर उपयोगकर्ता सुपर सक्रिय नहीं होते हैं। इसका मतलब है कि ज्यादातर लोग ट्विटर का इस्तेमाल कुछ देने की बजाय उपभोग करने के लिए कर रहे हैं। उन्हीं के दिमागों को प्रभावित करने के लिए विशेष समूह सक्रिय रहते हैं। डेटा से पता चलता है अमेरिका में 10 प्रतिशत ट्विटर उपयोगकर्ता सभी अमरीकी उपयोगकर्ताओं के 92 प्रतिशत ट्वीट्स के लिए ज़िम्मेदार हैं, जिसका अर्थ है कि उपयोगकर्ताओं का एक विशेष रूप से सक्रिय समूह सामग्री का एक बड़ा हिस्सा वहां डाल रहा है। यही कहानी भारत और अन्य जगहों की है।

**–अतिथि संपादक,**
**राजेन्द्र बोड़ा**
**( वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक )**

# कलम वाले नक्सली, कैसे???

"बन्दूक वाले नक्सली हों या कलम वाले, सबका हल खोजें" यह ,29 अक्टूबर 22 के, जयपुर के एक प्रमुख हिंदी अखबार के प्रथम पेज पर शीर्ष हैडिंग है। प्रधान मंत्री के अनुसार....."नक्सलवाद को खत्म करना होगा वह चाहे बन्दूक वाले नक्सली हो या कलम वाले।"

जयपुर से ही प्रकाशित एक शीर्ष अंग्रेजी अख़बार नें इसे कुछ यों छापा है:-" every form of Naxalism,-- with guns or--with pens, be uprooted to prevent them from misleading the youth.--- warned that such forces are increasing their intellectual shere to pervert the minds of coming generations.-- can not be allowed to flourish for-- unity and integrity --nation."

हर कोई सहमत होगा कि हथियार से मसलों का हल करने वाले अपराधी होते है। हिंसा जब पूरे समाज के बडे हिस्से को एक साथ, लगातार प्रभावित करने लगे तो यह आतंकवाद है।

लोकतंत्र में सशस्त्र क्रांति की जरूरत नहीं होती। वोट से सरकार बदली जा सकती है। किन्तु यदि सरकार अन्याय पर उतर आए, मनमानी करे अथवा गलत तरीके से वोट लेकर सत्ता हासिल करे तो क्रांति भी हो सकती है लेकिन यह जनक्रांति होनी चाहिए। लोकतंत्र में जनबल ही सरकार को हटा सकता है।

लेकिन कलम से नक्सलवाद कैसे? कलम से तो विचार निकलते है। विचार अच्छे, खराब, हिंसा उकसाने वाले, नफरत फैलाने वाले हो सकते है। खराब, हिंसा, नफरती विचारों से कोई अपराध का रास्ता पकडता है तो ऐसे अपराधों से निपटने के लिए कानून बने हुए हैं।

आवश्यकता इन कानूनों के अनुसार शीघ्रता से, सख्ताई से, सही सही, निष्पक्ष कार्यवाही करने की है।

क्या है नक्सलवाद?

क्या अलगाववादी आतंकी और तथाकथित नक्सली एक जैसे ही है?

बंगाल के गांव नक्सलबाडी से प्रारम्भ नक्सलवाद, भूमि मालिकों-जमीदारों के खिलाफ भूमि जोतने वालों का आंदोलन था। आंदोलन माओवादी कमन्युस्टों की विचारधारा से प्रभावित था।आंदोलन शांतिपूर्वक नही रहा और हिंसक हो गया। वर्तमान में नक्सली सामान्यत्या सरकारी कर्मचारियों, पुलिस वालों को निशाना बनाते है।

नक्सली सामान्यत: केवल उन अदिवासियों व अन्य नागरिकों को ही निशाना बनाते हैं , जिनके बारे में मुखबिरी करने का संदेह हो । सरकार इस समस्या का समाधान केवल पुलिस व अर्ध सैनिक बलों की गोलियों के माध्यम से ढूंढ रही है।

यक्ष प्रश्न यह है कि क्या गोली से समाधान निकलेगा?

5 दशक का लम्बा समय बीत गया। सैंकडों पुलिस वाले व नागरिक इन संघर्षों की भेंट चढ गए--समाधान तो निकला नहीं !!

नक्सलवाद और आतंकवाद में भारी अंतर है। नक्सली, साधारणतया नागरिकों के दुश्मन नहीं हैं जबकि आतंकवादी शास्त्रबलों, राज्य के कर्मचारियों के साथ -साथ और मुख्यतया निरपराध जनता में खौफ फैलाने और मारने का काम करते हैं। कुछ आतंकवादी देश से अलगावाद का रास्ता अपनाते है व कई बार पडोसी देशों के उकसावे व अपरोक्ष समर्थन से ऐसा करते हैं।

नक्सलवाद वस्तुत: एक हिंसक वर्ग संघर्ष था और अब भी समय समय पर होने वाली हिंसक घटनाएं की जड में वर्ग संघर्ष ही है।

आजादी के बाद पीजेंटरी व खेतिहर मजदूर क्लास को यह उम्मीद थी कि उन्हें उन जमीनों का मालिक बना दिया जाएगा जिस पर वे पीढ़ियों से, राजे, रजवाडों,

महावीर सिंह

जमींदारों के लिए काम कर रहे थे। किसानों की दिक्कतों को पहचानने वाले माणिक्यलाल वर्मा, बलदेव राम मिर्धा, कुभा राम जी, सरदार हरलाल सिंह व अन्य बहुत से अग्रणी किसान नेता थे। यहां भी किसान आंदोलन हुए। बिजोलिया के आंदोलन से तो सब परिचित है। अन्य कई स्थानों पर भी आंदोलन हुए। डीडवाना का डाबड़ा कांड, झुंझुनू में करणी राम, रामदेव के बलिदान, सीकर का गोठड़ा कांड जैसी कई हिंसक घटनाओं के बावजूद 1948 से 1956 के मध्य अनेक भूमि सुधार कानून बने और शीघ्रता-दृढ़ता-ईमानदारी से लागू हुए। अगर यह कानून लागू नहीं होते तो बहुत मुमकिन है कि यहां भी हिंसक वर्ग संघर्ष होते जैसे बंगाल, बिहार में हुए।

इस समस्या को केंद्र सरकार ने समझा। कृषि भूमि सीलिंग कानून बनाने के लिए राज्यों पर दबाव बनाया और लागू करवाए। यधपि बड़े जमीदारों के विरुद्ध बड़ी मंथर गति से इनका क्रियान्वयन हुआ। कहीं-कहीं, अनेक प्रकार के हथकंडे अपना कर अब भी कई बड़े जमींदार है किंतु वे गिनती के हैं।

**कुछ सुझाव:-**

नक्सलियों के संदर्भ में बोले जाने वाले, सो कॉल्ड रेड कॉरिडोर के आदिवादियों और अन्य वनवासियों की भी बहुत ही जायज समस्याएं थी और अब

**■ वर्तमान में नक्सली सामान्यतया सरकारी कर्मचारियों, पुलिस वालों को निशाना बनाते हैं**

भी है। उनके द्वारा जोती जा रही वन भूमियों पर उन्हें अधिकार देने का काम अनिच्छया व मंथर गति से हो रहा है। इसमें समयबद्ध तरीके से शीघ्र पूर्ण किया जाए बहुत से वन क्षेत्रों के सीमांकन के समय वनों में रहने वालों के जोत के क्षेत्रों व अन्य वन अधिकारों की सही पहचान नही हुई। इस कारण इनका शोषण हुआ और हो रहा है।

आदिवासी क्षेत्रों में पर्यावरण कानूनों का सही सही पालन हो। बडे उद्योगों, खनन क्षेत्रों की स्वीकृतियां आनन फानन में नहीं होकर पर्यावरण नुकसान के पूर्ण मूल्यांकन व पुनर्वास योजना के लागू होने के बाद हो।

मिड डे मील योजना के क्रियान्वयन में सुधार-उसका विस्तार हो।वन क्षेत्रों में रहने वालों में से ही स्वास्थ्य कर्मियों, आंगनबाडी की सखी-साथिनों की अधिकाधिक नियुक्तियां हों। सरकारी कार्यालयों व व्यवसाय-उद्योगों में अधिकाधिक अदिवासियों का सद्भावना से (खानापूर्ति के लिए नहीं) नियोजन हो। सरकारी अधिकारियों-कर्मचारियों के अधिक से अधिक दौरे, रात्रि विश्राम भी कॉन्फिडेंस बिल्डिंग के आवश्यक अंग हैं।

चंबल के बीहडों में डाकुओं की समस्या थी। गोली से तो समाधान नहीं हुआ। गोली की आड में तो कई नए शहरी और कर्मचारी-अधिकारी डाकू पनप गए । समाधान व शांति के लिए गांधीवादियों के प्रयासों को ही सफलता मिली। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी बहुत से लोग-संस्थाए वन क्षेत्रवासियों को मुख्यधारा में लाने के प्रयास कर रहे है। इनके माध्यम से नक्सलियों से वार्ता समाधान का मुख्य रास्ता हो, गोली का रास्ता पीछे रखा जाए।

जब कश्मीर समस्या पर वार्ताओं का दौर पर दौर चल सकता है तो फिर नक्सलियों से क्यों नहीं? नक्सली तो कोई अलग देश भी नहीं चाहते।

राज व्यवस्था के एक्शन ही सदैव सही नही माने जा सकते। इतिहास गवाह है हर राजव्यवस्था अपनी असफलताओं, ज्यादतियों, आत्ममुघता के कारण समाप्त होते आई है। तत्कालीन राजव्यवस्थाओं ने तो मुगल शासन के खिलाफ जाटों की बगावत, 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को, जलिया वाला बाग, मानगढ व अन्याय के विरुद्ध उठे अन्य कई आंदोलन व उनसे उपजी हिंसक घटनाओं को राजद्रोह ही माना था। राजव्यवस्था, उसके द्वारा पोषित वर्ग की ज्यादतियां बढ जाती है तो उनकी आवाज बनने वाला कोई गोकुल जाट, कोई मंगल पांडे, कोई वीर शिवाजी प्रगट होते ही रहे हैं।

ओर पीछे जाएं तो, श्री कृष्ण के नए विचारों से ही कंस-जरासंध के अत्याचारी शासनों का अंत हुआ, चाणक्य के नए विचारों से महानन्द के अत्याचारी शासन का अंत हुआ। कंस, जरासन्ध, महानन्द के लिए भी भगवान कृष्ण, चाणक्य तो राजद्रोही ही रहे होंगे। कलम से उपजा यूरोपीय पुनर्जागरण, फ्रांस की क्रांति, समाजवाद-साम्यवाद विचारधाराएं भी तत्कालीन राजव्यवस्थाओं के लिए राजद्रोह ही थी। ईरान में हिजाब को लेकर आजकल जो रहा, उसे राजद्रोह-नक्सलवाद मान सकते हैं क्या? भूतकाल से लेकर वर्तमान तक के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। इसलिए कलम से निकले विचार सदैव के लिए आतंक-नक्सलवाद से नही जोड़े जा सकते। आवश्यकता सद्भाव-निरपेक्ष भाव से जनता की समस्याओं को सहानुभूति से समझने और समाधान की है। संकुचित, पूर्वाग्रहों पर आधारित अवधारणाओं और मात्र बलप्रयोग से नक्सलवाद समाप्त नहीं हो सकता।

**महावीर सिंह,**
**पूर्व आईएएस**

# प्रियंका खीचड़ सीओ गाइड परीक्षा में राजस्थान टॉपर

प्रियंका का सीओ गाइड जयपुर ऋतु ने माला पहनाकर स्वागत किया।

**झुंझुनूं**, (निसं)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के तत्वावधान में 20 व 21 अक्टूबर को आयोजित राज्य स्तरीय सीओ गाइड चयन प्रतियोगी परीक्षा में सिरियासर खुर्द निवासी महावीरसिंह की पुत्री प्रियंका खीचड़ ने राजस्थान प्रदेश में सर्वाधिक अंक पाकर सीओ गाइड परीक्षा ऊतीर्ण की । प्रियंका के राजस्थान टॉप करने पर उन्हें राज्य सचिव डॉ. पीसी जैन द्वारा सीकर जिला आवंटित किया गया। मंडल मुख्यालय जयपुर ट्रेनिंग के लिए प्रियंका ने ज्वॉइन कर लिया। ज्वॉइन करने पर सहायक राज्य संगठन आयुक्त जयपुर नीता शर्मा, सीओ गाइड जयपुर ऋतु शर्मा ने माला पहनाकर, मुंह मीठा करवाकर स्वागत किया।

प्रियंका बचपन से ही स्काउट गाइड संगठन से जुडी रही। प्राथमिक शिक्षा अपने ननिहाल भारु से पूरी करने के बाद कॉलेज शिक्षा रामादेवी महिला महाविद्यालय नूआं से पूरी की तथा राष्ट्रपति अवार्ड पुरस्कार प्राप्त किया। रामादेवी महिला महाविद्यालय में रहते हुए प्रियंका ने भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व करते हुए पाकिस्तान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय शिविर में सहभागिता की उसके बाद जिला मुख्यालय झुंझुनूं पर रेंजर लीडर के रुप में कार्य किया। खीचड के चयन पर उनके गांव सिरियासर खुर्द व ननिहाल भारु में खुशी का माहौल है। नवनियुक्त सीओ गाइड प्रियंका ने अपनी सफलता का श्रेय अपने नाना स्वर्गीय जवाहरलाल ईसरवाल, नानी, माता-पिता तथा भाई बहन एवं झुंझुनूं जिले के पूर्व सीओ मान महेंद्र सिंह भाटी तथा वर्तमान सीओ महेश कालावत को दिया। झुंझुनूं जिले के स्काउट गाइड कमिश्नर्स, शिक्षा विभाग के अधिकारियों, स्थानीय संघ के सचिवों तथा अनेक स्काउटर्स, गाईडर्स ने शुभकामनाएं प्रेषित की।

# पी.डब्ल्यु.डी. मंत्री जाटव के क्षेत्र में ही बन रहीं घटिया सड़कें

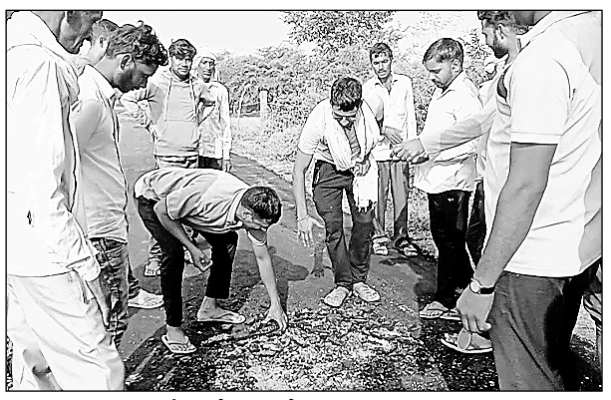

घटिया सड़क निर्माण को दिखाते स्थानीय ग्रामीण।

**वैर** (निस) । पी डब्लू डी मंत्री भजन लाल जाटव के विधानसभा इलाके में सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा सड़क बनाने का काम चल रहा है । लोगों का कहना है विधानसभा वैर से विधायक भजन लाल जाटव राजस्थान सरकार में पी डब्लूडी मंत्री हैं । जहां बनाई जा रही सड़कों में घटिया क्वालिटी को लेकर स्थानीय लोग विरोध जताने लगे हैं । जिले के कई विधायक अब तक कई बार सवाल उठा चुके हैं । इसके बावजूद भी ठेकेदारों द्वारा घटिया निर्माण सामग्री से सड़कें बनाई जा रही हैं। मंगलवार को विधानसभा मुख्यालय पर भुसावर रोड से सीर सरकार इलाके में रात्रि में ठेकेदार ने घटिया सामग्री से सड़क बनाई । उसे जब सुबह आस-पास के खेतों में काम करने पहुंचे लोगों ने देखा तो जगह -जगह से कुत्तों ने ही सड़क को खोदकर ठेकेदार के निर्माण कार्य की पोल खोल दी । सूचना पर कनिष्ठ अभियंता मनोज धाकड़ ने सड़क का निरीक्षण किया । लोगों ने सड़क की स्थिति बताई तो ठेकेदार के श्रमिकों को फटकार लगाई।

# कार्तिक पूर्णिमा पर देवयानी सरोवर में लोगों ने स्नान कर पूजा-अर्चना की

देवयानी सरोवर में कार्तिक पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं ने सुबह जल्दी स्नान किया

**सांभरझील**, (निसं)। सभी तीर्थों की नानी के नाम से विख्यात मां देवयानी सरोवर में कार्तिक माह के अवसर पर अब तक हजारों श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई।

शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को चंद्रग्रहण होने के कारण सूतक लगने से पहले सैकडों की तादाद में महिला श्रद्धालुओं ने सरोवर पर स्थित घाटों पर स्थित अनेक देवी देवताओं के प्राचीन मंदिरों में पूजा अर्चना कर अपने परिवार की खुशहाली के लिए कामना की। यहां पर अनेक जगहों से आकर लोगों ने अपनी दुकानें सजाई जहां पर खरीदारी करने वालों की अच्छी खासी भीड मौजूद रही।

प्राप्त जानकारी के अनुसार देवयानी सरोवर के प्राचीन वैभव व उसकी नष्ट होती आभा को बचाने के लिए 2005 से वर्ष 2018 तक केंद्र व प्रदेश सरकार की ओर से अलग-अलग चरणों में अब तक इस पर करोडों रुपए खर्च किए जा चुके हैं। देवयानी के घाटों पर बने विभिन्न मंदिरों के रंग रोशन, जीर्णोद्धार व अनेक विकास कार्यों के नाम पर पर्यटन और पुरातत्व विभाग ने सिर्फ लीपापोती ही की है। धार्मिक स्थलों पर सरकार की ओर से मंजूर किए गए करोडों रुपए व करवाए गए विकास कार्यों की सही प्रकार से कोई मॉनिटरिंग हुई।

# यूजीसी नेट व जेआरएफ में देवेंद्र यादव प्रदेश में अव्वल

**खैरथल**, (निसं)। प्रदेश के उद्योग विभाग में सेवारत देवेंद्र कुमार यादव ने यूजीसी नेट व जेआरएफ में 99.06 प्रतिशत अंक प्राप्त कर राजस्थान में पहला व देश में पांचवां स्थान प्राप्त किया है। हुलमाणा मुंडावर निवासी स्व. रामकरण यादव के बेटे के

**■ देवेंद्र कुमार यादव ने यूजीसी नेट व जेआरएफ में 99.06 प्रतिशत अंक प्राप्त किये**

अभिभावक खैरथल के आदर्श नगर निवासी इंजीनियर जयसिंह यादव ने बताया कि उनका भतीजा देवेंद्र कुमार यादव प्रारंभ से ही पढ़ाई में होनहार रहा है। उद्योग आयुक्त जयपुर में ड्यूटी कर रहे देवेंद्र कुमार यादव की इस सफलता पर सभी क्षेत्रवासियों द्वारा उन्हें उज्जवल भविष्य की कामना के साथ बधाइयां दी जा रही है।

## राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

**बुधवार 9 नवम्बर, 2022**

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, कृत्तिका नक्षत्र रात्रि 3:09 तक, वारियान योग रात्रि 9:17 तक, कौलव करण सांय 4:18 तक, चन्द्रमा प्रात: 7:58 से वृष राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मिथुन, बुध-तुला, गुरू-मीन, शुक्र-तुला, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज अशून्य शयन व्रत है। पदमक योग रात्रि 3:04 तक है। आज तीर्थराज पुष्कर में स्नान दान विशेष महात्म्य है।

**सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया:** लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:28 तक, शुभ 10:49 से 12:10 तक, चर 2:53 से 4:14 तक, लाभ 4:14 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 12:10 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:57, सूर्यास्त 5:37

**मेष**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**वृष**
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

**मिथुन**
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

**कर्क**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**सिंह**
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्य में भाग ले सकते हैं। परिवार में सुविधाएं बढ़ेगी।

**कन्या**
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

**तुला**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

**वृश्चिक**
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**धनु**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

**मकर**
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

**कुंभ**
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। शुभ-मांगलिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा।

**मीन**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

# 2019 की सोलर नीति के अनुसार ही व्यवसायियों को इलैक्ट्रिसिटी ड्यूटी में राहत दें : हाईकोर्ट

## अदालत ने राज्य सरकार तथा जयपुर विद्युत वितरण निगम को फटकार लगाते हुए कहा कि व्यवसायियों ने 2019 की नीति के तहत ही छतों पर सोलर पावर प्लांट लगाने के लिये निवेश किया था

- जैसा कि विदित है कि इस नीति के तहत व्यवसायियों को सात साल तक इलैक्ट्रिसिटी ड्यूटी देने से राहत दी गई थी परंतु राज्य सरकार अपनी ही नीति के विरूद्ध जाते हुए व्यवसायियों से ड्यूटी वसूल रही थी और इसके एवज में बिल भी जारी कर रही थी
- हाईकोर्ट ने ड्यूटी वसूले जाने पर अंतरिम रोक लगाई है और कंपनियों के खिलाफ कोई भी उत्पीड़क कार्यवाही करने पर भी रोक लगाई

**जयपुर,** (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने इमारतों की छत पर (रूफ टॉप) सोलर पैनल लगाकर व्यवसायिक उपयोग के लिये बिजली उत्पादन करने से जुड़ी कंपनी इमामी एग्रोटेक लिमिटेड को राहत देते हुए आदेश दिये हैं कि राज्य सरकार अपनी 2019 की सोलर नीति के अनुसार इस कंपनी से बिजली उत्पादन के लिये इलैक्ट्रिसिटी ड्यूटी ना वसूलें और ना ही कोई अवपीड़क कार्यवाही ना करें।

मुख्य न्यायाधीश पंकज मिथल और न्यायाधीश एम.एन. श्रीवास्तव की खंडपीठ ने यह आदेश 20 अक्टूबर को दिये थे जिसकी आदेश की प्रतिलिपि अभी हाल ही में प्राप्त हुई है।

इस मामले में याचिकाकर्ता इमामी एग्रोटेक लिमिटेड की ओर से एडवोकेट अनंत कासलीवाल और उनके सहायक वकील वैभव कासलीवाल और शशांक कासलीवाल पेश हुए थे।

उल्लेखनीय है कि 2019 में राज्य सरकार ने अपनी सोलर एनर्जी पॉलिसी जारी की थी जिसकी धारा 16.4 के तहत सोलर पावर प्रोजेक्ट लगाने वाली कंपनियों पर आने वाले सात वर्ष तक राजस्थान सरकार और जयपुर विद्युत वितरण निगम इलैक्ट्रिसिटी ड्यूटी नहीं लगाएंगे। परंतु अपनी ही नीति के विरूद्ध जयपुर विद्युत वितरण निगम कई बिजली उत्पादकों से इलैक्ट्रिसिटी ड्यूटी वसूल रही थी और बिल भी जारी कर रही थी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वर्ष 2021-22 में राज्य सरकार ने छत पर सोलर प्लांट के नये प्रोजेक्ट के लिये यह छूट हटा दी है।

परंतु हाईकोर्ट के समक्ष ऐसे कई मामले दायर किये गये जिनमें कंपनियों ने 2019 की नीति के तहत छत पर सोलर प्लांट लगाये थे। इन याचिकाकर्ताओं का कहना था कि राज्य सरकार नये आने वाले प्रोजेक्टों के लिये तो छूट हटा सकती है पर जो 2019 की नीति के तहत ये लगाये गये हैं उन पर यह छूट लागू रहेगी। ऐसा ही एक याचिका एपीएम इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा दायर की गई थी जिसमें सीनियर अधिवक्ता संदीप जौहरी और उनके सहायक अधिवक्ता शुभंकर जौहरी पैरवी के लिये पेश हुए थे। हाईकोर्ट ने इस मामले में कहा था कि राज्य सरकार अपनी ही नीति के विरूद्ध कार्य नहीं कर सकती और इन कंपनियों से इलैक्ट्रिसिटी ड्यूटी नही वसूल सकती।

राजस्थान सोलर एसोसियेशन ने भी इस वर्ष हाईकोर्ट के समक्ष सरकार की 2019 की नीति के विरूद्ध इलैक्ट्रिसिटी ड्यूटी वसूले जाने के कई मामले दर्ज किये गये थे। जिनमें हाईकोर्ट ने अंतरिम रोक लगाई थी।

हाईकोर्ट ने एपीएम इंडस्ट्रीज राहत देते हुए उन पर लगाई जा रही ड्यूटी पर अंतरिम रोक लगाई थी। इन मामलों की तर्ज पर हाईकोर्ट ने इमामी एग्रोटेक को भी राहत दी है और उन पर लगाई जा रही ड्यूटी पर भी अंतरिम रोक लगाई जा रही है।

पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट ने लाहौल स्पीति में कांग्रेस उम्मीदवार रवि ठाकुर के समर्थन में प्रचार किया।

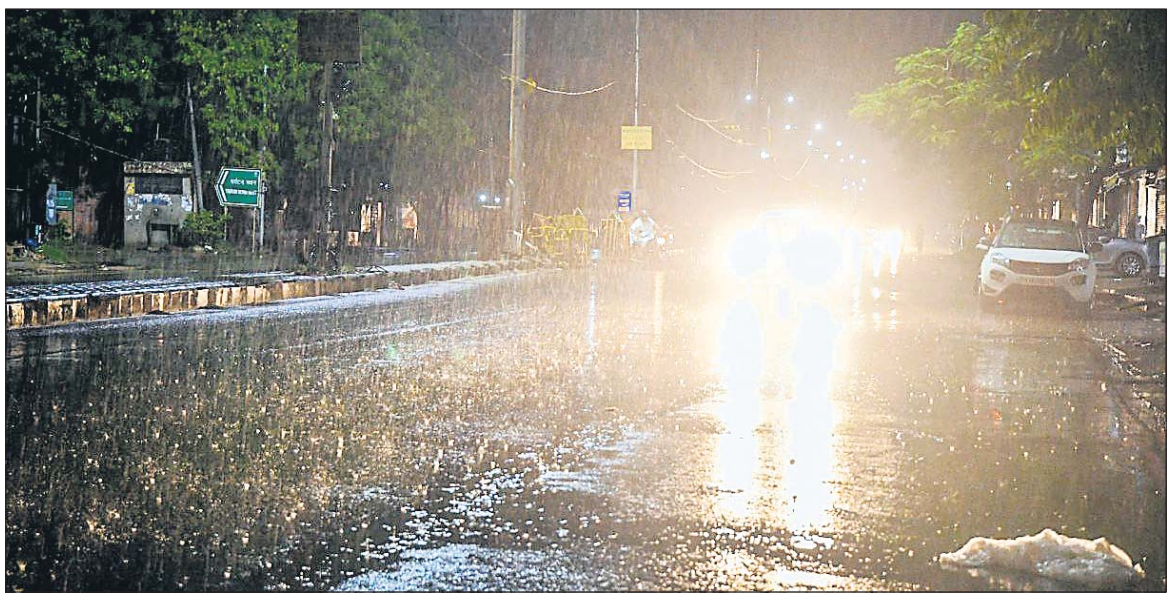



मंगलवार को चन्द्रग्रहण के तुरंत बाद ही राजधानी जयपुर में तीव्र हवाओं के साथ बारिश होने लगी जो देर रात तक रूक-रूक कर चलती रही। इससे शहर में सर्दी बढ़ने से लोग गर्म कपड़े पहने नजर आये।

## ईडब्ल्यूएस आरक्षण पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय का स्वागत

**जयपुर।** आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को 10 प्रतिशत आरक्षण पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय का ब्राहमण समाज राजस्थान ने स्वागत किया है। प्रदेशाध्यक्ष अंबिका प्रकाश पाठक ने इस निर्णय को ऐतिहासिक करार देते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट के निर्णय ने केन्द्र की मोदी सरकार के उस फैसलें पर मोहर लगा दी है जिसके तहत केन्द्र सरकार ने आर्थिक रूप से पिछड़ों को आरक्षण दिया था। इस निर्णय के खिलाफ कई पार्टियों ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की लेकिन जीत आखिरकार सत्य की हुई और गरीब व कमजोर सवर्ण को भी संबल मिला है। इस आरक्षण पाने के लिये लगभग दो दशकों तक संघर्ष किया और केन्द्र सरकार ने आरक्षण से वंचित सवर्ण जातियों को भी ईडब्ल्यूएस कैटेगरी में आरक्षण दिया।

# प्रदेश में 31 नए करोना संक्रमित मिले मंगलवार को

## जोधपुर में सर्वाधिक 6 नए मरीज सामने आए हैं

- राज्य में फिर रिकवरी में कमी आने से एक्टिव केस बढ़कर 343 हो गए हैं।

-कार्यालय संवाददाता-

**जयपुर।** प्रदेश में नए करोना संक्रमितों की संख्या में फिर वृद्धि हुई है। इस दौरान मंगलवार को 31 नए संक्रमित मिले हैं। वहीं 18 रोगियों के ठीक होने से एक्टिव केस बढ़कर 343 हो गए हैं। हालांकि राहत की बात यह है कि राज्य में पिछले सात दिनों से करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है।

प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में 10 जिलों में 31 नए संक्रमित मिले हैं। इससे पहले सोमवार को 23 रोगी पाए गए थे। इधर आज सबसे ज्यादा 6 नए संक्रमित जोधपुर में सामने आए हैं। इसके अलावा पाली में 5, जयपुर व अलवर में 4-4, बीकानेर व सीकर में 3-3, प्रतापगढ़ और अजमेर में 2-2 तथा भरतपुर और सवाई माधोपुर में एक-एक नया संक्रमित मिला है। इस बीच राज्य में 5708 जांचे की गई।

प्रदेश में मंगलवार को केवल 18 ही संक्रमित ठीक हुए हैं। इसके साथ ही फिर एक्टिव केस बढ़कर 343 हो गए हैं। राजधानी जयपुर में पिछले चौबीस घंटों में कोई भी मरीज रिकवर नहीं होने से एक्टिव केस बढ़कर 106 हो गए हैं। प्रदेश में मंगलवार को भी करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। हालांकि राज्य में अब तक इस बीमारी से 9646 लोगों की मौत हो चुकी है। राजधानी जयपुर में मंगलवार को गोपालपुरा, कोटपूतली, मालवीय नगर और मानसरोवर में 1-1 नया संक्रमित मिला है।

# स्वरोजगार से ही भारत आत्मनिर्भर बनेगा : कश्मीरी लाल

- स्वदेशी जागरण मंच की प्रांत बैठक एवं दीपावली स्नेह मिलन समारोह

**जयपुर।** स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय संगठक कश्मीरी लाल ने कहा है कि स्वदेशी वस्तुओं को प्रोत्साहन देने और स्वरोजगार से ही भारत आत्मनिर्भर बनेगा। कश्मीरी लाल स्वदेशी जागरण मंच की प्रांत बैठक को राजापार्क स्थित आदर्श विद्या मंदिर में मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग व युवाओं के स्वरोजगार के प्रति जागृत होने से देश भर में एक सकारात्मक माहौल बना है। संघ की प्रेरणा से चल रहे स्वदेशी स्वावलंबन अभियान से देश के युवाओं में एक नई चेतना जागृत हुई है। उसी का परिणाम है कि अब युवा सरकारी नौकरी के बजाय स्वयं का रोजगार शुरू कर लोगों को नए रोजगार उपलब्ध करा रहे हैं।

उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने पर जोर देते हुए कहा कि देश में आज स्वदेशी, स्वरोजगार व स्वावलंबन का भाव उत्पन्न हुआ है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक डॉ शैलेंद्र ने कहा कि आज स्वदेशी का स्वावलंबन अभियान पूरे देश में जोर पकड़ रहा है और अब लोग वस्तुओं को खरीदने से पहले स्वदेशी और विदेशी वस्तुओं का आंकलन करने लगे हैं। मंच के प्रांत संयोजक देवेंद्र भारद्वाज ने प्रांत कार्यकारिणी में राजेश शर्मा को कोष प्रमुख एवं धर्मेंद्र शर्मा को सह संपर्क प्रमुख के पद पर नियुक्त किया साथ ही स्वावलंबन के क्षेत्र में कार्य कर रहे युवा उद्यमियों को मंच पर बुलाकर स्वदेशी का दुपट्टा देकर सम्मानित कराया और उनके स्टार्टअप्स को राष्ट्र की उन्नित में अधिक भागीदारी निभाने की शुभकामनाएं देकर उनका उत्साहवर्धन किया। महिला कार्य प्रमुख अर्चना मीणा ने स्वावलंबी भारत अभियान के डिजिटल प्लेटफार्म माय एसबीए में अधिकाधिक युवाओं को जोड़ने का आव्हान किया। मंच के अखिल भारतीय सह प्रचार डॉ धर्मेंद्र दुबे ने कहा कि स्वरोजगार करने वाले युवाओं की छोटी-छोटी कहानियां भी प्रेरणा के रूप में समाज के बीच लाई जानी चाहिए। मंच के क्षेत्र संयोजक डॉ.सतीश आचार्य ने कहा कि स्वदेशी को लेकर देशभर में एक सकारात्मक व अनुकूल माहौल का निर्माण हुआ है। प्रांत प्रचार प्रमुख डा धर्मवीर चंदेल ने बताया कि इस अवसर पर प्रांत संगठक मनोहर शरण का स्थानांतरण गुजरात होने पर उन्हें सभी कार्यकर्ताओं ने भावभीनी विदाई दी।

## बम ब्लास्ट मामले में सुनवाई पूरी

**जयपुर।** शहर में 13 मई, 2008 को हुए सिलसिलेवार बम धमाकों के मामले में चार अभियुक्तों को मिली फांसी की सजा को लेकर हाईकोर्ट में राज्य सरकार के डेथ रेफरेंस और अभियुक्तों की ओर से पेश कुल 28 अपीलों पर सुनवाई पूरी हो गई है। अदालत ने दोनों पक्षों को लिखित बहस पेश करने को कहा है। लिखित बहस के बाद कोर्ट अपना आदेश सुनाएगी। जस्टिस पंकज भंडारी और समीर जैन की खंडपीठ ने इस मामले में सुनवाई की है।

# धर्मांतरण का राज्य सरकार को संरक्षण : डॉ. पूनिया

**जयपुर।** भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने जयपुर में धर्मांतरण के मामले पर बयान देते हुए कहा कि राजस्थान कितना असुरक्षित है, इसका नमूना धर्मान्तरण है, राज्य में लव जेहाद और लैण्ड जेहाद की घटनाएं होती रही हैं, आवाज उठाने पर धर्मान्तरण थोड़े दिन के लिये रुका था, लेकिन अब फिर से हो रहा है, जो बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि राजस्थान की कांग्रेस सरकार सोती रही, कमज़ोर लोगों को सुनियोजित तरीके से टार्गेट किया जाता है, धर्मांतरण के मामलों में भोले, आर्थिक कमजोर और निर्बल लोगों को टार्गेट कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत गृह मन्त्री भी हैं और उनकी नाक के नीचे यह हो रहा। इससे भी बड़ी चौंकाने वाली बात यह है कि धर्मांतरण के खिलाफ आवाज उठाने वाले लोगों को पुलिस द्वारा प्रताड़ित किया जा रहा है, जबकि धर्मांतरण करवाने वाले लोगों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो रही है, इससे यह इनकार नहीं किया जा सकता कि धर्मांतरण को राज्य सरकार का संरक्षण प्राप्त है, कांग्रेस की तुष्टिकरण और वोट बैंक की सियासत के तार भी इससे जुड़े हो सकते हैं, इस मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए, जिससे भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति ना हो।


**शोक संदेश**



हमारे पूजनीय **श्री जगदीश नारायण माथुर** (नाग दौसा) का स्वर्गवास 8.11.22 को हो गया। शव यात्रा 9.11.22 को प्रातः 10:00 बजे हमारे निवास डी-105, देवी मार्ग, बनीपार्क से चांदपोल श्मशान घाट जावेगी। तीये की बैठक 10.11.22 को सांय 4:00 से 5:00 बजे, चित्रगुप्त ज्ञान मंदिर, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर पर होगी।

**शोकाकुल**- शैलेन्द्र- कविता, राजीव- कृतिका (पुत्र- पुत्रवधु), पिंकी (पुत्री), नवरत्न- अरुणा, निर्मला (भाई- भाभी), ललिता (बहन), विजय- साधना, गोविन्द- डॉली (भतीजा- बहू), मधु- देवेन्द्र (भतीजी- दामाद), चर्चित, खुश्बू, हर्षिता, नुपुर, खनक (पौत्र, पौत्री), पारितोष (दोहिता)। ससुराल पक्ष की बैठक साथ ही होगी

8890662908, 8696663614

**नम्बर मिलाइए 9587884433**

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।


# गुरु नानक देव ने सम्पूर्ण मानवता को भाईचारे का संदेश दिया : राज्यपाल



गुरू नानक जयन्ती के अवसर पर राज्यपाल कलराज मिश्र ने राजा पार्क गुरुद्वारे में आयोजित विशेष कीर्तन में भाग लिया।

**जयपुर,** (का.सं.)। राज्यपाल कलराज मिश्र ने श्री गुरु नानक देव जी के 553वें प्रकाश पर्व गुरु नानक जयन्ती के अवसर पर मंगलवार को राजा पार्क गुरुद्वारे में विशेष कीर्तन दिवान आयोजन में भाग लिया।

राज्यपाल ने सभी को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि गुरु नानक देव जी ने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास और छुआछूत को दूर करने के लिए कार्य किया। उन्होंने मानवता के कल्याण के लिए पूरे देश में घूम-घूम कर भाईचारे एवं प्रेम के मार्ग पर चलने के लिए सभी को प्रेरित किया। हमें उनके संदेशों के अनुसार अपने आचरण एवं व्यवहार को ढालते हुए उनके दिखाए मार्ग पर चलने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर राजस्थान राज्य समाज कल्याण बोर्ड अध्यक्ष अर्चना शर्मा, सांसद रामचरण बोहरा, स्वामी सुमेधानंद सरस्वती, विधायक सतीश पूनिया, कालीचरण सराफ, आरसीए अध्यक्ष वैभव गहलोत, राजस्थान सिख समाज के अध्यक्ष सरदार अजयपाल सिंह सहित बड़ी संख्या में सिख धर्मावलंबी एवं अनुयायी उपस्थित रहे।

# कॉलेज शिक्षा आयुक्त बताए क्यों नहीं की आदेश की पालना?

- हाईकोर्ट के आदेश के वाबजूद निजी कॉलेज को स्थाई एनओसी जारी नहीं करने पर नाराजगी जताई

**जयपुर,** (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने निजी कॉलेज को सत्र 2020-21 की स्थाई एनओसी जारी करने के अदालती आदेश के बावजूद एनओसी जारी नहीं करने पर नाराजगी जताई है। इसके साथ ही अदालत ने कॉलेज शिक्षा आयुक्त को 28 नवंबर को पेश होकर इस संबंध में अपना स्पष्टीकरण देने को कहा है। अदालत ने कहा कि यदि आदेश की पालना हो जाती है तो कॉलेज आयुक्त को पेश होने की जरूरत नहीं है। जस्टिस प्रकाश गुप्ता की एकलपीठ ने यह आदेश जामिया मदरसा एजुकेशन सोसायटी की अवमानना याचिका पर दिए।

याचिका में अधिवक्ता आत्माराम मीणा ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने कॉलेज शिक्षा विभाग में वर्ष-2020-21 की स्थाई एनओसी के लिए आवेदन किया था। विभाग की ओर से कोई कार्रवाई नहीं करने पर याचिकाकर्ता ने हाईकोर्ट में याचिका पेश की थी। जिस पर गत वर्ष 2 दिसंबर को सुनवाई करते हुए अदालत ने विभाग को आदेश दिए थे कि वह याचिकाकर्ता के प्रार्थना पत्र को स्वीकार करते हुए एक माह में एनओसी जारी करे। अवमानना याचिका में कहा गया कि अदालती आदेश के करीब 11 माह बीतने के बाद भी विभाग ने अब तक एनओसी जारी नहीं की है।

ऐसे में अदालती आदेश की पालना कराई जाए और अवमानना कर्ता अफसरों को दंडित किया जाए। वहीं याचिका में जवाब पेश करने के लिए अतिरिक्त महाधिवक्ता ने दो सप्ताह का समय मांगा। इस पर अदालत ने 28 नवंबर तक आदेश की पालना नहीं होने पर कॉलेज शिक्षा आयुक्त को पेश होकर अपना स्पष्टीकरण देने को कहा है।

# मुख्य सचिव सहित अन्य को अवमानना नोटिस

- शिक्षक की लंबित विभागीय जांच के संबंध में दिये आदेश की पालना नहीं करने पर जवाब मांगा

**जयपुर,** (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने शिक्षक की लंबित विभागीय जांच के संबंध में दिए आदेश की पालना नहीं करने पर मुख्य सचिव, शिक्षा निदेशक और जिला शिक्षाधिकारी सहित अन्य को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। जस्टिस प्रकाश गुप्ता की एकलपीठ ने यह आदेश ममता की अवमानना याचिका पर दिए।

याचिका में अधिवक्ता योगेश टेलर ने अदालत को बताया कि हाईकोर्ट ने गत नौ मार्च को आदेश दिए थे कि याचिकाकर्ता के खिलाफ लंबित विभागीय जांच को छह माह में निस्तारित किया जाए। इसके बावजूद विभाग ने याचिकाकर्ता के खिलाफ संशोधित आरोप पत्र पुनः जारी कर दिया और विभागीय कार्रवाई जारी कर रखी है। इसके साथ ही याचिकाकर्ता को वेतन का भुगतान भी नहीं किया जा रहा है। याचिकाकर्ता को विभागीय अधिकारी मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहे हैं। याचिका में कहा गया कि अदालती आदेश की पालना में याचिकाकर्ता की विभागीय जांच को निस्तारित किया जाए और अदालत अवमाननाकर्ता अफसरों पर कार्रवाई करे। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है।

## युवाओं ने मिश्र से भेंट की

**जयपुर।** राज्यपाल कलराज मिश्र से मंगलवार को राजभवन में भारत को जानें कार्यक्रम के तहत 14 देशों से आए विदेशों में रह रहे भारतीय युवा प्रतिभागियों ने मुलाकात की।

# आमेर में पैदल मार्च आज

**जयपुर।** देश और दुनिया में प्रसिद्ध महत्वपूर्ण पर्यटन नगरी आमेर की बदहाल सड़कों के निर्माण और पीने के पानी की सप्लाई माँग को लेकर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और आमेर विधायक डॉ. सतीश पूनिया के नेतृत्व में आमेर तहसील का 9 नवंबर को घेराव कर गूंगी बहरी कांग्रेस सरकार के खिलाफ पैदल मार्च निकाला जाएगा, जिसमें स्थानीय कार्यकर्ता और आमजन शामिल होंगे। भाजपा, आमेर शहर मंडल द्वारा आयोजित पैदल मार्च कल 9 नवंबर को कुंडा तिराहे से आमेर तहसील तक निकाला जायेगा।


**कार्यालय उप आवासन आयुक्त, वृत्त द्वितीय**
राजस्थान आवासन मण्डल, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
Email Id: dhcjpr2.rhb@rajasthan.gov.in. Phone No. 0141-2782772
क्रमांक-DHC-II/2022 दिनांक-07.11.2022

**जाहिर आम सूचना** सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा आवास संख्या 104/117 मानसरोवर जयपुर क्षेत्रफल 122.25 वर्गमीटर/वर्गगज का आवंटन श्री चिरंजी लाल दाधीच पुत्र श्री मांगीलाल दाधीच को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 7903 दिनांक 30.04.1993 को जारी किया गया। इनके द्वारा उक्त आवास का भौतिक कब्जा दिनांक 14.08.1993 को प्राप्त कर लिया गया था। इसके पश्चात राजस्थान आवासन मण्डल के पत्र क्रमांक 3366 दिनांक 4.11.1996 के द्वारा श्री चिरंजीलाल दाधीच पुत्र श्री मांगीलाल दाधीच के नाम अदेय प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया। इनके द्वारा अपने स्वयं के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर में दिनांक 17.03.1998 को करवाया गया। तत्पश्चात श्री चिरंजी लाल दाधीच की मृत्यु दिनांक 25.08.2015 को हो जाने के कारण मृतक के दो वारीश पुत्र आवेदक स्वयं श्री राजेश चिरंजी लाल दाधीच एवं दुसरे पुत्र द्वारा श्री राजेश चिरंजीलाल दाधीच के पक्ष में मुख्त्यारनामा आम नियुक्त कर्ता श्री रविन्द्र दाधीच के संयुक्त नाम हस्तान्तरण हेतु निवेदन किया गया। श्री रविन्द्र दाधीच एवं श्री राजेश चिरंजीलाल दाधीच पुत्रान स्व. श्री चिरंजी लाल दाधीच के द्वारा मण्डल अभिलेख में उक्त आवास का मृत्यु पश्चात नाम हस्तान्तरण अपने पक्ष में करने का निवेदन किया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त वर्णित व्यक्ति/आवेदक रविन्द्र दाधीच एवं श्री राजेश चिरंजीलाल दाधीच पुत्रान स्व. श्री चिरंजी लाल दाधीच के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। उक्त जाहिर आम सूचना उप आवासन आयुक्त महोदय से अनुमोदित है।

सम्पदा प्रबन्धक, वृत द्वितीय, जयपुर

**NAME CHANGE**

I have Changed my Name from Sayyed Suleman afzal Ali to Sayyed Suleman Ali in future vill. Amarsar ward No. 16, Pathano Ka Bas Tehsil Shahpura Dist. Jaipur.

I have Changed my Name from Syed Afzal Ali to Sayyed Afzal Ali in future vill. Amarsar ward No. 16, Pathano Ka Bas Tehsil Shahpura Dist. Jaipur.

I, Yunus Moosa Khimani S/o Moosa Umar Khimani solemnly declare that I have change my name from Mohamed Yunus Moosabhai Khimani to Yunus Moosa Khimani R/o Rahat, 43, Vardhman Nagar-B, Near 200 Ft. Bypas, Ajmer Road, Jaipur (Raj.)-302019 for all future purposes.

I, Bhaveshraj Singh Chouhan S/o Natwar Lal R/o Sargado Ka Vas, Bhavri, Sirohi, Rajasthan-307023 have changed my minor son's name from Aarav Chouhan aged 3 years to Aaravraj Singh Chouhan forever.

**आम सूचना**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी अभिभाष्य फर्म VELVU TECHNOLOGIES PRIVATE LIMITED जरिये डायरेक्टर साकेत काबरा एवं श्रीमती संगीता ने सम्पत्ति प्लाट नं. एफ-2, औधोगिक क्षेत्र बिंदायका, जयपुर, क्षेत्रफल 2412 वर्गमीटर को सम्पत्ति मालिक- रिनविज पालखीवाला पुत्र श्री केसरी पालखीवाला प्रोपराईटर मैसर्स पालखीवाला ट्रेडर्स से क्रय कर रहे है। उक्त क्रय के सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति/ संस्था, बैंक, वित्तिय संस्थान,कम्पनी इत्यादि को आपत्ति, उज्र हो तो प्रकाशन की तिथी से 7 दिवस में व्यतीशः/ लिखित में सुचित करें अन्यथा किसी वाद विवाद के लिये मेरे अभिभाष्य की कोई जिम्मेदारी नही होगी।

भवदीय
(मुकेश सैन एडवोकेट) मो.नं.-93145-63517,98877-58877
कार्यालय 19-बी, खालसा कालोनी, सुरजपोल रोड, जयपुर।

**आम सूचना** दि. 07.11.2022

मेरे अभिभाष्यगण बाबूलाल बोयत पुत्र स्व. श्री प्रहलाद एवं श्रीमती जानकी देवी पत्नी श्री बाबूलाल बायेत, पता-प्लॉट नम्बर-87/1, वाल्मिकी कॉलोनी, सेक्टर-01, मालवीय नगर, जयपुर राज.-302017 निवासी है। अपने बड़े पुत्र सुनील बोयत पुत्र बाबूलाल बोयत व बडी बहू श्रीमती सरिता देवी पत्नी श्री सुनील बोयत दोनों ही मेरे अभिभाष्यगण के कहने, सुनने में नहीं है तथा उनको छोड़कर चले गये हैं। इसलिए मेरे अभिभाष्यगण अपनी समस्त प्रकार की चल- अचल सम्पत्तियों, सामाजिक सम्बन्धों से सुनील बोयत व सरिता देवी व उनके वारिसान को बेदखल करते हैं। आज के पश्चात् मेरे अभिभाष्यगण की चल-अचल सम्पत्तियों में इनका कोई हक, अधिकार नहीं रहेगा। कोई भी व्यक्ति संस्था इत्यादि इनसे किसी भी प्रकार का संव्यवहार करता है तो उसके लिए वह स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरे अभिभाष्यगण की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। सूचित रहे।

भवदीय
(सुनील कुमार पटूना) - एडवोकेट मो. न. 7690050078

**न्यायालय तहसीलदार जोबनेर जिला जयपुर (राज.)**
क्रमांक/भू.अ./2022/6789 दिनांक- 7.11.2022

**सार्वजनिक सूचना नोटिस** सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्री हरिसिंह, प्रहलाद सिंह, दुर्गासिंह, गोविन्द सिंह, रतनसिंह पिता नारायण सिंह जाति दरोगा निवासी बेणियाकाबास, तहसील जोबनेर द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र मृतक नारायण पुत्र रूडा जाति दरोबा के नाम दर्ज खातेदारी भूमि खसरा नम्बर 32/1, 36, 37/2 किता 3 रकबा 9.028 हैक्टेयर वाके ग्राम बेणियाकाबास का वसीयत के आधार पर नामान्तकरण खुलवाने बाबत प्रकरण भू राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 135(2) के तहत हाजा न्यायालय में विचाराधीन हैं। अतः यदि किसी दीगर व्यक्ति को कोई आपत्ति/एतराज हो तो आगामी दिनांक 23.11.2022 तक पेश करें अन्यथा इकतरफा कार्यवाही कर प्रार्थी के पक्ष में निर्णय पारित कर दिया जावेगा।

तहसीलदार, जोबनेर (जयपुर)

**fincare** Small Finance Bank

**Registered Office:** 301-306, 3rd Floor, ABHIJEET -V, Opp. Mayor's Bungalow, Law Garden Road, Mithakhali, Ahmedabad - 380006, Gujarat. www.fincarebank.com

**LOAN AGAINST GOLD - AUCTION NOTICE ON "AS IS WHERE IS" BASIS**

The below mentioned borrower/s have been issued notices to pay their outstanding amounts towards the loan against gold facilities availed from Fincare Small Finance Bank Ltd ( "Bank"). Since the borrower/s has/have failed to repay his/their dues, we are constrained to conduct an auction of pledged gold items/articles as per below schedule.

| Loan Account no | Name of the borrower | Auction Venue | Auction Date |
|---|---|---|---|
| 22660000016572 | MRS. KOMAL SINGH | FINCARE SMALL FINANCE BANK LTD; GROUND FLOOR, PLOT NO.5, SHAKTI NAGAR, TRIVENI CHOURAHA BYPASS, JAIPUR, RAJASTHAN, 302015 | 11/11/2022 |
| 22660000020993 | KAVITA | | |
| 22660000052612 | MR. VIKAS KUMAR VERMA | | |
| 22660000274244 | MR. AJAY SINGH | | |
| 22660000292870 | AJAY SINGH | | |
| 21660000772329 | ANJU BAI | FINCARE SMALL FINANCE BANK LTD; GROUND FLOOR, 386-SHOPPING CENTER, GHODE WALE BABA CROSS ROAD, BESIDE SANCHIT TOWER, GUMANPURA ROAD, KOTA, RAJASTHAN, 324007 | 11/11/2022 |
| 21660000813333 | PRADEEP KASHYAP | | |
| 21660000832707 | MS. NIRAJA JOLLY | | |
| 21660000837098 | RAM SHARAN MEENA | | |
| 22660000011081 | MANOJ KUMAR | | |
| 22660000034747 | SAIDAN BEGAM | | |
| 22660000047132 | SATYANARAYAN | | |
| 22660000051454 | SURJEET GOCHER | | |
| 21660000779966 | BHUPENDRA SEN | FINCARE SMALL FINANCE BANK LTD; GROUND FLOOR, 16C, MANOHAR HEIGHTS, 1 MADHUBAN BANK STREET, OPPOSITE ICON TOWER, UDAIPUR, RAJASTHAN, 313001 | 11/11/2022 |
| 21660000837788 | MAHENDRA KUMAR DHANDHORIYA | | |
| 22660000009655 | JUZAR HUSSAIN | | |
| 22660000455724 | GOVIND SAIN | FINCARE SMALL FINANCE BANK LTD; GROUND FLOOR, SHOP NO-2 & 3, A-235, GURU JEMBESHWAR NAGAR, GANDHIPATH, QUEENS ROAD, JAIPUR, RAJASTHAN, 302021 | 11/11/2022 |
| 21660000801406 | SEEMA | FINCARE SMALL FINANCE BANK LTD; A/23, BAPU NAGAR, ROAD NO.13 ,SETHI, NEAR SBI BANK, CHITTAURGARH, RAJASTHAN, 312001 | 11/11/2022 |
| 21660000812605 | VIJAY KUMAR SHARMA | | |
| 22660000010612 | BADRI LAL | | |
| 22660000555086 | MR. DURGA SHANKAR CHASTA | | |
| 22660000051624 | PRAKASH OJHA | FINCARE SMALL FINANCE BANK LTD; 1ST FLOOR A-1 PLAZA PLOT NO.163, NEAR UIT OFFICE SUBASH NAGAR, AJMER ROAD, BHILWARA, RAJASTHAN, 311001 | 11/11/2022 |

Note: The auction is subject to certain terms and conditions mentioned in the bid form, which is made available before the commencement of auction.

# बालोतरा में प्रदर्शनकारियों पर चढ़ाई गाड़ी, आक्रोशित भीड़ ने दो गाड़ियों को फूंका

## अब तक मामला दर्ज नहीं, एचपीसीएल कम्पनी में रोजगार की मांग कर रहे स्थानीय लोग

**बालोतरा,** (निसं)। बालोतरा उपखंड क्षेत्र के पचपदरा रिफाइनरी के गेट नंबर तीन पर मंगलवार को प्रदर्शनकारियों पर गाड़ियां चढाकर कुचलने का प्रयास किया गया। इसके बाद लोगों ने दो बोलेरो कैंपर पर लाठियों से तोड़फोड़ कर आग के हवाले कर दिया। इस दौरान बदमाशों ने तीन राउंड हवाई फायरिंग भी की। प्रदर्शनकारी और अधिकारी जान बचाकर मौके से भागे। घटना के बाद बदमाश मौके के फरार हो गए।

दरअसल, स्थानीय लोग सुबह 11 बजे रोजगार और ठेके देने की मांग को लेकर धरना देने पहुंचे थे। गेट नंबर 3 पर शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे थे। उनकी मांग थी कि तहसीलदार मौके पर पहुंचकर समस्या सुनें, इसी दौरान ज्ञापन दिया जाएगा। सूचना के बाद करीब 12 बजे सरपंच डालूराम तथा तहसीलदार इमरान खान मौके पर पहुंचे। तभी काले शीशे वाली करीब 7 बोलेरो गाडियों में बदमाश सवार होकर आए। अधिकारियों और भीड को कुचलने का प्रयास किया।

घटना के बाद अधिकारी और प्रदर्शनकारी आपस में भिड़ गए। पत्थरबाजी भी की गई। मामला बढता देख पचपदरा पुलिस उप अधीक्षक मदनलाल मीणा और बालोतरा एएसपी नीरज कुमारी शर्मा मौके पर पहुंचे। उग्र प्रदर्शनकारियों को शांत करने के लिए पुलिस ने हल्का बल प्रयोग किया। मामले के संबंध में एडीएम अश्विनी के पंवार और उपखंड अधिकारी विवेक व्यास प्रदर्शनकारियों से वार्ता कर रहे हैं। वहीं, शांति व्यवस्था को देखते हुए पुलिस जाप्ता तैनात किया गया है।

आक्रोशित लोगों के आग लगाने के बाद गाड़ियां धू-धू कर जलने लगी।

- बदमाशों ने तीन राउंड हवाई फायरिंग भी की

दरअसल, पचपदरा में रिफाइनरी का कार्य निर्माणाधीन है। बाहर की कंपनियां एचपीसीएल रिफाइनरी में कार्य कर रही है। जहां रोजगार पाने के लिए स्थानीय लोग अथक प्रयास कर रहे हैं। बार-बार रोजगार देने की मांग की जा रही है, लेकिन कोई समाधान नहीं निकल रहा है।

एएसपी नीतेश आर्य ने बताया कि पचपदरा रिफाइनरी में गेट नंबर 3 पर तहसीलदार एक पक्ष का ज्ञापन ले रहे थे। इस दौरान करीब 7 गाड़ियों में सवार होकर आए बदमाशों ने लोगों पर गाडी चढाने का प्रयास किया। विवाद बढने के बाद अज्ञात लोगों ने दो कैंपर गाड़ियों में लाठियों से तोडफोड की और आग के हवाले कर दिया।

तहसीलदार इमरान खान ने बताया कि स्थानीय 36 कौम के लोग रोजगार की मांग को लेकर मेरे पहुंचने से पहले शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे थे। जो स्थानीय लोगों को प्राथमिकता से रोजगार देने और ठेका देने की मांग कर रहे थे। इस दौरान पीछे करीब 7 बोलेरो गाड़िया आई, जिनके काले शीशे थे। भीड के साथ हमें भी कुचलने का प्रयास किया गया।

रिफाइनरी में शुरू से ही स्थानीय लोग रोजगार की मांग कर रहे हैं। पहले भी कई बार रोजगार देने की मांग उठी तो बाहर से आई कंपनियों ने स्थानीय कुछ लोगों को रोजगार दिया था। राजस्थान सरकार की संयुक्त परियोजना हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) और राजस्थान सरकार की संयुक्त परियोजना के तहत बाडमेर के पचपदरा में 450० एकड जमीन पर रिफाइनरी कम पेट्रो कैमिकल्स का निर्माण किया जा रहा है। परियोजना में एचपीसीएल की हिस्सेदारी 74 फीसदी और राजस्थान सरकार की 26 फीसदी है।

# डी.एल.एड. आवेदन में रही कमियों को दूर कर सकते हैं कैंडिडेट्स

## संशोधन केवल कैटेगरी और जेण्डर में किया जा सकेगा

**बीकानेर,** (कासं)। शिक्षा विभाग ने डीएलएड एडमिशन के लिए आवेदन कर चुके केंडिडेट्स को अपने फॉर्म में संशोधन के लिए कल तक का समय दिया है। पचास रुपए फीस देकर केंडिडेट्स सभी तरह की त्रुटियों को सुधार सकते हैं। नए सिरे से आवेदन भर सकते हैं।

अधिकृत वेबसाइट से प्री-डीएलएड परीक्षा के ऑनलाइन आवेदन में रही त्रुटियों को 9 नवंबर तक सुधारने का मौका दिया गया है। प्रदेश के 372 डीएलएड कॉलेजों में परीक्षा करवाई गई थी। जिसका रिजल्ट एक नवंबर को घोषित किया जा चुका है। अभ्यर्थियों की मांग पर शिक्षा विभाग ने ऑनलाइन काउंसलिंग का प्रोसेस शुरू करने से पहले आवेदन पत्र में रही गलतियों को सुधारने का एक अंतिम अवसर दिया है।

- देना होगा पचास रुपए शुल्क
- नौ नवंबर के बाद किसी भी आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा

शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने बताया कि 50 रुपए टोकन शुल्क देखकर अभ्यर्थी स्वयं के लॉगइन आईडी में पासवर्ड के जरिए 9 नवंबर रात 12 बजे तक संशोधन कर सकेंगे। संशोधन केवल कैटेगरी और जेण्डर में किया जा सकेगा।

प्रदेश के डीएलएड कॉलेजों में एडमिशन के लिए अभ्यर्थियों को ऑनलाइन काउंसलिंग के लिए करीब 10 दिन का समय दिया जाएगा। ऑनलाइन काउंसलिंग का प्रोसेस 15 नवंबर के आस-पास शुरू होने की संभावना है। इधर, शिक्षा विभाग में डीएलएड द्वितीय वर्ष की परीक्षाएं 10 नवंबर से शुरू होंगी जो 22 नवंबर तक चलेंगी। परीक्षा एक पारी में सुबह 11 से दोपहर 2 बजे तक होगी।

नीरू भारद्वाज, पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएं राजस्थान बीकानेर का कहना है कि ऑनलाइन आवेदन में संशोधन का अभ्यर्थियों को अंतिम मौका दिया गया है। 9 नवंबर के बाद किसी भी आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा।

# पत्रकार की शिकायत पर एफ.आई.आर. दर्ज

- न्यायालय के आदेश पर कोतवाल व नर्सिंगहोम संचालक के खिलाफ दर्ज हुआ मुकदमा

**कानपुर,** (निसं)। पत्रकार की शिकायत पर माननीय न्यायालय के आदेश पर रसूलाबाद के तत्कालीन थाना प्रभारी, निजी नर्सिंग होम संचालक व उसमें काम करने वाले लगभग आधा दर्जन कर्मचारियों के खिलाफ गम्भीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया। वहीं पीडित पत्रकार ने आशंका व्यक्त की है कि आरोपी पुलिस अधिकारी के पद पर रहते मामले की जाँच प्रभावित हो सकती है क्योंकि वो जिले में ही तैनात है।

गौरतलब हो कि रसूलाबाद क्षेत्र के मनावा निवासी विशाल सिंह गौतम, पेशे से पत्रकार हैं और एक समाचारपत्र में क्षेत्रीय समाचारों के संकलन का कार्य करते हैं। विशाल ने बताया कि बिगत 27 जून 2022 को वह रसूलाबाद क्षेत्र स्थित एस0 एस0 जी0 हेल्थकेअर में हंगामा की खबर बना रहे थे। इसी दौरान नर्सिंग होम संचालक डॉ0 स्वप्निल सिंह ने अपने कर्मचारियों के बल पर पत्रकार का मोबाइल छीन लिया था और मारपीट करते हुए जाति सूचक शब्दों का प्रयोग कर अपमानित किया था। इस कृत्य में तत्कालीन थानाप्रभारी शिव ठाकुर ने मनमाफिक रवैया अपनाते हुए नर्सिंग होम संचालक डॉ0 स्वप्निल सिंह का साथ देकर, मनगढन्त तहरीर बनवाकर दबाव बनाने के लिये विशाल के खिलाफ एक कूटरचित मुकदमा उसके खिलाफ दर्ज करवा दिया था।

पीडित पत्रकार विशाल ने अपनी व्यथा जिले के उच्चाधिकारियों सहित माननीय न्यायालय के समक्ष रखी और बताया कि उसे फर्जी फंसाया गया है। इतना ही नहीं उसके मोबाइल के संकलित सूबूत पुलिस ने मिटा दिये हैं। विशाल के प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए माननीय स्पेशल जज एस0 सी0 एस0 टी0 कानपुर देहात ने उक्त मामले की एफ आई दर्ज करने का आदेश दिया। स्पेशल जज के आदेश पर तत्कालीन रसूलाबाद थाना प्रभारी शिव ठाकुर, एस एस जी हेल्थकेयर की संचालक डॉ0 स्वप्निल सिंह व 5-6 अज्ञात कर्मचारियों के खिलाफ थाना रसूलाबाद में मामला दर्ज किया गया है।

पीडित पत्रकार विशाल सिंह ने यह आशंका व्यक्त की है कि पुलिस अधिकारी शिव ठाकुर वर्तमान में जिले में ही सिकन्द्रा में तैनात हैं और उनके पद पर रहते मामले की जाँच प्रभावित की जा सकती है। ऐसे में मुझे क्या न्याय मिल पायेगा ?

# बीकानेर में 19 नए रोगी मिले, 473 पर पहुंचा आंकड़ा

**बीकानेर,** (कासं)। डेंगू के नए रोगी मिलने का सिलसिला थम नहीं रहा है। आज 19 नए रोगी पीबीएम हॉस्पिटल में रिपोर्ट हुए हैं। इनमें से आठ भर्ती हैं। पीबीएम में अब तक 473 डेंगू पॉजिटिव रिपोर्ट हो चुके हैं, जिनमें से 251 का भर्ती कर इलाज किया गया। बीते सप्ताह भर से डेंगू का प्रकोप बढ़ रहा है।

इस बार डेंगू सबसे ज्यादा बच्चों, स्कूल-कॉलेज वाले किशोरों और कामकाजी युवाओं को अपनी चपेट में ले रहा है। बीकानेर में इस वर्ष के उपलब्ध 462 रोगियों का डेटा एनालिसिस करने पर सामने आया कि बुजुर्गों को डेंगू सबसे कम हो रहा है। डेंगू पीड़ितों में सबसे ज्यादा 50.21 प्रतिशत रोगियों की उम्र 16 से 35 वर्ष के बीच है। इसके बाद 15 वर्ष तक के बच्चे 22.07 प्रतिशत और 36 से 50 वर्ष तक वाले रोगी 14.28 प्रतिशत हैं। सबसे कम डेंगू रोगी 70 से अधिक उम्र वाले हैं। इनका प्रतिशत 2.38 है। स्कूल-कॉलेज के स्टूडेंट और कामकाजी लोगों के इस बीमारी की चपेट में ज्यादा आने की एक वजह यह है कि डेंगू फैलाने वाला मच्छर एडिज इजिप्टाई डे-बाइटर यानी दिन में काटने वाला है। यह मच्छर सूर्योदय के बाद कुछ घंटों तक और शाम को सूर्यास्त से पहले कुछ घंटों तक सबसे ज्यादा सक्रिय रहता है। स्कूली बच्चे, कॉलेज स्टूडेंट और कामकाजी युवा सुबह-शाम जाते-आते वक्त इस बीमारी की चपेट में आते हैं।

डॉ.संजय कोचर,(मलेरिया-डेंगू पर सालों से रिसर्च कर रहे मेडिसिन विभागाध्यक्ष) का कहना है कि एडिज इजिप्टाई मच्छर डे-बाइटर है। सबसे ज्यादा सुबह-शाम सक्रिय रहता है। बंद कमरों की बजाय खुले में ज्यादा बाइट करता है। साफ दिखने वाले पानी में अंडे देता है।

# रात के समय बिजली सप्लाई का किसानों ने विरोध किया

## रात के समय 11 बजे से सुबह 4 बजे तक बिजली दी जाती है

सेफरागुवार जीएसएस का घेराव कर बैठे किसान।

**खेतड़ी,** (निसं)। किसानों द्वारा रात के समय सिंचाई के लिए बिजली सप्लाई देने का विरोध शुरू हो गया है। देर रात को खेतड़ी इलाके के सेफरागुवार जीएसएस पर किसान धरने पर बैठे रहे और रात के समय बिजली सप्लाई देने का विरोध किया। किसानों ने रात को सेफरागुवार जीएसएस पर बिजली कर्मचारियों को बाहर निकाल कर ताला लगा दिया और रात 1 बजे तक किसान धरने पर बैठे रहे। धरने पर बैठे किसानों ने बताया कि सिंचाई के लिए दिन के समय ही बिजली दी जाए। अब डिस्कॉम की ओर से रात के समय सिंचाई के लिए बिजली दी जा रही है।

- सेफरागुवार जीएसएस पर बिजली कर्मचारियों को बाहर निकाल किसानों ने ताला लगाया

किसान दिनभर बुवाई में लगा रहता है। इसके बाद रात को सिंचाई के लिए बिजली सप्लाई देने से किसान की परेशानियां बढ जाती हैं। किसानों ने बताया कि रात के समय 11 बजे से सुबह 4 बजे तक बिजली दी जाती है। जीएसएस पर तालाबंदी और धरने की सूचना के बाद सहायक अभियंता मोहनलाल स्वामी ने किसानों से बातचीत की और दिन में विद्युत सप्लाई सुचारू करवाने का आश्वासन दिया। इसके बाद किसानों ने जीएसएस पर पर लगाई तालाबंदी हटा दी और कर्मचारियों को जीएसएस के अंदर प्रवेश करने दिया।

# फिजिकल टीचर्स के इंटरव्यू शुरू

- संभाग और शिक्षा विभाग के डिविजनल मुख्यालयों पर शुरू होंगे नए स्पोर्ट्स काम्पलेक्स

**बीकानेर,** (कासं)। प्रदेश के सभी संभाग मुख्यालयों और शिक्षा विभाग के डिविजनल मुख्यालयों पर नए स्पोर्ट्स काम्पलेक्स शुरू किए जा रहे हैं। इन केंद्रों पर अनेक खेलों की ट्रेनिंग दी जाएगी। ऐसे में प्रदेशभर में फिजिकल टीचर्स को भी इन केंद्रों पर पदस्थापित किया जा रहा है। यहां बीकानेर में शाला क्रीडा संगम केंद्रों के लिए इंटरव्यू शुरू हो गए हैं।

बीकानेर के अलावा चूरू, अजमेर, जोधपुर, भरतपुर, जयपुर, कोटा, पाली और उदयपुर में ये केंद्र जल्द ही शुरू हो जाएंगे। इन केंद्रों पर बड़ी संख्या में फिजिकल टीचर्स का पदस्थापन किया जाएगा। ऐसे में जो फिजिकल टीचर इन शहरों में अपना पदस्थापन करवाना चाहते हैं, वो आवेदन कर रहे हैं। बीकानेर स्थित शिक्षा निदेशालय में इन टीचर्स के इंटरव्यू हो रहे हैं, जिसके बाद इनका चयन होगा।

ऐसे में बड़ी संख्या में ग्रेड थर्ड, ग्रेड सेकंड फिजिकल टीचर्स को इधर-उधर होने का अवसर भी मिल रहा है। शिक्षा विभाग ने पिछले दिनों में जो बड़ी संख्या में नए खेल भी स्कूल स्तर पर शुरू कर दिए हैं। इनके प्रशिक्षण की व्यवस्था भी इन केंद्रों पर रहेगी। बीकानेर सहित सभी जिलों में पहले से ऐसे केंद्र चल रहे हैं और नए केंद्र खुलने से खिलाड़ियों को प्रशिक्षण मिलेगा, वहीं अपने जिलों से बाहर बैठे फिजिकल टीचर्स को भी अवसर मिलेगा।

# लापता युवक का कंकाल गटर की कुई में मिला

**खाटूश्यामजी,** (निसं)। थाना अंतर्गत मंडा ग्राम से 12 जुलाई को लापता हुए युवक का शव ग्राम के ही पास में स्थित शंकर अग्रवाल के बंद गटर की कुई में मिला।

थानाधिकारी सुभाष चंद्र यादव ने बताया कि लापता श्रवण सिंह शेखावत पुत्र मेघ सिंह की तलाश की जा रही थी। लापता की आस-पास के क्षेत्र में मोबाइल लोकेशन पूछताछ में संदिग्ध एक महिला सहित चार लोग सामने आए। संदिग्ध कैलाश अग्रवाल, महेंद्र सिंह शेखावत, विकास नायक व सुनीता अग्रवाल से गहनता से पूछताछ करने पर उन्होंने बताया कि लापता युवक श्रवण सिंह को अधिक शराब पिलाकर शंकर अग्रवाल के घर पर ही उसे मार कर पीछे बने बंद गटर की कुई में डालकर उसके ऊपर नमक और मिट्टी डाल दी गई जिससे किसी को कोई शक ना हो।

पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव निकालने के लिए सिविल डिफेंस सीकर को सूचना दी। मौके पर पहुंची टीम ने मृतक के रिश्तेदार भाई जितेंद्र सिंह को कुई के अंदर उतारा गया। शव के बजाय मृतक के कंकाल हड्डी व अन्य सामान मिला। पुलिस शव को कब्जे में लेकर जैसे ही सीकर के लिए रवाना होने लगे तो मृतक की पत्नी रीटा कंवर के नेतृत्व में सैकड़ों ग्रामीणों ने पुलिस को घेर लिया और मौके पर ही धरने पर बैठ गए।

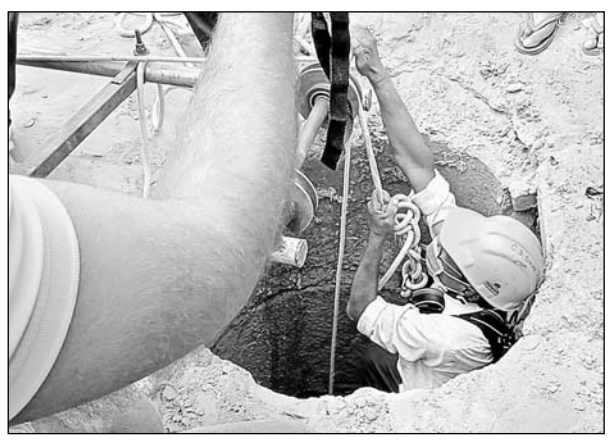

सिविल डिफेंस सीकर की टीम ने कंकाल को कुई से निकाला।

- संदिग्ध लोगों से पूछताछ में हुआ खुलासा

सूचना पर जनप्रतिनिधि पूर्व विधायक अमराराम, गजानंद कुमावत, महावीर कुमावत, हनुमान सिंह शेखावत व गोडावास के सरपंच प्रभु सिंह गोगावास, अरोरा के पूर्व सरपंच मूल सिंह ने धरने पर पहुंचकर विरोध जताया।

एसडीएम व पुलिस के आला अधिकारियों दवारा समझाइश करने पर परिजनों ने मृतक के 5 वर्षीय पुत्री व 2 वर्षीय पुत्र को सरकारी नौकरी देने के साथ एक करोड रुपए का आर्थिक सहायता की मांग की। काफी समझाइश की गई लेकिन परिजनों व धरना स्थल पर बैठे ग्रामीण नहीं माने।

# मां से झगड़ा करने पर बड़े भाई की हत्या

**अनूपगढ,** (निसं)। मां से झगड़ा करने पर छोटे ने बड़े भाई को रोका गुस्से में सिर पर गंडासी से मार दिया। इससे बड़े भाई की इलाज के दौरान रात को मौत हो गई। पुलिस ने मृतक की पत्नी की रिपोर्ट पर दो देवर और सास के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया है।

मामला श्रीगंगानगर के अनूपगढ़ की रावला मंडी के गांव 8 केडी का है। मारपीट में घायल करण कुमार विश्नोई (25) पुत्र महादेव ने बीकानेर में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस उपाधीक्षक जयदेव सियाग ने बताया कि करण कुमार (25) पुत्र महादेव अपनी मां के साथ झगड़ा कर रहा था। तब छोटे भाई सुनील कुमार(22) ने करण को रोका, लेकिन वह नहीं माना। इस पर दोनों भाइयों में झगड़ा हो गया। गुस्से में आकर सुनील कुमार ने बड़े भाई करण के सिर में गंडासी से वार कर दिया।

- छोटे भाई ने सिर में गंडासी मारी, पुलिस ने हिरासत में लिया

घटना में करण गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को रावला से गंभीर हालत में बीकानेर रैफर कर दिया। इलाज के दौरान युवक ने रात दम तोड़ दिया। पुलिस ने मंगलवार को आरोपी छोटे भाई सुनील को राउंडअप किया है।

मृतक करण की पत्नी मनीता (22) ने रावला पुलिस थाने में देवर सुनील (22) और सुधीर (20) और सास बेदी देवी(63) व दो अन्य ने जान के खिलाफ मामला दर्ज कराया। करण कुमार के 7 महीने की बेटी है। करण अपने 2 भाइयों के साथ एक ही घर में रहता था।

# मौसम का बदला मिजाज

श्रीमाधोपुर में शाम चार बजे बाद बारिश का दौर शुरू हुआ।

**श्रीमाधोपुर,** (निसं)। क्षेत्र में नवंबर के दूसरे सप्ताह के शुरूआत में मंगलवार शाम 4 बजे मौसम का मिजाज अचानक बदल गया। शाम चार बजे ही अंधेरा सा छा गया और और वाहन चालकों को वाहनों की लाइट जलानी पड़ी।

इसके बाद तेज हवा और बादलों की गर्जना के साथ शाम 4.45 बजे बारिश का दौर शुरू हो गया। मौसम विभाग के अनुसार नए पश्चिमी विक्षोभ (वेस्टर्न डिस्टर्बेंस) के चलते मौसम में बदलाव के साथ रात के तापमान में 5 डिग्री तक गिरावट दर्ज की जा सकती है। सीकर के कृषि अनुसंधान केंद्र फतेहपुर पर सोमवार रात का पारा 19 डिग्री दर्ज किया गया है। इससे पहले यहां रविवार रात का पारा 13.5 डिग्री और शनिवार रात का पारा भी 13.5 डिग्री दर्ज किया गया था।

# स्विमिंग पूल में छात्र की डूबने से मौत

**बौंली,** (निसं)। निवाई रोड स्थित जयगढ़ पैलेस स्विमिंग पूल बौंली उपखंड मुख्यालय पर अपने साथियों के साथ नहाने गए एक छात्र की डूबने से मौत हो गई। बौंली सर्किल इंस्पेक्टर कुसुम लता मीणा ने बताया कि अमृत लाल मीणा उम्र 16 वर्ष 11वीं कक्षा में जय बजरंग विद्यालय में अध्ययनरत था जो अपने 8-10 साथियों के साथ स्विमिंग पूल में 9:30 पर नहाने गया था।

इसी दौरान सभी छात्र मित्र नहाने में मस्त थे और वह अंदर पानी में छलांग लगाकर कूदा जिससे वह बाहर नहीं निकल पाया। काफी समय बाद जब उसके अन्य साथियों ने उसे नहीं देखा तब उसे बाहर निकाला तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। छात्र अमृत लाल मीणा उम्र 16 वर्ष निवासी खाट कला सूरवाल यहां हॉस्टल में रहकर बजरंग विद्यालय में अध्ययन कर रहा था। पुलिस ने बौंली चिकित्सालय में मृतक छात्र का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया।

# स्वास्तिक कॉ-ऑपरेटिव सोसायटी ने दर्जनों महिलाओं को ठगा

## दस-दस हजार रुपए देकर चार से पांच गुना की वसूली

**चूरू,** (कासं)। स्वास्तिक क्रेडिट कॉ ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड चूरू ने दर्जनों महिलाओं को ठगी का शिकार बनाया है। स्वास्तिक क्रेडिट कॉ ऑपरेटिव सोसायटी ने दर्जनों महिलाओं को दस-दस हजार रुपए का ऋण देकर चार से छह गुना तक राशि वसूल कर ली है। उसके बाद भी उनकी पूर्ति नहीं हुई है। यहां वार्ड नम्बर 24 की 2 सगी बहनों स्नेहा सेन व दीया सेन ने स्वास्तिक क्रेडिट कॉ ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड चूरू से 17 नवम्बर 2017 को दस-दस हजार रुपए लिए थे।

दीया ने बताया कि 3 जुलाई 2020 तक 37800 रुपए नगद जमा करवा दिया। इसके अलावा छह हजार रुपए की कोई रसीद ही नहीं दी गई। इसी प्रकार स्नेहा ने भी 33 हजार से अधिक रुपए जमा करवा दिए और अपना ऋण चुकता कर दिया। उसके बाद दोनों बहनों की विवाह हो गया। दीया सेन ने बताया कि गत सप्ताह स्वास्तिक क्रेडिट कॉ ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड चूरू की मैडम किरण उनके ससुराल लक्ष्मणगढ़ पहुंच गई और जेल भिजवाने की धमकी देने लगी। किरण इतने में ही नहीं मानी और उसने कहा कि वह फिर आएगी और घर के आगे नोटिस चिपकाकर जाएगी। किरण की धमकी के बाद दोनों बहनें मानसिक रूप से परेशान हैं। ससुराल वालों के सामने भी बेवहज नीचा देखना पड़ रहा है।

- दो बहनों को ससुराल जाकर दी जेल भेजने की धमकी
- सोसायटी के खिलाफ उच्च स्तरीय जांच की मांग

इसी प्रकार स्वास्तिक क्रेडिट कॉ ऑपरेटिव सोसायटी ने मीरा से 57625 रुपए, जाहिदा से 42670 रुपए, नीलू से 27800 रुपए वसूल लिए हैं। उसके बाद भी और रुपए मांग रहे हैं। नसीम, किरण आदि सहित दर्जनों अन्य महिलाएं भी स्वास्तिक क्रेडिट कॉ ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड चूरू की ठगी का शिकार हो चुकी हैं। यहां महिलाओं ने बताया कि स्वास्तिक क्रेडिट कॉ ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड वाले धमकाने के लिए लोगों को भेजते हैं। इससे उनका जीना मुश्किल हो गया है। इस संबंध में राजस्थान महिला आयोग की अध्यक्ष रेहाना रियाज को भी अवगत करवाएंगे। उसके बाद भी स्वास्तिक क्रेडिट कॉ ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड चूरू को पाबंद नहीं किया गया तो न्यायालय का सहारा लिया जावेगा। पीड़ित महिलाओं ने दोषी स्वास्तिक क्रेडिट कॉ ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड के खिलाफ उच्च स्तरीय जांच की मांग की है।

# कांग्रेस के मंत्री-विधायक ग्रेटर निगम के पार्षदों को साधने में जुटे, उधर हैरिटेज के पार्षद बगावत पर उतरे

## मेयर मुनेश की कार्यशैली से नाराज करीब एक दर्जन कांग्रेस व निर्दलीय पार्षदों ने हैरिटेज निगम में धरना दिया

ग्रेटर निगम में दो दिन बाद होने वाले महापौर उपचुनाव को लेकर मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कांग्रेस पार्षदों से बातचीत की। उधर हैरिटेज नगर निगम में कांग्रेस व निर्दलीय पार्षद अपनी ही पार्टी की महापौर मुनेश गुर्जर की कार्यशैली के विरोध में धरने पर बैठ गए। फोटो-राष्ट्रदूत

-कार्यालय संवाददाता-

**जयपुर**। ग्रेटर नगर निगम में 10 नवंबर को महापौर उपचुनाव है, ऐसे में मेयर की कुर्सी पर कांग्रेस का मेयर बैठाने के लिए इन दिनों कांग्रेस के मंत्री-विधायक जमकर जोड़तोड़ की कोशिशों में जुटे हैं। बाड़ेबंदी में मौजूद कांग्रेस के पार्षदों से इन दिनों समझाइश और मान-मनुहार का दौर चल रहा है। ताकि क्रॉस वोटिंग जैसी स्थिति नहीं बने।

वहीं दूसरी ओर हैरिटेज नगर निगम में मंगलवार को एक दर्जन से ज्यादा कांग्रेस और निर्दलीय पार्षदों ने कांग्रेस की महापौर मुनेश गुर्जर के खिलाफ मोर्चा खोल दिया और निगम मुख्यालय पर करीब एक घंटे तक धरना देकर विरोध भी जताया। इनकी नाराजगी थी कि कांग्रेस की सरकार होने के बावजूद हैरिटेज निगम में बीते 2 साल से ना तो बोर्ड मीटिंग बुलाई जा रही है और न ही संचालन समितियां बनाई गई। वार्डों में विकास कार्यों और सफाई कर्मचारियों को लेकर भी सुनवाई नहीं होती।

- **धरने पर बैठे कांग्रेस व निर्दलीय पार्षदों की नाराजगी थी कि दो साल के कार्यकाल में मेयर मुनेश गुर्जर बोर्ड मीटिंग तक नहीं बुला रही है, अधिकारी सुनवाई नहीं करते। उधर कांग्रेस सरकार संचालन समितियां गठित नहीं कर रही है।**
- **इन पार्षदों ने मेयर मुनेश को फोन पर चेतावनी दी है कि अगर 15 नवंबर तक उनकी मांगों पर सुनवाई न हुई तो पुनः धरना देंगे**

उधर मंगलवार को मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास और बगरू विधायक गंगा देवी के साथ-साथ विद्याधर नगर के कांग्रेस नेता सीताराम अग्रवाल, सांगानेर से पुष्पेन्द्र भारद्वाज और मालवीय नगर से विधायक प्रत्याशी रही अर्चना शर्मा ने ग्रेटर निगम क्षेत्र के पार्षदों से बातचीत की और उनकी समस्याओं को सुना।

राजनीतिक गलियारों में चर्चाएं हैं कि भाजपा में मेयर प्रत्याशी को लेकर चल रहे असंतोष का फायदा उठाने की कोशिश में कांग्रेस नेता जुटे हैं। क्योंकि पिछले दिनों जिस तरह से भाजपा ने सुखप्रीत बंसल का नाम ऐन वक्त पर काटा और कार्यवाहक शील धाबाई को भी मेयर प्रत्याशी बनाने से पार्टी ने परहेज किया, इसे लेकर समर्थक पार्षदों और कई बड़े नेताओं में नाराजगी तो हैं।

हालांकि बीजेपी के नेताओं का कहना है कि सभी एकजुट हैं और पूर्ण बहुमत के साथ भाजपा पार्षद रश्मि सैनी को महापौर बनाएंगे। लेकिन राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि अगर क्रॉस वोटिंग की संभावना बनती है तो कांग्रेस इसका फायदा उठाने की पूरी कोशिश करेगी। इसलिए कांग्रेस के मंत्री-विधायक और विधायक प्रत्याशी अपने-अपने क्षेत्र के पार्षदों से बातचीत करने में जुटे हैं।

उधर मंगलवार दोपहर को जिस तरह से कांग्रेस और निर्दलीय विधायकों ने हैरिटेज मेयर मुनेश गुर्जर के खिलाफ मोर्चा खोला है, उसे लेकर भी मंत्री-विधायक चिंतित है। मंगलवार को जब करीब 19 पार्षद हैरिटेज नगर निगम में बीते दो साल से बोर्ड मीटिंग नहीं बुलाये जाने और संचालन समितियां गठित न होने को लेकर धरना देने पहुंचे तो हड़कंप मच गया। हालांकि गुरूनानक जयंती का अवकाश होने के कारण निगम मुख्यालय में छुट्टी का माहौल था। धरने पर बैठे पार्षद कांग्रेस की सरकार, विधायक और मेयर को कोसते दिखे।

इन पार्षदों का कहना था कि प्रदेश में जब कांग्रेस की सरकार है और हैरिटेज नगर निगम में कांग्रेस का बोर्ड है, उसके बावजूद कांग्रेस के ही पार्षदों में विकास कार्य नहीं हो रहे। अफसर उनके फोन तक नहीं उठाते है। कांग्रेस बोर्ड को समर्थन दे रहे निर्दलीय पार्षदों ने भी कमेटियां बनाने की मांग की। पार्षदों ने महापौर मुनेश गुर्जर को मोबाइल पर स्पीकर ऑन कर अपनी मांगे रखी। बैठक से पार्षदों ने कमेटियां गठन करने, विकास कार्यों की स्वीकृत, सफाई कर्मचारियों के समानीकरण और बोर्ड बैठक बुलाने की मांग की।

पार्षदों का आरोप है कि आयुक्त उनके विकास कार्यों की फाइलों को स्वीकृत नहीं कर रहे हैं। पार्षदों ने चेताया है कि अगर 15 नवंबर तक उनकी सुनवाई नहीं हुई तो वे धरने पर बैठेंगे। धरने पर बैठने वाले इन पार्षदों में जाहिद निर्माण, मौजम बानो, मोहम्मद एहसान, सलमान मंसूरी, सना वसीम खान, जमीला बेगम, मोहम्मद फारूख, आयशा सिद्धकी, रोहित कुमार, मोहम्मद जकरिया शेरम, अरविंद मेठी, शोएब मुबारक, सोहेल मंसूरी, संतोष, नरेश नागर, उमरदराज, मोहम्मद शफीक, अकबरुद्दीन और सुनीता देवी शामिल थे।

# मकानों-गाड़ियों पर पथराव करने वाले बदमाशों को ढूंढ रही पुलिस

**जयपुर** (कासं)। राजधानी के चित्रकूट इलाके में सोमवार रात बदमाशों ने गाड़ियों और मकान पर पथराव कर दिया। बदमाशों ने एक के बाद एक कई गाड़ियों में तोड़फोड़ की। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन तब तक बदमाश फरार हो चुके थे। घटना के बाद स्थानीय लोगों में दहशत है। अब पुलिस फुटेज के आधार पर बदमाशों को चिन्हित कर गिरफ्तारी के प्रयास कर रही है।

एसीपी (वैशाली नगर) आलोक कुमार सैनी ने बताया कि डीसीएम स्थित विद्युत नगर ए में सोमवार रात गाड़ियों में तोड़फोड़ की वारदात हुई है। दर्जनभर से अधिक बदमाश अलग-अलग बाइकों पर लाठी-डंडे लिए कॉलोनी में घुसे। बदमाशों ने लग्जरी कार और पास ही स्थित एक मकान पर हमला बोल दिया। बदमाशों ने जिस मकान में धावा बोला, उसमें कुछ छात्र रहते हैं, लेकिन वारदात के समय वे वहां नहीं थे। फिलहाल पुलिस वीडियो और घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज के आधार पर बदमाशों की तलाश कर रही है।

कॉलोनीवासियों ने बताया कि अचानक लाठी-सरिए लेकर पहुंचे बदमाश गाड़ियों और मकान पर पथराव करने लगे तो दहशत फैल गई। कई बार पुलिस कंट्रोल रूम पर फोन किया, लेकिन कॉल नहीं लगा। बाद में चित्रकूट थाना पुलिस से संपर्क हुआ। पुलिस पहुंचने से पहले ही बदमाश भाग गए। पुलिस मुकदमा दर्ज कर बदमाशों की तलाश में जुटी है।

## सार-समाचार

### चोरी के वाहन खरीदने वाला गिरफ्तार

**जयपुर** (कासं)। सोडाला थाना पुलिस ने चोरी के दुपहिया वाहन खरीदने वाले एक शातिर अपराधी को गिरफ्तार किया है और उसके पास से तीन चोरी के दुपहिया वाहन भी जब्त किए गए है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है। थानाधिकारी सतपाल सिंह ने बताया गिरफ्तार आरोपित कुणाल सिंह उर्फ नोनी (19) तेजाजी का मंदिर, मुख्य सोडाला का रहने वाला है, जिसकी निशानदेही के आधार पर तीन चोरी के दुपहिया वाहन जब्त किए गए है। आरोपित ने यह चोरी के वाहन अपने जानकार शिवम उर्फ अंशुमान सिंह चोरी द्वारा चोरी करना और स्वयं द्वारा इस वाहन को क्रय कर बेचना स्वीकार किया है। उधर गांधीनगर थाना पुलिस ने चोरी के एक प्रकरण में मकान मालिक के बेटे को गिरफ्तार किया है। जांच-अधिकारी एएसआई धर्मेंद्र सिंह ने बताया गिरफ्तार आरोपित गौरव यादव (34) शिवाड़ एरिया, बापू नगर स्थित मकान संख्या सी-59 ए का रहने वाला है। आरोपित की मां ने एक कम्पनी को अपने मकान में किराए पर कमरा दिया था। आरोपित गौरव यादव ने कम्पनी के सामान को चुरा लिया था। इस पर मुकदमा दर्ज कर आरोपित को गिरफ्तार किया गया है।

### फांसी लगाकर युवक ने जान दी

**जयपुर** (कासं)। सोडाला थाना इलाके में सोमवार देर रात एक युवक ने अपने घर में साडी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने मंगलवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। जांच-अधिकारी एएसआई राजकुमार ने बताया कि मृतक विकास सैनी (35) पुत्र घासीराम शिव कॉलोनी रामनगर का रहने वाला था। मृतक शराब पीने आदि था। उसने घटना के दौरान शराब पी रखी थी। घटना के वक्त परिवार के लोग शादी में गए हुए थे। इस दौरान सोमवार रात विकास ने साडी का फंदा लगा कर आत्महत्या कर ली। फ़िलहाल आत्महत्या के कारणों का पता नहीं चल सका है। पुलिस ने मंगलवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद मृतक का शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस की प्रारम्भिक जांच में सामने आया कि कुछ समय पहले ही मृतक के पिता और बडे भाई की मौत हो चुकी है।

### 'मेगा जॉब फेयर' 14 नवंबर को

**जयपुर**। कौशल, नियोजन एवं उद्यिमता विभाग की ओर से युवाओं को रोजगार के अवसर मुहैया कराने के लिए 14 नवम्बर को स्टेच्यू सर्किल स्थित बिड़ला ऑडिटोरियम में 'मेगा जॉब फेयर' आयोजित किया जाएगा। आयुक्त रेणु जयपाल ने कार्यक्रम स्थल का जायजा लिया और तैयारियों के लिए जरूरी दिशा-निर्देश दिए। रेणु जयपाल ने अधिकारियों के साथ कार्यक्रम की बैठक व्यवस्था, रजिस्ट्रेशन, हेल्प डेस्क, कम्पनियों की स्टॉल्स सहित सभी व्यवस्थाओं के संबंध में चर्चा कर निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि जॉब फेयर में आने वाले आशार्थियों के लिए सभी व्यवस्थाएं बेहतर ढंग से की जाए। उन्हें किसी प्रकार की दिक्कत नहीं होनी चाहिए। रजिस्ट्रेशन से लेकर कम्पनियों में रोजगार पाने तक की पूरी प्रक्रिया आसान हो। हेल्प डेस्क की ऐसी व्यवस्था हो, जहां उन्हें आवश्यक हर मदद मिल जाए। उन्होंने नोडल अधिकारियों को अपनी-अपनी जिम्मेदारियों के मुताबिक सभी तैयारियां तय समय पर पूरी करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर आरएसएलडीसी के महाप्रबंधक खेमाराम यादव, सतीश महला, डीपी सैनी सहित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) एवं रोजगार विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

### जोधपुर की महिला से जयपुर में दुष्कर्म

**जयपुर** (कासं)। जोधपुर की एक महिला से जयपुर में दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। इस संबंध में सिंधी कैंप थाने में रिपोर्ट दर्ज की गई है। पुलिस के अनुसार मूलतया जोधपुर निवासी 35 वर्षीया विवाहिता की इंस्टाग्राम पर जीपीओ, पुरानी बस्ती निवासी श्रेयांस पारीक से हुई थी। आरोप है पीड़िता 4 अगस्त को जयपुर में थी। इस दौरान श्रेयांश मिलने के बहाने उसे सिंधी कैंप स्थित होटल ब्ल्यू हेवन ले गया, जहां कॉफी में नशीला पदार्थ मिला कर पीड़िता को पिला दिया। इसके बाद बेहोशी की हालत में उसके साथ दुष्कर्म किया और अश्लील वीडियो बना लिए। अब वह ब्लैकमेल कर रहा है। पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

### डोडा-चूरा के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

**जयपुर** (कासं)। सिंधीकैम्प थाना पुलिस ने पंजाब के दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से 20 किलो डोडा चूरा जब्त किया गया है। पुलिस के अनुसार गिरफ्तार आरोपित अमनदीप सिंह (32) और लवप्रीत सिंह (19) गांव दोधा जिला मुक्तसर, पंजाब के रहने वाले हैं। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर आरोपियों को सिंधी कैंप बस स्टैंड के प्लेटफार्म संख्या 3 पर 20 किलो डोडा चूरा सहित पकड़ा है। आरोपित यह मादक पदार्थ बेंगु से लेकर आए थे और पंजाब लेकर जा रहे थे।

### दंपत्ति से मारपीट कर नाक-कान काटे

**जयपुर** (कासं)। रामनगरिया इलाके में एक युवती से अभद्रता और उसके पति से मारपीट के बाद नाक-कान काटने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। थानाधिकारी राजेश शर्मा ने बताया मूलतया नरैना क्षेत्र निवासी 44 वर्षीया महिला का इलाके में ससुराल है। उसके पति की कुछ दिन पहले एक्सीडेंट में मौत हो गई थी। आरोप है महिला अपनी नाबालिग बेटी और उसके पति के साथ 31 अक्टूबर की सुबह ससुराल आई थी। यहां रामजीलाल गोट्या सहित अन्य ने उसकी बेटी के साथ मारपीट कर बेअदबी की और जब उसका पति उसे बचाने आया तो उससे भी जमकर मारपीट की गई। इसके बाद उसके नाक कान काट दिए गए। पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

### बच्ची से छेड़छाड़ करने वाला निरूद्ध

**जयपुर** (कासं)। विधाधर नगर इलाके में मासूम से अश्लील हरकत करने वाले बालअपचारी को पुलिस ने निरुद्ध कर लिया है। पुलिस के अनुसार इलाके निवासी महिला ने रिपोर्ट दी थी कि 7 नवंबर की दोपहर करीब तीन बजे उसकी साढे पांच साल की बेटी घर के बाहर खेल रही थी। इस दौरान पडौस में रहने वाला 16 वर्षीय किशोर वहां आया और बच्ची को अपने साथ ले गया, जहां उसके साथ गलत हरकत की। पुलिस मामला दर्ज कर बालअपचारी को निरुद्ध कर लिया है।

### युवक के गले से चेन तोड़ी

**जयपुर** (कासं)। मानसरोवर इलाके में बाइक सवार बदमाश महिला की चेन लूटने में नाकाम हुए तो उसके पति की सोने की चेन तोड़ ले गए। पुलिस के अनुसार भृगु पथ स्थित भृगु अपार्टमेंट निवासी ओमप्रकाश सैनी ने रिपोर्ट दी है कि वह अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ 6 नवंबर को खरीदारी के लिए बाइक से बाजार गया था। वापिसी में करीब 8 बजे के एल सैनी स्टेडियम के पास पीछे से दो बाइक सवार बदमाश आए, जिन्होंने पत्नी को गिराने और चेन लूटने की कोशिश की। बदमाश वारदात में सफल नहीं हुए। इस दौरान पत्नी चिल्लाने लगी तो बदमाश ओमप्रकाश के गले पर झपट्टा मार उसकी सोने की चेन तोड़ ले गए। पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

# स्कूल बस से फिसलकर सड़क पर गिरे छात्र की दर्दनाक मौत

**जयपुर** (कासं)। मुहाना इलाके में एक नौवीं कक्षा के छात्र को उसी के स्कूल की बस ने कुचल दिया, जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। हादसे के बाद सड़क पर खून बिखर गया। सूचना पर मौके पर पहुंची ने मृतक छात्र के शव को जयपुरिया अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है। बुधवार सुबह शव का पोस्टमार्टम किया जाएगा। वहीं, पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

थानाधिकारी लखन सिंह खटाना ने बताया घटना डिग्गी रोड स्थित रिंग रोड के पास स्लिप लाइन मंगलवार दोपहर करीब 3:30 बजे की है, जहां स्कूल बस से एक छात्र अचानक नीचे गिर गया। सिर में गंभीर छोटे लगने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक की शिनाख्त मनीष शर्मा (15) पुत्र मुकेश कुमार शर्मा निवासी बड़ वाली ढाणी, मुहाना के रूप में हुई है।

- **मुहाना इलाके में डिग्गी रोड पर रिंग रोड के नजदीक हुआ हादसा**

दरअसल, मनीष प्रताप पब्लिक स्कूल, बालावाला में नौवीं कक्षा का छात्र है। यह स्कूल के परिवार का ही है। वह रोजाना की तरह स्कूल से छुट्टी होने के बाद बस में बैठ कर घर आ रहा था। इस दौरान वह घर नजदीक आते समय बस के गेट पर आकर खड़ा हो गया। जैसे ही बस डिग्गी रोड पर रिंग रोड के पास स्लिप लाइन पर चढ़ी तो मनीष बस से नीचे जा गिरा। वह सिर के बल गिरा, जिससे उसके सिर में गंभीर चोटें आने की वजह से उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

पुलिस ने बताया मुकेश शर्मा के दो बेटों में मनीष छोटा था, इससे बड़ा राहुल है। हादसा घटित करने वाली बस भी इनके परिवार की ही बताई जा रही है। फ़िलहाल घटना को लेकर कोई मुकदमा दर्ज नहीं हुआ है। वहीं मृतक के शव को जयपुरिया अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है, जहां बुधवार को उसका पोस्टमार्टम कराया जाएगा। हालांकि, पुलिस पूरे मामले की गहनता से जांच कर रही है।

## सड़क हादसे में युवक की मौत

**जयपुर**। मुरलीपुरा इलाके में एक सडक़ हादसे में बाइक सवार युवक की मौत हो गई। पुलिस के अनुसार नानू नगर, मुरलीपुरा निवासी विश्वजीत 6 नवंबर की रात करीब 12 बजे बाइक से घर लौट रहा था। इस दौरान नाड़ी के फाटक के पास एक लोडिंग टेम्पो ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। गंभीर हालत में विश्वजीत को अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों को सौंप दिया, जबकि मृतक के पिता सतेंद्र सिंह की रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर जांच में जुटी है।

उधर हरमाड़ा इलाके में सोमवार सुबह 14 नंबर रोड स्थित चौकटी पर एक व्यक्ति की लाश मिलने से सनसनी फ़ैल गई। फ़िलहाल मृतक की शिनाख्त नहीं हुई है। पुलिस ने मृतक का शव सवाई मान सिंह अस्पताल की मोर्चरी में रखवाई है।

# टैंकर की टक्कर से बाइक सवार की मौत

**जयपुर** (कासं)। रामनगरिया इलाके में सोमवार देर रात एक पानी के टैंकर ने बाइक सवार युवक को कुचल दिया, जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मंगलवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। वहीं, मृतक के परिजनों की रिपोर्ट पर टैंकर चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसकी तलाश शुरू की है।

थानाधिकारी राजेश शर्मा ने बताया घटना अक्षयपात्र मंदिर के पास की सोमवार रात करीब 9:30 बजे की है। यहां एक टैंकर चालक ने लापरवाही पूर्वक सामने से आ रहे बाइक सवार को कुचल दिया। बाइक सवार की मौके पर ही मौत हो गई।

हादसे के बाद चालक टैंकर लेकर फरार हो गया। मृतक की शिनाख्त मीठालाल मीणा (25) पुत्र नैनूराम निवासी चंदवाडा की ढाणी थाना लवाण जिला दौसा के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया मृतक मीठालाल मीणा इलाके स्थित एक वर्कशॉप पर बाइक रिपेयरिंग का काम करता था। वह रिपेयरिंग के लिए आई बाइक को सोमवार रात अक्षयपात्र मंदिर के पास चेक कर रहा था। इस दौरान टैंकर ने उसे कुचल दिया। पुलिस ने मंगलवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया, जबकि टैंकर चालक की तलाश शुरू की है।

- **रामनगरिया इलाके में अक्षयपात्र मंदिर के पास सोमवार देर रात हुआ हादसा**

# रामजीलाल सैनी ट्रोमा सेंटर के कार्यवाहक नर्सिंग अधीक्षक बने

**जयपुर** (कासं)। सवाई मानसिंह हॉस्पिटल के ट्रोमा सेंटर का कार्यवाहक नर्सिंग अधीक्षक सीनियर नर्सिंग ऑफिसर रामजी लाल सैनी को बनाया गया है। नर्सेज संघर्ष समिति के अध्यक्ष सोमसिंह मीणा और अन्य कर्मचारियों ने सैनी को नर्सिंग अधीक्षक पद पर कार्य भार ग्रहण करने पर माला पहनाकर कर बधाई दी।

इस दौरान नर्सिंग ऑफिसर बाबू लाल, हवासिंह, खालिद मंसूरी, सुनीता डूडी, सुलेखा चौधरी व सागर सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे। उधर राजस्थान नर्सेज़ पैरामेडिकल संघर्ष समिति के प्रदेश संयोजक मनोज दुब्बी ने प्रदेश में पैरामेडिकल सहित नर्सिंग के रिक्त पदों को भरने के लिए राज्य सरकार से जल्द नई भर्ती का विज्ञापन जारी करने की मांग की है। दुब्बी ने बताया कि प्रदेश हेल्थ इन्स्पेक्टर के लगभग 1000 पद रिक्त हैं। वहीं राज्य में 2018 में फार्मासिस्ट की भर्ती निकाली जो आज तक पूरी नही हुई। नर्सिंग ऑफ़िसर के लगभग 7000 पद व महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता के लगभग 4000 रिक्त पदों पर जल्द सीधी भर्ती बोनस अंको के आधार पर निकालकर संविदा नर्सेज को नियमित किया जाए।

# वार्षिकोत्सव में श्याम बाबा के भजनों पर झूमे श्रद्धालु

**जयपुर** (कासं)। श्री श्याम सेवा संघ मानसरोवर का 18 वां वार्षिकोत्सव मानसरोवर के दीप स्मृति सभागार बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

श्री श्याम सेवा संघ मानसरोवर के अध्यक्ष विमल कुमार सोनी ने बताया कि चांदी की टकसाल स्थित काले हनुमान मंदिर के महंत गोपाल दास महाराज के सान्निध्य में कोलकाता के रवि बेनीवाल ने उन्होंने बांके बिहारी लाल तू इतना ना करियो श्रृंगार नजर तोहे लग जाएगी... जैसी श्याम भजनों की ऐसी स्वर लहरियां बिखेरी कि उपस्थित श्रद्धालुओं ने स्वर में स्वर मिलाकर जुगलबंदी की। दिल्ली के शीतल पांडे ने यह तेरा खोटा सिक्का सरे आम चल रहा है..., तेरा प्यार का आसरा चाहता हूं, कृपासिंधु तेरी कृपा चाहता हूं..., मेरी दुनिया ही बदल दी तूने क्या जरा सा तेरा नाम लिया... जैसी रचनाएं सुनाकर माहौल को श्याम बना दिया। निशा-गोविंद शर्मा ने जब तक आशा पूरी नहीं होगी जब तक दर से हम नही हटेंगे... भजन सुनाकर श्याम भक्तों की मंशा की झलक झांकी प्रस्तुत की। श्री श्याम सेवा संघ मानसरोवर की ओर से श्याम बाबा के दरबार में पूजा-अर्चना कर श्याम भक्तों को झंडियां वितरित की गई। हर ओर लहराते निशान को देखकर आयोजन स्थल खाटू श्याम जी की तरह लग रहा था। श्री श्याम सेवा संघ मानसरोवर के अध्यक्ष विमल कुमार सोनी ने बताया कि कोलकाता से मंगाए फूलों से बाबा श्याम प्रभु का नयनाभिराम शृंगार किया गया। छप्पन भोग की झांकी सजाकर अखंड ज्योत प्रज्जवलित करने के साथ कीर्तन का शुभारंभ हुआ।

# भागवत कथा में हुआ राष्ट्रवाद का शंखनाद

## साध्वी ऋतंभरा ने दक्षिणा में लिया देश का सौभाग्य बनाए रखने का संकल्प

विद्याधरनगर सेक्टर-7 में साध्वी ऋतंभरा की श्रीमद्भागवत कथा सुनने श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी।

**जयपुर** (कासं)। परम शक्तिपीठ के तत्वावधान में वृंदावन की श्री सर्व मंगला पीठम् की स्थापना के निमित्त विद्याधरनगर सेक्टर-7 के अग्रसेन पार्क के सामने दो नवंबर को शुरू हुई दीदी मां साध्वी ऋतंभरा की श्रीमद्भागवत कथा मंगलवार को सुदामा चरित्र, नवयोगेश्वर संवाद, कलियुग वर्णन और परीक्षित मोक्ष के प्रसंग के साथ संपन्न हुई।

अंतिम दिन की कथा राष्ट्रवाद के नाम रही। साध्वी ऋतंभरा ने श्रद्धालुओं को देश के प्रति कर्तव्यबोध करवाते हुए दक्षिणा के रूप में देश से प्रेम करने और इसे अखंड बनाए रखने का संकल्प करवाया। प्रारंभ में कथा के मुख्य यजमान शिव कुमार गोयल ने व्यासपीठ का पूजन कर आरती उतारी। कार्यक्रम संयोजक सौरभ गोयल ने आभार प्रकट किया।

साध्वी ऋतम्भरा ने राष्ट्रवाद का शंखनाद करते हुए कहा कि देश से अगर प्यार है तो इसे भारत ही रहने दो। अपनी संस्कृति को बचाओ। बच्चों को विदेशों में पढाकर मैकाले की संतान मत बनाओ। वहां पढकर ज्यादातद बच्चे धर्म और संस्कृति का विरोध करते हैं। विदेशी षड्यंत्र के तहत वैब सीरीज के माध्यम से देश की संस्कृति को खत्म किया जा रहा है।

उन्होंने कहा जिसको भारत की धरती से प्यार नहीं उसे भारत में रहने का अधिकार नहीं है। जिसे देश से प्यार है, वह संकल्प करें कि वह निजी स्वार्थ, जाति और प्रांतवाद से ऊपर उठकर भारत का सौभाग्य बनाए रखेंगे। ऋतंभरा ने कहा कि देश 800 साल तक किसी का गुलाम नहीं रहा, वह हमारा संघर्ष का कालखंड था।

अयोध्या के बन राम मंदिर को प्रसंग में शामिल करते हुए कहा कि राम मंदिर कर्तव्य की इतिश्री नहीं मात्र प्रारंभ है। इस दौरान मैं रहू या ना रहू भारत यह रहना चाहिए...गीत के माध्यम से उन्होंने देशभक्ति की हिलोर पैदा कर दी। साध्वी ऋतम्भरा ने गुरु नानक जयंती पर शबद कीर्तन भी किया। चंद्रग्रहण होने के कारण लोगों ने कथा पांडाल में भजन गाए और संकीर्तन किया। इस मौके पर अलवर सांसद स्वामी सुमेधानंद, रीको के निदेशक सीताराम अग्रवाल सहित अनेक विशिष्ट लोग उपस्थित रहे।

साध्वी ऋतंभरा ने कहा कि जो भी कार्य करो हमेशा यह भाव रखो कि करने वाला और कराने वाला भगवान है। वह तो मात्र उपकरण है। क्योंकि कार्य के दौरान होने वाली टीका टिप्पणी से किसी को रोका नहीं जा सकता। भगवान कृष्ण तक पर मणि की चोरी का आरोप लगा है । इसलिए पाप और पुण्य भगवान को अर्पित करते रहिए। पुण्य पेट है तो पाप पीठ। दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। पुण्य करते-करते कब पाप हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। जिसस कार्य को करके छुपाना पड़े वही पाप है, लेकिन वास्तव में भगवान से कुछ छुपा नहीं रहता। हमारा चित्त ही चित्रगुप्त है जो हमारे पाप और पुण्य का लेखा जोखा लिखता रहता है। साध्वी ऋतम्भरा ने कहा कि संबंधों के बीच संदेह है मत आने दीजिए अन्यथा संबंधों में बिखराव आ जाता। रिश्तों में अहम और वहम दोनों ही खतरनाक है।

ARBiT
it happens here...

**World Freedom Day**

In many parts of the world, freedom is something that is taken for granted. There are many places in the world where people are forced to live empty, unfulfilling lives. If you don't know what it means to be afraid to voice your opinion, then you can consider yourself very lucky to live in a place where liberty is a priority as well as a basic human right. And like all good things, liberty should be celebrated, and that's what World Freedom Day is all about.

राष्ट्रदूत
WEDNESDAY
9 November 2022
A-B

#AMUSEMENT

# Amazing Theme Parks In India

With time, many theme parks have come into existence in India and have proved to be a complete package of entertainment.

For kids who grew up in Delhi-NCR in the late 90s and early 2000s, the name 'AppuGhar' is a part of their collective consciousnesses. The famous amusement park was located in PragatiMaidan and was the first of its kind in the country. But it closed in 2008 after having entertained children and adults for 24 years.

However, gone are the days when kids all over India had limited fun options like AppuGhar. With time, many other theme parks came into existence that proved to be complete entertainers. Here are five fantastic theme parks in India you can't miss.

**Imagica, Mumbai**

**This** magical place is full of themed rides such as 'Salimgarh' and 'Wrath of the Gods' to 'Dare 2 Drop' and 'Scream Machine' (for the slightly braver participants). The rides that can be described as 'less crazy' are the 'Tea Cup' and 'Carousel.' There is also a delightful food court where you can relish amazing pizzas and burgers.

**Location:** Sangdewadi, Pali-Khopoli Road, Tal-Khalapur, Off Mumbai-Pune Express

**Ramoji Film City, Hyderabad**

**An** integrated film studio complex, Ramoji Film City is spread over 1,666 acres, making it the largest film studio complex in the world. It is also a popular tourism and recreation center, containing natural and artificial attractions, including an amusement park.

**Location:** NH-9, 30 km from Hyderabad

**Kingdom of Dreams, Gurgaon**

**It** is a relatively newer addition to the Indian theme park scene. Walking under the magnificent skies of the 'culture gully,' you can explore the food and arts of various Indian states. You can also buy a ticket to Zangoora, Bollywood's first musical. Packed with culture and entertainment, hours spent here are a delightful experience.

**Location:** Near IFFCO Chowk Metro Station, Sector 29, Gurgaon

**Wonderla, Bengaluru**

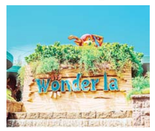


**Keeping** up with the tradition of Bengaluru, this amusement park is as clean and green as the city. With over 50 rides for adults and kids, Wonderla is an enjoyable place. There are also nine unique rides for children. You can enjoy a fun-filled weekend here by staying in the inbuilt residential facilities!

**Location:** 30 kilometers from Bengaluru, off the Bengaluru-Mysore highway.

**Adventure Island, New Delhi**

**This** theme park has everything: bridges, towers, jungles, and lakes. It has bumper car rides that are slightly low on adrenaline but still fun - especially for kids. And then there are the pacey rides like 'Butterfly Feeling,' 'Twister,' and 'Flip Out.' This theme park has something to offer everyone, whether a kid or an adult.

**Location:** Opposite Rithala Metro Station, Sector 10, Rohini, New Delhi

Indira Gandhi listened to Sam and India won a victory the equal of which we had not seen for a thousand years. If in 1962, Nehru had listened to General Umrao Singh, then maybe instead of the ignominious defeat would have had a glorious victory. Not an impossibility nor a figment a figment of my imagination. As the next account of an action which started with another famous general, Sagat Singh's 'No', said in 1965 just three years after the defeat of 1962 and which lasted for over two years till the end of 1967. When Sagat was asked to withdraw his troops from the advantageous positions they held at Nathu La in Sikkim, Sagat not only disregarded the orders of his superior commander's orders but inflicted a crushing defeat on the Chinese. This action by Sagat which ended with an Indian victory, validated the valour of the Indian soldier and exploded the myth of Chinese invincibility

Maj Chandrakant Singh VrC *(Retd)*
*Military Historian*

# Umrao Singh the General Who Said 'No' (...1)

1967 Confrontation at Nathula.

It takes great courage, conviction and confidence in the righteousness one's cause and ability to say no to a superior, knowing fully well that it could jeopardise one's career in normal times. A soldier or an officer in war risks a lot more, to the extent of even forfeiting his life. In the Indian Army there have been three generals who had the courage of conviction at crucial moments of our history to say no to their superiors. Two of these generals are remembered and have become icons of the nation. They are Sam Manekshaw and Sagat Singh.

The other general who stood up to his superiors was Lt Gen Umrao Singh, who has been forgotten by the nation, the army and even his hometown Jaipur. During the crucial period leading to the 1962 Indo-China War, the general had steadfastly refused to act in haste on the unreasonably demands being made on him and the troops under his command. If his superiors had listened to him the nation and the army would have been saved from a shameful defeat the trauma from which we have not yet fully recovered. The Henderson Brooks report says:-

"The three tier concept of defence of NEFA as formulated by Gen Umrao Singh was tactically sound. Had it been properly implemented, there would have been no question of our troops being caught off balance."

Before we inform ourselves of General Umrao Singh's courageous defiance of his superior commander's orders, it would be appropriate to inform ourselves of Manekshaw and Sagat's actions when faced with such unreasonable demands by their political and military superiors. First is the case of Field Marshal Manekshaw and Indira Gandhi in 1971. When the troubles in East Pakistan started and millions of refugees started flooding into India, Mrs Indira Gandhi called a Cabinet meeting to which Sam was invited to attend. A reporter who interviewed Sam some years later has recounted Sam's version of the Cabinet meeting:-

## #1962

Indira Gandhi: -"Sam. What are you doing about it?"

Sam: - "Nothing, it's got nothing to do with me. What do you want me to do?

Indira Gandhi: - "March into East Pakistan."

Sam: - "This means war."

Indira Gandhi: - "I don't mind if it is War."

Sam: - Are you ready? I certainly am not. If we go in now, I guarantee you 100 percent defeat. Its not like in the Bible"

Sardar Swaran Singh. Foreign Minister: - "Sam' what has the Bible got to do with it."

Sam: - "Everything. In the Bible God said 'Let there be light. And there was light.' So you feel, let there be war and there is war. Are you ready? I certainly am not. It is April' in a few day's time the monsoon will break in East Pakistan and the rivers will become an ocean……Sam then turned to the Prime Minister and said, if in 1962 your father had asked me and not the Army Chief General Thappar and said, "Throw the Chinese out', I would have turned around and told him, 'look, these are the problems. Now I am telling you what the problems are. If you still want me to go ahead, Prime Minister I guarantee you 100 o/o defeat. Now you give me your orders"

### A Glorious Victory

Indira Gandhi listened to Sam and India won a victory the equal of which we had not seen for a thousand years. If in 1962, Nehru had listened to General Umrao Singh, then maybe instead of the ignominious defeat would have had a glorious victory. Not an impossibility nor a figment, a figment of my imagination. As the next account of an action which started with another famous general, Sagat Singh's 'No', said in 1965 just three years after the defeat of 1962 and which lasted for over two years till the end of 1967. When Sagat was asked to withdraw his troops from the advantageous positions they held at Nathu La in Sikkim, Sagat not only disregarded the orders of his superior commander's orders but inflicted a crushing defeat on the Chinese. This action by Sagat which ended with an Indian victory, validated the valour of the Indian soldier and exploded the myth of Chinese invincibility and equally importantly gave a huge boost to the morale of both our soldiers and all our countrymen. Unfortunately though everyone was appreciative of the performance of Sagat's Division it did not receive the attention in the media it deserved for it was overshadowed by the happenings in the Western Sector during the 1965 Pakistan War.

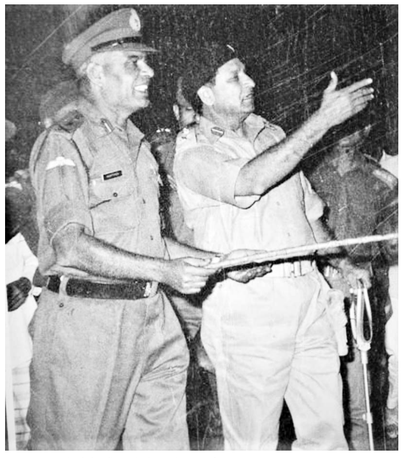

1971 Sagat Singh leading Niazi to prisoner of war camp.

When in September 1965, the Pakistani's attacked us in Kashmir and we retaliated in Punjab, resulting in a full scale war, the Chinese to support their all-weather ally, Pakistan started to make aggressive moves against our forces in Sikkim by moving forward in attempt to occupy the three major passes that lead into Sikkim, Cho La and Nathu La in the North and Jalep La in the South. The Government of India and the Army Headquarters in an attempt to appear conciliatory and not provoke the Chinese, ordered our troops to vacate the advantageous positions they held on the high ground on the watershed and withdraw to their rear defensive positions. Whereas Maj Gen Harcharan Singh, GOC of 27 Division vacated the Jalep La pass and withdrew to the rear, Sagat held firm and not only refused to withdraw and in utter disregard of his orders began demarcating and strengthening our positions on the watershed.

During this period his immediate superior as Corps Commander was Gen Bewoor and later Gen Aurora. The Army Commander was Gen Manekshaw. When the pressure to withdraw became incessant during the height of the crises, Sagat cut himself off from tele communication from his superior commanders, till the time the crises was resolved in our favour.

### The Stand-off

In this prolonged two and a half year stand-off, our casualties were about 300 of which 65 were killed, the rest wounded. But the Chinese suffered many times more and worse our artillery destroyed their bases in the rear in the Chumbi Valley which were visible to our observers who were in an advantageous position on the highground and could bring down accurate fire on the Chinese on both their forward and rear positions.

Those wanting to know more about this incident in Sikkim are advised to read the excellent biography of Sagat 'Talent for War' by Maj Gen Randheer Sinh and an equally good book 'Watershed 1967' by Probal Dasgupta. In 1971 Sagat again disregarded orders of his superiors, first orders from Gen Aurora not to cross the Meghna as that was not a part of his directive. Then on 13 December when ordered by Sam himself to withdraw from Dacca, Sagat in disregard of his orders entered Dacca. The rest as they say is history.

Gen Thappar COAS.

Lt. Gen LP Sen DSO.

For his defiance of orders of his superior commanders Sagat was made to pay a price, at the conclusion of the hostilities, instead of being rewarded he was posted to a less important position as GOC 101 Communication Zone in Shillong, the city which earlier had been the Headquarter of the third of the trio of generals of this account-Lt Gen Umrao Singh as GOC of XXXII Corps.

'Power corrupts, and absolute power corrupts absolutely.' This saying is true of all dictators particularly communist and ideological dictators like Mao, Stalin, Pol Pot and Kim Il Sung, they have killed more of their own countrymen than all the great tyrants of the past like Changez Khan, Taimur and Atila the Hun combined. After their occupation of Tibet, Mao started the process of the genocide of the Tibetan people. Forcing the Dalai Lama to flee to Tibet and to facilitate road communications between China and Tibet illegally occupied the Aksai Chin Plateau which was Indian Territory. The India government silently watched and did nothing.

> Power corrupts, and absolute power corrupts absolutely.' This saying is true of all dictators particularly communist and ideological dictators like Mao, Stalin, Pol Pot and Kim Il Sung, they have killed more of their own countrymen than all the great tyrants of the past like Changez Khan, Taimur and Atila the Hun combined.

### 'Forward Policy'

Only when the occupation of Aksai Chin and aggressive issues were raised in Parliament and the Indian public became agitated that Nehru decided to adopt something called a 'Forward Policy' which implied that the army would take over the duties of the border from the police and establish 'Border Out Posts'. The problem for the Army was that no one seemed to know where exactly the border lay and the maps supplied to the army were inaccurate. Worse was the problem of how to supply these border outposts with not only arms and ammunition but also basics like food and clothing, for there were no roads worth the name and taking supplies by porters and mules entailed a turnaround time of two months or more in some cases. Militarily too it was an unsound proposal for it meant frittering away our troops in small penny packets on the border with no reserves to hold the rear positions to meet any contingency.

In the Eastern Theatre which extended from the Nepal border in the West to the Burmer Border in the East an area which included Sikkim, Bhutan and present day Arunachal, not only did we not have any troops nor any command and control facilities. The first action of the Government was to raise a new Corps XXXIII Corps under Lt Gen Umrao Singh with HQ at Shillong.

*To be Continued....*

writetoarbit@rashtradoot.com

Indira Gandi and Sam Manekshaw.

1967 Sagat Singh with Chogyal and hope Cooke.

#FOREST-ECOLOGY

# Yard Waste Has Lots Of Value

Leaves are small CO2 stores that absorb CO2 from the air and release some of it while decomposing.

Leaving fallen leaves and other yard waste alone can do great things for the climate, a working paper shows.

At the same time, leaves and other yard waste are a boon for backyard biodiversity and soil, according to the calculations of University of Copenhagen professor Per Gundersen.

According to Gundersen, a professor of forest ecology at the department of geosciences and natural resource management, there are large CO2 savings to be made. Gundersen calculated the implications for Denmark's national climate account if Danes simply allowed yard waste to decompose in their gardens instead of burning it.

"If everyone went all-in and learned how to manage their garden's branches and twigs, for example, my calculations suggest that we could store about 600,000 tons of CO2 annually," he says.

The calculations are based on a simple model that includes the different decomposition processes for leaves, twigs, and branches. When Gundersen deducts the utility that branches and trunks used for bioenergy in the current system provide, the CO2 storage potential of yard waste could meet about half of one percent of Denmark's 70% reduction target for 2030.

Leaves consist largely of the gas CO2. Minerals taken up into the soil account for less than 5% of a leaf. Leaves are small CO2 stores that absorb CO2 from the air and release some of it while decomposing. Leaves take three to six months to decompose, until half are left (their half-life), while twigs and branches take two to five years. Tree trunks decay over 10 to 20 years.

"When garden waste is burned or composted by municipal waste schemes, CO2 is returned to the atmosphere very quickly. By keeping waste in the garden, the decomposition process is significantly slower. In practice, this means that one builds up a larger and larger storage of CO2 in the garden in the form of twigs, dead branches, and leaves that are left to decompose," says Gundersen.

Leaves are flying about and filling up yards at this time of the year. But instead of raking them up and hauling them off, there are good reasons to leave them in the yard.

"Leaves help nourish the garden as they feed an entire ecosystem of decomposers. From fungi, bacteria, and tiny, invisible soil creatures to earthworms and roly poly bugs, which help break down and metabolize organic material so that nutrients are released into the soil. These decomposers then act as important food source for larger animals like hedgehogs and birds," explains Gundersen.

As microorganisms, worms, and other decomposers wage war on the leaves, a large part of the biomass ends up as CO2 that slowly releases into the air over several years. A small portion of the gnawed leaves becomes soil humus, a common name for the complicated organic material that takes a very long time to decompose and is very important for plant health.

"A high humus content in topsoil makes for a dark soil that has a good structure and retains water and nutrients well, which is important if you want garden plants to thrive," says Gundersen.

But what to make of all those leaves suddenly filling up the garden? Gundersen suggests raking them into planting beds where vegetables grow, or over to areas where you want to avoid weeds. They can also be gathered in a part of the garden that you may be willing to let grow wild and manage itself.

"Funnily enough, while the wind tends to blow leaves around the garden, they often remain in beds or around bushes where there is less wind, which is a good thing," he says.

By spring, a large portion of the leaves will have already disintegrated and returned into the invisible garden cycle. Leaves from linden and ash trees are especially good at disappearing quickly from gardens. Oak and fruit tree leaves are slower to break down, making them ideal for soil insulation around bulbous plants or vegetables, for example.

**THE WALL**

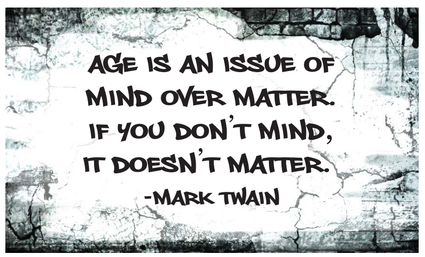


**BABY BLUES** By Rick Kirkman & Jerry Scott

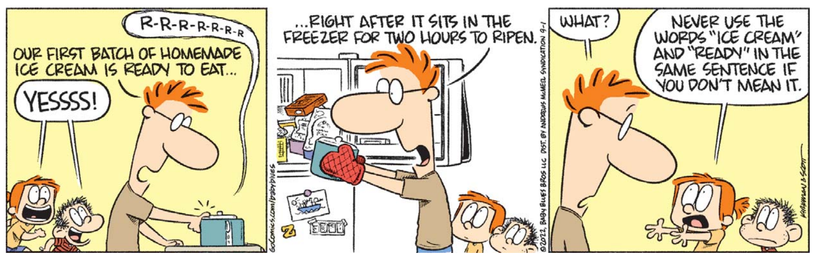


**ZITS** By Jerry Scott & Jim Borgman

# युवक के प्राइवेट पार्ट में मिर्ची पाउडर डालने के प्रकरण में मामला दर्ज

## तीन नवम्बर की घटना के बाद से पीड़ित पक्ष ने कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई थी

**मांडलगढ़,** (निसं)। मांडलगढ़ थाना क्षेत्र के श्यामपुरा इलाके में करीब एक सप्ताह पूर्व दबंगों ने एक युवक को अर्धनग्न कर प्राइवेट पार्ट में पहले मिर्ची पाऊडर डाला। फिर लाठी ओर डंडों से मारपीट की गई। इस बर्बरता पूर्ण घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद इलाके में सनसनी फैल गई। पुलिस ने इस मामले में पीड़ित के पिता की रिपोर्ट पर चार आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है ओर आरोपियों की तलाश में जुट गई हैं।

मांडलगढ़ पुलिस उप अधीक्षक कीर्ति सिंह ने बताया कि मांडलगढ थाना क्षेत्र के श्यामपुरा पुलिस चौकी इलाके में यह घटना 3 नवम्बर की हैं। घटना के बाद पीडित पक्ष की ओर से पुलिस को कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई गई थी। घटना सामने आने के बाद तुरंत पीडित से मांडलगढ थानाधिकारी मनोज जाट ने हनुमान नगर थाना क्षेत्र में पीडित से सम्पर्क कर रिपोर्ट ली और चार आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोपियों की तलाश कर जल्द गिरफ्तार किया जाएगा। पीडित युवक के भाई खोहरा कलां थाना हनुमान नगर निवासी राकेश मीणा ने बताया कि श्यामपुरा के जालम की झोंपडियां के रहने वाले बदमाशों ने उसके भाई को बिजोलिया से ट्रेक्टर लेकर आते समय रास्ता रोक कर पकड़ लिया और रस्सी से हाथ बाँध लाठी डंडों से मारपीट की। रात भर उसके भाई राहुल मीणा को अर्द्ध नग्न कर प्राइवेट पार्ट में मिर्ची डाल जंगल मे ले जाकर बर्बरता से मारपीट की।

मांडलगढ़ पुलिस थाने में पीड़ित युवक ने रिपोर्ट दर्ज कराई।

- पुलिस ने पीड़ित की रिपोर्ट पर चार आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया
- पीड़ित युवक के भाई को मौके पर बुलाकर युवक को छोड़ने के बदले ढाई लाख रुपए मांगे

बदमाशों ने पीडित युवक के भाई राकेश कुमार को फोन कर मौक़े पर बुलाया और पीडित युवक को छोड़ने के बदले ढाई लाख रुपए की माँग की गई। खोहरा कलां से आए पीडित के भाई और परिजनों ने बदमाशों से उक्त राशि देने में असमर्थता जताई। काफी जद्दोजहद के बाद पीड़ित के भाई से बदमाशों ने 70 हजार रुपए वसूल कर स्टाम्प पेपर पर कोई कानूनी कार्रवाई नहीं करने की बात लिखवाई।

इसके बाद दबंगों ने पीड़ित युवक को देवी देवता की सोगन्ध खिलाई ओर रस्सी से बंधे हाथ खोल कर छोड़ा व श्यामपुरा इलाके में दोबारा नहीं आने की धमकी दी।

मामले में पीडित युवक राहुल मीणा के पिता प्यारा राम मीणा निवासी खोहरा कला थाना हनुमान नगर ने मांडलगढ थाने में रमेश चंद मीणा नयागांव (बिजौलियां), दुर्गेश मीणा, बीरालाल मीणा व रमेश मीणा जालम की झोंपड़ीया (मांडलगढ) के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। मांडलगढ थानाधिकारी मनोज सिंह जाट ने बताया कि घटना की सूचना किसी ने थाने पर नहीं दी थी। जानकारी मिलते ही सोमवार रात्रि में ही पीडित की रिपोर्ट दर्ज कर युवक का मेडिकल चेकअप करा कर बयान दर्ज किए है और आरोपियों की तलाश में पुलिस टीम जुटी है।

# आठ दिन में फिर चोरी होने पर व्यापारियों ने जाम लगा प्रदर्शन किया

## चोरों ने फिर दो मोबाइल दुकानों को अपना निशाना बनाया

चोरी की घटना के बाद व्यापारियों ने प्रदर्शन किया।

**करौली,** (निसं)। जिले के सपोटरा उपखंड मुख्यालय पर 8 दिन पूर्व पुराना बस स्टैंड के सामने एक मोबाइल शॉप में हुई चोरी का पुलिस अभी तक खुलासा नही कर पाई है कि गत रात्रि को चोरों ने फिर दो मोबाइल दुकानों को अपना निशाना बनाकर करीब दो लाख रुपए के मोबाइल व एसेसीरीज ले गए। जिससे आक्रोशित व्यापारियों ने बाजार बंद रखकर मीणा धर्मशाला के सामने जाम लगा प्रदर्शन किया। पुलिस उपअधीक्षक कैलादेवी गिर्राज प्रसाद मीणा की समझाईश व आश्वासन के बाद आधा घंटे बाद जाम व बाजार खुलवाया।

पीड़ित विक्रम पुत्र बरखंडी मीणा निवासी गोरेहार (कालागुडा) ने बताया कि पूर्व एसबीआई शाखा के पास उसकी रेयांश मोबाइल पाइंट की दुकान है। सोमवार की शाम को 7 बजे वह अपनी दुकान बंद कर अपने गांव चला गया। सुबह 5 बजे उसके दुकान मालिक ने दुकान की शटर टूटी होने की जानकारी दी। जिस पर वह दुकान पहुंचा तो दुकान में रखे 5 नोकिया की बैट्री,10 नेक बैंड लीड, 7 पावर बैंक, 20-25 डाटा केबिल के साथ 12 एंड्रोइड फोन नदारद मिले। जिससे उसे करीब 1.60 लाख रुपए का नुकसान हो गया। इसी प्रकार ईशु पुत्र राजेन्द्र सिंहल निवासी सपोटरा ने बताया कि पुरानी एसबीआई शाखा के नीचे उसका एमआई स्टोर, सिंहल मोबाइल सेंटर है। सोमवार रात्रि 8 बजे वह अपनी दुकान बंद कर घर चला गया। सुबह आस पड़ोस के लोगों ने शटर टूटे होने की जानकारी दी। जिस पर दुकान में रखा एक टेबलेट, 5 ब्लूटूथ नेकबैंड व 5 पावर बैंकों चोर ले गये ।

कस्बे में चोरियों की वारदातों में इजाफा होने से आहत दुकानदारों व भाजपाईयों का हूजूम सपोटरा मोड़ पर पहुंचा। जहां मीणा धर्मशाला के पास प्रधान प्रतिनिधि रामसिंह बालौती, किराना संघ अध्यक्ष मुनीराज मीणा, शहर मंडल अध्यक्ष सीताराम शर्मा पूर्व पंचायत समिति सदस्य भरतलाल धूलवास, सुनील राजपुरोहित, भाजयुमो अध्यक्ष प्रताप पाकड़ के नेतृत्व में बीच सड़क पर धरने पर बैठ गए तथा पुलिस प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। घटना की सूचना मिलने उपपुलिस अधीक्षक कैलादेवी गिर्राज प्रसाद मीणा, कुडगांव थानाधिकारी जगदीश भारद्वाज व कैलादेवी थाना प्रभारी निरंजन मीणा पुलिस दल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे तथा व्यापारियों से तीन दिन में चोरियों का खुलासा करने के आश्वासन पर दोपहर 1 बजे जाम व बाजार खोला गया।

## सादुलपुर में सुबह छाया कोहरा

**सादुलपुर,** (निसं)। राजगढ क्षेत्र में सोमवार को मौसम में बदलाव नजर आया है और सुबह-सुबह हल्की बारिश भी हुई है। इस कारण वातावरण में कुछ ठंडक भी बढ़ी है तथा सुबह-सुबह कोहरा भी छाया रहा। इससे पूर्व रात्रि को बिजली कड़कड़ाती रही बादल गरज रहे। ढंढाल रोड पर बावरियों के एक कच्चे मकान पर बिजली भी गिर गई। वहीं सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार राकेश बावरी मलवास के झोपड़े व कच्चे मकानात पर आकाशीय बिजली गिरी है। गनीमत की बात यह रही कि किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। हालांकि झोपड़ा व अन्य सामग्री जलकर राख हो गई।

# अधिकारियों ने खनन क्षेत्र का दौरा किया

**भरतपुर,** (निस)। साधु सन्तों के द्वारा दिये गये ज्ञापन पर पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों ने साधु सन्तों के साथ गांव नांगल, भुआपुर गढ ी में बंद लीजों व गांव डाबक में स्थित क्रशर प्लांटो का दौरा किया। इससे पहले सोमवार को मान मन्दिर गहवर वन बरसाना की ओर से संचालित ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा कस्बा डीग पहुंची। उसके बाद यात्रा के संचालनकर्ताओं राधाकांत शास्त्री, नारायण दास, सुनील कुमार एवं साधु सन्तों ने डीग में प्रशासनिक व पुलिस अधिकारीयों को गांव डाबक में संचालित क्रेशर प्लांटो बन्द कराने के सम्बन्ध में ज्ञापन दिया था।

ज्ञापन की पालना में मंगलवार को पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने साधु सन्तों के साथ गांव नांगल, भुआपुर गढ ी में बंद लीजों व गांव डाबक में स्थित क्रशर प्लांटो का दौरा किया। एनकांसा माईनिग क्षेत्र जो वर्तमान में वन क्षेत्र घोषित है। वन विभाग की ओर से पूर्व में संचालित लीज क्षेत्र में जाने वाले रास्तों में चारों तरफ खाईया खोदकर तारबंदी की गई। उसके बाद गांव डाबक में स्थित क्रशर प्लांटो का निरीक्षण किया। जिनमें कोई भी अवैध क्रशर संचालित होता नही पाया गया। अधिकतर प्लांटो का विद्युत कनेक्शन कटा हुआ मिला। प्लांट पर ग्रीट आदि बनाने का कार्य बंद मिला। कुछ क्रशर प्लांटो के सम्बंध में साधु महात्माओं ने अवगत कराया कि वे चोरी छिपे रात्रि के समय चलते है। जिसका मौके पर ही पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों ने समाधान करवाने के लिए महात्माओं को आश्वस्त किया।

मौके से ही पोल्यूशन कन्ट्रोल बोर्ड के एसई विवेक गोयल तथा खनिज विभाग के अधिकारियों को इस बाबत् जांच कर कार्यवाही करने के लिए निर्देशित किया । उसके बाद पुलिस थाना कैथवाडा पर पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने साधु महात्माओं के साथ बैठक की, बैठक में हेमन्त कुमार एसडीएम डीग, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डीग रघुवीरसिंह कविया, वृताधिकारी डीग आशिष कुमार, थानाधिकारी कैथवाडा रामनरेश मीणा एवं राधाकांत शास्त्री, नारायण दास, सुनील कुमार, पसोपा मन्दिर के महन्त भूरा बाबा, आदी बद्री मन्दिर के महन्त शिवराम दास बाबा उपस्थित रहे। साधु सन्तों ने अवैध खनन एंव ओवरलोड वाहनों के सम्बंध में मीटींग में बताया था कि अवैध खनन व ओवरलोड के विरूद्ध कार्यवाही के लिए जाप्ता तैनात है। तथा पूरे क्षेत्र में लगातार पुलिस की गश्त जारी है। खनन एवं परिवहन विभाग की सहायतार्थ भरतपुर पुलिस कटिबद्ध है।

## लूट के आरोपियों को जेल भेजा

**भीलवाड़ा,** (निसं)। शहर के दो थाना क्षेत्रों में एक ही रात में आधा दर्जन लूट की वारदातों को अंजाम देने वाली गैंग के चारों आरोपियों को प्रतापनगर थाना पुलिस ने न्यायालय में पेश किया जहां से उन्हें एक दिन की पुलिस अभिरक्षा में भेजा गया जबकि पांचवां आरोपी अब भी पुलिस गिरफ्त से दूर है। जानकारी के अनुसार एक ही रात में लूट और मारपीट की 6 वारदातों को अंजाम देने वाले चार आरोपियों को भीलवाडा की चार थाना पुलिस ने संयुक्त प्रयास से सोमवार को गिरफ्तार किया था।

प्रतापनगर थाना पुलिस ने मिर्ची मण्डी में नीबू मिर्च बेचने वाले चौथमल माली के साथ मारपीट करने के आरोप में गिरफ्तार किये गये चित्तौड में टेंट हाउस का काम करने वाले सुनील धोबी, पुताई और पेंटिंग करने वाले गौरव कोली, आरसीसी डालने वाले राकेश बलाई और बारहवीं पास कर चुके कॉलेज के छात्र मोहित खटीक को न्यायालय में पेश किया।

चारों आरोपियों को न्यायालय ने प्रतापनगर थाना पुलिस को एक दिन के रिमाण्ड पर सौंपा है। चौथमल माली से इन लोगों ने 800 रुपए की नकदी लूटी इनमें से 400 रुपए खर्च कर दिये जबकि बाकी 400 रुपए फरार आरोपी गोपाल लेकर चला गया। चौथमल का मोबाईल भी लूटा गया जिसे फैंक देने की बात सामने आई। पुलिस उसे बरामद करने का प्रयास कर रही है। रावण गैंग के नाम से अपराध करने वाले इन लोगों के और साथी हो सकते है इस बारे में भी पुलिस पूछताछ कर रही है।

# पुष्कर सरोवर में तीन युवक डूबे, एक जने की मौत

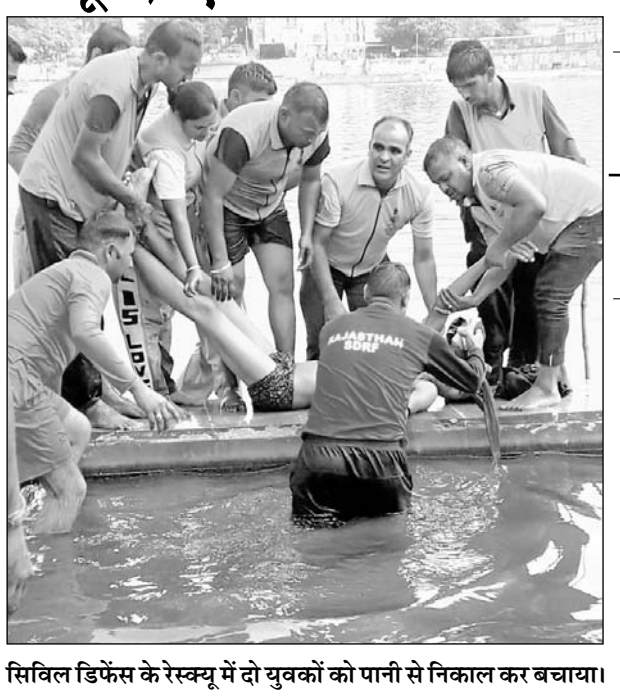

सिविल डिफेंस के रेस्क्यू में दो युवकों को पानी से निकाल कर बचाया।

**पुष्कर,** (निसं)। पुष्कर सरोवर में सोमवार को तीन युवक डूब गए। इस दौरान सिविल डिफेंस टीम ने तीनों युवकों का रेस्क्यू किया लेकिन तीनों युवकों में से दो युवक ही बच पाए और एक की मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार मृतक 18 वर्षीय देवराज पुत्र रामलाल निवासी नागेलाव पीसांगन अपने साथियों के साथ पुष्कर सरोवर में नहाने आया था। मृतक व उसके तीनो साथी गहरे पानी मे चले गए और डूबने लगे। रविकुमार के निर्देश में घाटों पर तैनात सिविल डिफेंस के सदस्यों ने तुरंत पानी में कूद दो युवकों को बचा लिया लेकिन देवराज गहरे पानी मे जाने से मौके पर ही मौत हो गई। सिविल डिफेंस टीम ने सीपीआर देकर बचाने की कोशिश भी की लेकिन उसके साथियों को बचाने में समय लगने से वह गहरे पानी मे चला गया। डूबने के पांच मिनट के भीतर उसको भी निकाल लिया लेकिन बचाया नहीं जा सका।

# बीमा क्लेम व मुआवजे की मांग को लेकर किसानों ने रैली निकाली

**छबड़ा,** (निसं)। किसानों ने बीमा क्लेम व अतिवृष्टि से खराब हुई फसलों का मुआवज़ा दिलवाने सहित अन्य मांगों को लेकर मंगलवार को कृषि उपज मंडी से खेल मैदान तक वाहन रैली निकाली व खेल मैदान में आयोजित सभा को किसान नेताओं ने संबोधित किया। तत्पश्चात् किसानों ने उपखंड कार्यालय पर पहुंचकर एसडीएम को ज्ञापन सौपा। किसानों की समस्याओं को लेकर किसान नेता सरपंच भगवान स्वरूप नागर (धर्मा धाकड़) ने भी भूख हड़ताल पर बैठने का एलान कर दिया।

- ट्रैक्टर, जेसीबी, कार व बाईक लेकर पहुंचे किसान

किसानों को रात के स्थान पर दिन में बिजली देने व कर्ज में डूबे किसानों के ट्रांसफर नही उठाने सहित अन्य मांगों को लेकर वाहन रैली निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लिया। रैली में किसान ट्रैक्टर, जेसीबी, कार व मोटरसाइकिल पर सवार होकर पहुंचे तथा जमकर नारेबाज़ी कर विरोध जताया। इसके बाद किसान नेताओ ने किसानों को संबोधित करते हुए कांग्रेस व भाजपा को जमकर आड़े हाथों लिया। किसान पैदल रैली के रूप में एसडीएम कार्यालय पहुंचे व ज्ञापन सौंपा।

छबड़ा कस्बे के खेल मैदान में भीड़ को किसान नेताओं ने सम्बोधित किया।

# 22 साल से बंद पड़े सिनेमा हॉल में लगी भीषण आग

## फर्नीचर समेत सामान जलकर राख, फायर ब्रिगेड की गाड़ियों ने दो घंटे मशक्कत की तब आग पर काबू पाया

**बीकानेर,** (कासं)। शहर के पुराने सिनेमा हॉल में बीती रात अचानक आग लग गई। आग इतनी जबर्दस्त थी कि हॉल के अंदर रखे फर्नीचर के साथ ही ऊपर लगा टीनशैड भी जलकर गिर गया। पिछले 22 साल से बंद इस सिनेमा हॉल के अंदर कबाड़ भरा पड़ा था, जिसमें आग लग गई और पूरे हॉल में फैल गई। इस हादसे में कोई घायल नहीं हुआ।

दाऊजी रोड स्थित प्रकाश चित्र सिनेमा में रात करीब नौ बजे लोगों को आग का पता चला, तब तक आग पूरे परवान पर पहुंच चुकी थी। आसपास के लोगों ने हॉल के पास बनी दीवारों पर पहुंचकर आग बुझाने का प्रयास भी किया लेकिन अंदर रखे कबाड़ में आग बहुत उग्र रूप ले चुकी थी। कोतवाली पुलिस ने सूचना मिलने के साथ ही दमकल मौके पर बुलाई। मुरलीधर व्यास नगर और बीछवाल से दमकल गाड़ियों ने मौके पर पहुंचकर आग पर करीब दो घंटे की मशक्कत के बाद काबू पाया गया। देर रात तक आग पूरी तरह से बुझ चुकी थी। कहीं-कहीं धुआं जरूर उठ रहा है लेकिन अब आग की लपटें खत्म हो गई है।

- दाऊजी रोड स्थित प्रकाश चित्र सिनेमा में लगी आग

इस हादसे में कोई घायल नहीं हुआ। दरअसल हॉल के अंदर कोई रहता ही नहीं है। हॉल भी पिछले कई वर्षों से बंद पड़ा है। ऐसे में इसका उपयोग ही कबाड़ के रूप में हो रहा था। हॉल के एक तरफ तोड़फोड़ करके लोग अंदर जा रहे थे। कई बार यहां से सामान चोरी का भी पता चला। विवाद के चलते इस सिनेमा हॉल को कोई संभालने के लिए भी नहीं आता।

आग लगने के बाद दाऊजी मंदिर मुख्य मार्ग पर भारी भीड़ हो गई। देर रात तक आग बुझाने का प्रयास चलता रहा। प्रकाश चित्र सिनेमा के अंदर रिसेप्शन का फर्नीचर था। इसके अलावा कैन्टीन में भी कुछ फर्नीचर लगा हुआ था। हॉल के अंदर डेढ़ सौ से ज्यादा सीट्स थी। जिसमें फोम और लकड़ी के साथ जूट भी लगा हुआ था। इसी कारण आग बहुत तेज गति से फैलती चली गई। हॉल में बनी सिनेमा की दीवार पूरी तरह जल चुकी है।

बीकानेर के चुनिंदा सिनेमा हॉल में एक प्रकाश चित्र को करीब 22-23 साल पहले तोड़कर नया बनाया गया था। इसके बाद से ही विवाद के चलते ये हॉल बंद हो गया। इसके बाद कभी वापस खुला ही नहीं। अब मोबाइल के युग में सिनेमा हॉल वैसे ही संकट में है। ऐसे में प्रकाश चित्र वापस शुरू ही नहीं हुआ। आग लगने की सूचना मिलते ही एडिशनल एसपी अमित कुमार, निगम आयुक्त गोपालराम बिरदा, सीओ सिटी दीपचंद, थानाअधिकारी नवनीत सहित प्रशासनिक अधिकारियों घटनास्थल पर पहुंचे। मौके पर दमकल पहुंचाने के लिए भी अधिकारियों को मशक्कत करनी पड़ी।

## रेलवे स्टेशनों पर लिफ्ट की मंजूरी मिली

**जोधपुर,** (कासं)। रेलवे ने यात्री सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल के पांच स्टेशनों पर दस लिफ्ट लगाने का फैसला किया है। रेलवे बोर्ड ने इसकी मंजूरी दे दी है। मंडल रेल प्रबंधक गीतिका पांडेय ने यह जानकारी देते हुए बताया कि यात्री सुविधाओं में वृद्धि करते हुए रेलवे बोर्ड ने जोधपुर मंडल के डेगाना, डीडवाना, मेड़ता रोड, रेण और सीमांत बाड़मेर रेलवे स्टेशनों पर दो-दो लिफ्ट लगाने की स्वीकृति जारी की है।

उन्होंने बताया कि बाड़मेर रेलवे स्टेशन पर लिफ्ट के लिए केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री कैलाश चौधरी, मेड़ता, रेण व डेगाना के लिए सांसद सुश्री दिया कुमारी व डीडवाना के लिए सांसद हनुमान बेनीवाल की पुरजोर मांग थी और इस के लिए वे प्रयासरत थे। इस स्वीकृति करवाने पर डीआरएम ने मंत्री और सांसदों का आभार जताया है। उन्होंने बताया कि इन स्टेशनों पर लिफ्ट लगने से दिव्यांग और बुजुर्ग यात्रियों को बड़ी सुविधा मिलेगी। पांडेय ने बताया कि इसमें सबसे महत्वपूर्ण रेण रेलवे स्टेशन है , जहां बुटाटी धाम जाने के लिए देशभर से लकवा रोगी पहुंचते हैं तथा उन्हें एक से दूसरे प्लेटफॉर्म तक जाने में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। अब वहां लिफ्ट लग जाने से लकवा रोगियों और उनके परिजनों भी राहत मिल सकेंगी।

# एक और खिलाड़ी ने उपचार के दौरान दम तोड़ा

## छात्रों के परिजन ने स्कूल की मान्यता रद्द करने की मांग की

**अजमेर,** (कासं)। ब्यावर रोड स्थित बकरा मंडी के समीप 6 नवंबर को खिलाड़ियों से भरी कार पलटने के मामले में मंगलवार को जवाहरलाल नेहरू अस्पताल में भर्ती गंभीर रूप घायल एक ओर खिलाड़ी की मौत हो गई। घटना के बाद मृतक छात्रों के परिजन समेत घायल छात्रों के परिजनों ने विरोध प्रदर्शन किया और दोषियों के खिलाफ कार्यवाही की मांग की।

- कार पटलने के मामले में अब तक दो छात्रों की मौत

धरने पर बैठे परिजनों से विधायक देवनानी, डिप्टी मेयर जैन व पूर्व विधायक जयपाल ने बातचीत की।

छात्र की मौत के बाद धरने पर बैठे पूर्व मंत्री व विधायक डॉ वासुदेव देवनानी, डिप्टी मेयर नीरज जैन ने कहा कि स्कूल प्रशासन हो या फिर स्कूल मालिक व स्कूल प्रिंसिपल जो भी इस हादसे में दोषी पाये जाते है उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की जाये। मेघवंशी समाज के जिलाध्यक्ष रमेश मेघवाल ने कहा कि इस मामले में स्कूल प्रशासन की लापरवाही थी कि उन्होंने खिलाडियों को मसूदा ले जाने के लिये निजी वाहन लिया ओर क्षमता से अधिक छात्रों को बैठाया ओर स्कूल का पीटीआई उक्त वाहन को चला रहा था।

मेघवाल ने कहा कि मृतक छात्र अनुज को आर्थिक सहायता दिलवाई जाये ओर दोषियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही जाये, अन्यथा मेघवंश समाज आंदोलन करने पर मजबूर होगा। मामले में अस्पताल में विरोध प्रदर्शन को देखते हुए तहसीलदार प्रीति चौहान और कार्यवाहक एसडीएम अमिता भी मौके पर पहुंची, लेकिन आक्रोशित लोगों ने उनसे बात करने से मना कर दिया और मौके पर जिला कलेक्टर को बुलाने की बात कही।

उन्होंने कहा कि जब तक कलेक्टर नहीं आते तब तक विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा। इसके बाद अतिरिक्त जिला कलेक्टर भावना गर्ग पहुंची और लोगों ने स्कूल के खिलाफ कार्रवाई की मांग और सरकार से उचित मुआवजा देने की मांग की। एडीएम सिटी गर्ग ने कलेक्टर द्वारा पुलिस व प्रशासन की स्तर पर अलग अलग कार्रवाई करने का आश्वासन के बाद मामला शांत हुआ।

# अनाथ बालिकाओं का सारथी बनना सबसे बड़ा परोपकारी कार्य: मुरारी लाल मीणा

**दौसा,** (निसं)। कृषि विपणन राज्यमंत्री मुरारी लाल मीणा ने कहा कि शिक्षक सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत अनाथ बालिकाओं के सारथी बने हैं इससे बड़ा परोपकारी कार्य कोई और नहीं हो सकता। ऐसे पुनीत कार्य के लिए अन्य शिक्षक संगठनों को भी पहल करनी चाहिये।

कृषि विपणन राज्यमंत्री मुरारीलाल मीणा मंगलवार को आरपीएससी शिक्षक फोरम के तत्वावधान में आयोजित अनाथ बालिका शिक्षक संबंलन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आज चन्द्रग्रहण है, शास्त्रों में ग्रहण के दौरान दानपुण्य का विशेष महत्व दिया गया है।

आरपीएससी शिक्षक फोरम ने आज के दिन अनाथ बालिकाओं को सहायता देने के लिए चुना है जो एक पुण्य कार्य है। उन्होंने कहा कि जिले में दर्जनों शिक्षक संगठन हैं, सभी शिक्षक संगठनों को आरपीएससी शिक्षक फोरम से प्रेरणा लेते हुये ऐसे पुनीत कार्य करने चाहिये, ताकि अनाथ बालक-बालिकाओं को प्रोत्साहित किया जा सके।

राज्यमंत्री मुरारीलाल मीणा ने अनाथ बालिका शिक्षक संबंलन कार्यक्रम को संबोधित किया।

- आरपीएससी शिक्षक फोरम ने 43 अनाथ बालिकाओं को एक लाख इक्कीस हजार रुपये भेंट किये

बालिका शिक्षा के महत्व को इंगित करते हुए मंत्री मीणा ने कहा कि जहां सक्षम परिवार ही बालिकाओं को पढाने में संकोच करता है ऐसी स्थिति में इन अनाथ बालिकाओं का पढ़ पाना कैसे संभव होता। लेकिन आरपीएससी शिक्षक फोरम ने एक प्रकार से इन्हें गोद लेकर इनकी निरंतर शिक्षा में सहायक बने हैं इसके लिए इन्हें बहुत-बहुत साधुवाद।

प्रदेशाध्यक्ष राजेंद्र राणा ने कहा कि शिक्षक फोरम द्वारा किया जा रहा यह कार्य अन्य संगठनों लोगों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है, कर्मचारी हितों के लिए हम सदैव संघर्षरत रहते हैं लेकिन इसके साथ साथ सामाजिक सरोकारों में भी भूमिका रहे निभा रहे हैं यह अतुलनीय है। मुझे इस कार्यक्रम ने काफी प्रभावित किया है मैं कोशिश करूंगा कि महासंघ भी परोपकारी कार्यों में भूमिका अदा करें। दौसा पंचायत समिति प्रधान प्रहलाद मीणा ने कहा कि बालिका अपने आप को अकेला महसूस नहीं करें हम सब आपके साथ हैं, जब भी मदद की आवश्यकता हो हम सब मदद के लिए तैयार हैं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि शिक्षक संगठन का उद्देश्य शिक्षक समस्याओं को ही उठाना नहीं होना चाहिए फोरम की तर्ज पर सामाजिक सरोकारों में भी अपनी भूमिका अदा करनी चाहिए यदि प्रत्येक संगठन इस प्रकार अलग-अलग क्षेत्रों में सामाजिक सरोकार के कार्य करें तो लोग इससे और ज्यादा प्रेरित होंगे। समारोह में कर्मचारी महासंघ के जिला अध्यक्ष भगवान वर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी कृष्णा शर्मा, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी राजाराम मीणा, आरपीएससी शिक्षक फोरम के अध्यक्ष प्रहलाद फाटक्या, रुकमणी गुप्ता, भोमाराम वर्मा, कल्याण सहाय वर्मा, नरेंद्र जैमन, नहनूराम मीणा, पदम कसाना, घनश्याम चोबदार सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे।

फोरम के जिला प्रवक्ता अभय सक्सैना ने बताया कि समारोह में फोरम द्वारा 43 अनाथ बालिकाओं को एक लाख इक्कीस हजार आठ सौ रुपयें की नगद राशि के चैक एवं शिक्षण सामग्री वितरित की गई।

## इंदिरा गांधी स्टेडियम का निरीक्षण किया

**अलवर,** (निसं)। जिला कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने प्रात: इंदिरा गांधी स्टेडियम में नगर विकास न्यास द्वारा कराए जा रहे विकास कार्यों तथा स्टेडियम की खेल सुविधाओं का निरीक्षण किया।

जिला कलेक्टर ने इंदिरा गांधी स्टेडियम का अवलोकन कर व्यवस्थाओं का जायजा लेकर यूआईटी के कार्यवाहक सचिव को निर्देशित किया कि स्टेडियम में स्टैण्ड्स को कवर करने हेतु शेड लगाने का तकमीना तैयार करावे। यूआईटी, सीएसआर तथा जनसहयोग से शेड लगवाए। इससे स्टेडियम में दर्शकों को काफी सहूलियत होगी। उन्होंने निर्देश दिये कि स्टेडियम के प्रवेश द्वारों का सौन्दर्यकरण का कार्य शीघ्र करावे। उन्होंने स्टेडियम के मंच का अवलोकन कर कहा कि मंच के विस्तार एवं चौडाईकरण का कार्य पूर्ण होने से अब यहां होने आयोजनों एवं कार्यक्रमों में मंच से संबंधित असुविधा नहीं होगी। उन्होंने जिला खेल अधिकारी व कोचगणों को निर्देश दिये कि स्टेडियम की सुविधाओं में विस्तार के साथ-साथ इन्हें और बेहतर करने का प्रयास किया जाए जिससे खिलाडियों को इनका लाभ मिल सके तथा स्टेडियम की साफ-सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान देवे। इस दौरान यूआईटी के कार्यवाहक सचिवयोगेश डागुर, अधिशासी अभियन्ता कुमार संभव अवस्थी, साई के सहायक निदेशक शिव कुमार सेन, कोच सबल प्रताप सिंह, कोच श्रीमती अंजना शर्मा सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

## सार-समाचार

### गुरु नानक जयंती पर लंगर लगाये

**खैरथल,** (निसं)। गुरु नानक देव जी की जयंती पर मंगलवार को गुरद्वारों व पंजाबी समाज की ओर से लंगर आयोजित किए गए। मंगली कॉलोनी में गुरुद्वारा श्री गुरु कलगीधर साहिब में ग्रंथी गुरमीत सिंह के द्वारा पाठ साहिब का भोग लगाने के बाद शबद कीर्तन कर संगत को निहाल किया। इस अवसर पर आयोजित विशाल लंगर में हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की। राजस्थान किसान आयोग के उपाध्यक्ष एवं क्षेत्रीय विधायक दीपचंद खैरिया व वार्ड पार्षद महेंद्र पाल सिंह टिंकू व गुरदेव सिंह के साथ गुरुद्वारा में आकर शीश नवाकर देश दुनिया में सुख-शांति और समृद्धि की मन्नत मांगी उन्होंने लंगर में प्रसादी ग्रहण की। इससे पहले पंज प्यारों की अगुवाई में प्रभात फेरी निकाली गई जो नगर कीर्तन के साथ गुरुद्वारा पहुंची।मार्ग में जगह-जगह पर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी के मेंबर सरदार प्रीतमसिंह, महेंद्र सिंह, दौलत सिंह, पूर्व पार्षद बलवीर सिंह, रघुवीर सिंह, अरविंद सिंह, गुरचरण सिंह, हज़ारा सिंह,जगदीप सिंह बलदेव सिंह, अंग्रेज़ सिंह, कंवलजीत सिंह,जगतार सिंह आदि ने व्यवस्थाओं को संचालित किया।

### खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित

**श्रीमाधोपुर,** (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीमाधोपुर में 66 वीं जिला स्तरीय नेट बॉल खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित हुई। संयोजक प्रधानाचार्य राजेश कुमार अंकुर ने बताया कि प्रतियोगिता में कुल 12 टीमों ने भाग लिया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय करडका 19 वर्षीय छात्र वर्ग में विजेता रही, उपविजेता अल्बर्ट आइंस्टीन.उ.मा.वि जोरावर नगर रही तथा 17 वर्षीय छात्र वर्ग में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीमाधोपुर विजेता तथा राजस्थान पब्लिक उ.मा.विध्यालय जालपाली उपविजेता रही। इसी प्रकार छात्रा 17 वर्षीय वर्ग में आदर्श बालिका माध्यमिक विद्यालय लोसल विजेता तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंगरासी उपविजेता रही है, 19 वर्षीय छात्रा वर्ग में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीमाधोपुर विजेता तथा राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीमाधोपुर उपविजेता रही, नेट बॉल को खेल प्रतियोगिता में पहली बार शामिल किया गया है जिसके कारण काफी कम संख्या में टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का समापन कल होगा।

### प्रकाश पर्व उत्साह के साथ मनाया

**राजगढ़,** (निसं)। गुरुद्वारा सिंह सभा की ओर से कस्बे में मंगलवार को गुरु नानक देव जी का प्रकाश पर्व उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सिंह सभा गुरुद्वारा में भव्य सजावट एवं रोशनी आयोजन की प्रमुखता रही। गुरुद्वारा सिंह सभा के प्रवक्ता अमरजीत सिंह ने बताया कि कीर्तन दरबार के साथ दोपहर को गुरु का अटूट लंगर आयोजित किया गया। जिसमें समाज के लोगों सहित गणमान्य जाने पर राजनेताओं ने शिरकत की। इसके पश्चात मंगलवार सायंकल कीर्तन दरबार एवं बच्चों का कवि दरबार सजाया गया। इस अवसर पर मनमीत सिंह एवं जसमीत सिंह की ओर से शब्द गायन किया गया। इस अवसर पर सिंह सभा गुरुद्वारा सहित कस्बे में प्रकाश पर्व की आस्था का आलम रहा।

### प्रतिभा सम्मान समारोह 13 को

**दौसा,** (निसं)। विप्र फाउण्डेशन के तत्वावधान में 13 नवंबर को स्थानीय गुप्तनाथ मैरिज लॉन में जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया जावेगा, जिसमें जिले भर की 500 प्रतिभाओं को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया जावेगा। जिला प्रवक्ता लोकेश शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निंबार्काचार्य पीठ के जगतगुरु राधा स्वामी महाराज होंगे तथा विशिष्ट अतिथि विप्र फाउंडेशन के राष्ट्रक्रीय संयोजक सुशील ओझा सांसद रामचरण बौहरा, काबीना मंत्री महेश जोशी, उमाशंकर शर्मा, विप्र बोर्ड अध्यक्ष महेश शर्मा, पुष्पेंद्र भारद्वाज, अर्चना शर्मा होंगे।

### कंचन योगासन प्रतियोगिता में प्रथम

**खैरथल,** (निसं)। मत्स्य विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों की हुई योगासन प्रतियोगिता में खैरथल की कंचन सैनी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर अवार्ड जीता। कोच हरिओम सैनी ने बताया कि बानसूर के राजकीय महाविद्यालय में आयोजित हुई योगासन प्रतियोगिता में खैरथल के महर्षि परशुराम महिला महाविद्यालय की छात्रा कंचन सैनी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर अवार्ड जीता। अब वह मत्स्य विश्वविद्यालय की ओर भुवनेश्वर उड़ीसा में होने वाली राष्ट्रीय योगासन प्रतियोगिता में भाग लेगी।

### रक्तदान शिविर आज

**दौसा,** (निसं)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण दौसा के तत्वावधान में 9 नवंबर को प्रात: 9 बजे शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सोमनाथ चौराहे पर रक्तदान शिविर आयोजित किया जावेगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव एवं अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश प्रेमलता सैनी ने आमजन से रक्तदान शिविर में सहयोग करने की अपील की है।

# कविता किसी बात को कहने का श्रेष्ठतम रूप है: सोनी

**अलवर,** (निसं)। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर तथा अलवर मेवात शिक्षा एवं विकास संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 'कविता में समय' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी व काव्य पाठ-विमर्श का शुभारम्भ मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने किया।

- 'कविता में समय' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

जिला कलेक्टर ने गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि साहित्यिक सम्मेलनों के आयोजन से साहित्य के प्रति एक सकारात्मक वातावरण बनता है। उन्होंने कहा कि कविता किसी बात को कहने का श्रेष्ठतम रूप है और कविता में समय का बहुत महत्व है। कविता समय के हिसाब से बातें समाहित करती हुई समाज को संदेश देती है। उन्होंने वर्चुअल युग में युवा पीढी को साहित्य से जोडने पर बल दिया।

राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. सहारण ने कहा कि राजस्थान में साहित्यिक वातावरण तैयार करने में राजस्थान साहित्य अकादमी साहित्यिक संस्थाओं को सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर है। उन्होंने कहा कि अकादमी की ओर से राज्य के साथ देश के विभिन्न विषयों तथा इससे इत्रा विदेशों में हिंदी साहित्य को बढावा देने के लिए आयोजन कराए जाएंगे। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समय की अपनी धार होती है और उसे कविता समाहित करती है। उन्होंने साहित्य सृजन हेतु युवाओं को आगे आने के लिए आव्हान किया।

विशिष्ठ अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. नन्दकिशोर आचार्य ने कविता के सृजन, समय और कविता के बीच संबंध पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कोई भी चुनौती सृजनात्मकता के लिए एक अवसर होती है।

विशिष्ठ अतिथि कवि एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर संजीव कौशल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कविता की मूल आत्मा प्रतिरोध है। कविता साहस, हौंसला व हिम्मत का माध्यम है। कविता क्षणिक प्रतिरोध को अभिव्यक्त कर उसे चिरस्थाई बनाती है। उन्होंने समसामयिक विषय, महिला सशक्तिकरण, जाति व्यवस्था, शिक्षा के स्तर एवं भाषा की गिरावट पर विस्तार से विचार व्यक्त किए।

# मोदी सरकार विकास, गहलोत सरकार कुर्सी चाहती है: राज्यवर्धन राठौड़

**पावटा,** (निसं)। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और जयपुर ग्रामीण सांसद कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ मंगलवार को विधानसभा क्षेत्र शाहपुरा और विराटनगर के दौरे पर रहे।

इस दौरान बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों और भाजपा कार्यकर्ताओं ने सांसद कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ का जोरदार स्वागत किया। इस दौरान कर्नल राज्यवर्धन ने ग्राम पंचायत टोड़ी, सुराणा, छारसा, खोरालाडखानी और आमलोदा में जनता एवं भाजपा कार्यकर्ताओं से संवाद किया और सांसद कोष से विकास कार्यों के लिए 38 लाख रूपये देने की घोषणा की। साथ ही ग्राम पंचायत सुराणा में सार्वजनिक चबूतरा, ग्राम पंचायत टोडी और छारसा में सामुदायिक भवन का उद्घाटन किया और ग्राम पंचायत आमलोदा में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के लिए जमीन और बेड देने वाले भामाशाहों का सम्मान किया।

जयपुर ग्रामीण सांसद कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ विधानसभा क्षेत्र शाहपुरा और विराटनगर के दौरे पर रहे।

- कर्नल राज्यवर्धन ने शाहपुरा और विराटनगर की ग्राम पंचायतों का दौरा कर की विकास कार्यों की घोषणा

इस दौरान कर्नल राज्यवर्धन ने मोदी सरकार की जमकर तारीफ की और प्रदेश की गहलोत सरकार को कानून व्यवस्था, बिजली की बढ़ी दरें, महिला-दलित अत्याचार, पेपल लीक, खेल मैदान, जल जीवन मिशन में प्रदेश सरकार के निकम्मेपन और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर आडे हाथ लेते हुए कहा कि गहलोत सरकार ने ग्रामीण ओलंपिक पर करोड़ो रूपये खर्च किए किन्तु खेल मैदान नहीं बनवाए। हमने जयपुर ग्रामीण में खेल विकास सुविधाओं के लिए 26 करोड रूपये खर्च किए, खेल भी करवाए और खेल मैदान भी तैयार करवाए। जल जीवन मिशन योजना के अंतर्गत सरकार के ढीलेपन और भ्रष्टाचार पर हमला बोलते हुए कहा मोदी सरकार ने देश की एक लाख से अधिक ग्राम पंचायतों को पैसा दिया है ताकि हर घर नल से जल पहुंच सके। लेकिन प्रदेश सरकार के लिए जनता को पानी पिलाने से ज्यादा जरूरी है कि कार्य का ठेका किसे मिले। लेकिन सरकार चार साल कुर्सी बचाने में ही लगी रही और इसके लिए गहलोत सरकार ने अपने विधायकों को लूट की खुली छूट दी हुई है। जिससे चारों तरफ भ्रष्टाचार का बोलबाला है, प्रदेश की कानून-व्यवस्था बद से बदतर होती जा रही है।

मोदी सरकार की तारीफ करते हुए कर्नल राज्यवर्धन ने कहा 2014 से लगातार 2 बार देश को मोदी जी के नेतृत्व वाली भाजपा की मजबूत सरकार मिली है जो देश के गौरव और जनता की भलाई के लिए लगातार काम कर रही है। केन्द्र सरकार द्वारा बनाई गई योजनाएं धरातल पर पहुंच रही है जिनका लाभ गांव, गरीब, किसान, महिला, युवा, पीड़ित एवं पिछडों सहित समाज के प्रत्येक वर्ग को मिल रहा है। इसके विपरीत कांग्रेस स्वयं तो विकास कार्यों से कोसों दूर है। राज्य सरकार अपनी द्वेष की राजनीति के कारण केंद्र की योजनाओं का लाभ राजस्थान की जनता तक पहुंचने में बाधा उत्पन्न कर रही है।

# पोक्सो एक्ट के जिन्दा आरोपी के मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने की अनुज्ञा जारी की

**लालसोट,** (निसं)। झापदा थाना क्षेत्र की सवासा ग्राम पंचायत प्रशासन द्वारा पोक्सो एक्ट के आरोपी को बचाने के लिए ऐसा कारनामा कर दिखाया जिसके सामने आते ही आम लोग हतप्रभ हो रहे हैं।

ग्राम पंचायत सवासा के सरपंच एवं ग्राम विकास अधिकारी द्वारा ऐसे युवक की मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने की अनुज्ञा बनाने के लिए तहसीलदार को अनुशंसा रिपोर्ट पेश कर दी गई जो युवक दो नाबालिग बालिकाओं के दुष्कर्म का आरोपी है। जिस के नाम से मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करवाया जा रहा था वह लालसोट थाने में पोक्सो एक्ट के दर्ज मामले में करीब 3 माह बाल कल्याण समिति के बाल सुधार गृह में रह चुका है एवं वर्तमान में जमानत पर बाहर चल रहा है।

- संज्ञान में आने पर तहसीलदार ने लगाई रोक, सवासा ग्राम पंचायत का मामला

मामले का पटाक्षेप होने के बाद तहसीलदार सीमा गुनावत द्वारा आनन-फानन में एक पत्र जारी कर खंड विकास अधिकारी एवं ग्राम पंचायत प्रशासन को उस मृत्यु प्रमाण पत्र पर रोक लगाई गई है। सबसे बड़ी बात इस मामले को लेकर यह है कि ग्राम पंचायत प्रशासन जिस पोक्सो एक्ट के आरोपी का मृत्यु प्रमाण पत्र बनाना चाहता है उसके नाम से पुलिस लालसोट थाना पुलिस द्वारा आरोप सेक्टर आरोपी मानते हुए उसी नाम से चार्जसीट भी पेश की जा चुकी है।

वहीं पीड़ित परिवार द्वारा ग्राम पंचायत प्रशासन आदि पर आरोप लगाते हुए कहा गया कि सरपंच पोक्सो एक्ट के आरोपी के परिवार से ताल्लुक रखता है एवं किसी भी प्रकार से पोक्सो एक्ट में फंसे आरोपी का मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने के लिए उसे बचाने की गरज से इस तरह तहसील से अनुज्ञा पत्र जारी करा गलत एवं गैर संवैधानिक कार्य किया गया है।

पीड़ित परिवार ने आरोप लगाते हुए कहा कि पोक्सो एक्ट के आरोपी होने के बाद भी गलत तथ्य पेश कर एवं फर्जी शपथ पत्र प्रमाण पत्रों के आधार पर मृत्यु प्रमाण पत्र के लिए अनुज्ञा जारी करवाई गई है। जबकि जिस नाम गोलु से पुलिस ने चार्जशीट दाखिल की है फर्जी दस्तावेजों के आधार पर तहसील से अनुज्ञा जारी करवा मृत्यु प्रमाण पत्र बनाने की कोशिश की गई है।

## मिनी मैराथन आयोजित

**श्रीमाधोपुर,** (निसं)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में तालुका विधिक सेवा समिति के द्वारा मंगलवार को मिनी मैराथन का आयोजन किया गया। जिसमें एसबीएन स्कूल के विद्यार्थी एवं उनके स्टाफ कर्मी, न्यायालय कर्मी एवं पुलिस विभाग के कर्मचारी, अधिवक्ता ने उक्त भाग लिया।

मिनी मैराथन को पायल गौतम अति मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट क्रम संख्या .2 श्रीमाधोपुर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर स्कूल संचालक प्रदीप कुमार, मुकेश कुमार व उनका स्टाफ अधिवक्ता कुमार गौरव, एडीजे न्यायालय के स्टाफ कर्मचारी, रीडर विनोद कुमार शर्मा ,प्रमोद कुमार मीणा, राकेश कुमार सैनी व कस्बे के वरिष्ठ जनो आदि ने भाग लिया।

# अंबेडकर सर्किल पर आक्रोश प्रदर्शन किया

**अलवर,** (निसं)। दलित शोषण मुक्ति मंच (डीएसएमएम) एवं राजस्थान अंबेडकर शिक्षक संघ के संयुक्त नेतृत्व में विद्या संबल योजना,अंग्रेजी माध्यम संविदा सहायक शिक्षक भर्ती में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग को आरक्षण देने की मांग के लिए आज अलवर के अंबेडकर सर्किल पर विशाल आक्रोश प्रदर्शन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में संगठनों के पदाधिकारी, कार्यकर्ता, युवा एवं छात्र शामिल रहे। प्रदर्शन स्थल पहुंचकर एडीएम को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन लिया।

- विद्या संबल योजना, अंग्रेजी माध्यम संविदा सहायक शिक्षक भर्ती में एससी एसटी वर्ग को आरक्षण देने की मांग

प्रदर्शनकारियों ने आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि विद्या संबल योजना एवं अंग्रेजी माध्यम संविदा सहायक शिक्षक भर्ती में आरक्षण का प्रावधान नहीं किए जाने से आरक्षित वर्ग को भारी नुकसान होगा। राज्य सरकार को बिना आरक्षण के प्रावधान की इस भर्ती पर रोक लगानी चाहिए। आरक्षण का प्रावधान कर शिक्षकों की स्थाई भर्ती की जाए। विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी में 93000 एवं अंग्रेजी माध्यम संविदा सहायक शिक्षक भर्ती में 10000 शिक्षकों की भर्ती की प्रक्रिया जारी है जिसमें अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के लिए आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है। इससे इन वर्गों को भारी नुकसान होगा। प्रदर्शन में राजस्थान अम्बेडकर शिक्षक संघ के संभाग अध्यक्ष रामचरण वर्मा, जिला अध्यक्ष अमरसिंह जाटव, जिला मंत्री हरिमन मीणा, दलित शोषण मुक्ति मंच से जिला सह संयोजक एडवोकेट श्यामसुंदर जाटव, जीतसिंह, अशोक कुमार वर्मा, कमलेश कुमार, श्योप्रसाद बैरवा, एडवोकेट पंकज सांवरिया, दिनेश मीणा, वेदप्रकाश गोठवाल, अंकित वर्मा सहित बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

# सिद्ध चक्र महामण्डल अनुष्ठान का समापन

**निवाई,** (निसं)। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी के ससंघ सानिध्य में सिद्ध चक्र मण्डल विधान का मंगलवार को ब्रह्मचारी विधानाचार्य जिनेश भैया जयपुर के विधिवत मंत्रोच्चार के साथ भक्ति भाव से 1024 श्री फल चड़ाकर समापन किया। जिसमें सभी इन्द्र इन्द्राणियों ने संगीत के साथ भक्ति नृत्य किया।

चातुर्मास कमेटी के मीडिया प्रभारी विमल जौला व राकेश संघी ने बताया कि अग्रवाल जैन मंदिर में आठ दिन से चल रहे अनुष्ठान का मंगलवार को सभी इन्द्र इन्द्राणी द्वारा भक्ति पूर्वक पूजा अर्चना कर समापन किया। जौला ने बताया कि विधान के तहत सोधर्म इन्द्र सहित सभी इन्द्रों ने देव शास्त्र गुरु भगवान शांतिनाथ एवं गणाचार्य विराग सागर महाराज एवं आर्यिका विज्ञाश्री माताजी का पूजन किया। इस दौरा समवशरण की रचना में चक्रवर्ती वेशभूषा में सोधर्म इन्द्र महेन्द्र जैन सारसोप, रामपाल जैन चंवरिया, राजेश झांझरी, ताराचन्द गोयल, ज्ञानचंद भाणजा, विनोद पाटनी, महेन्द्र जैन चेनपुरा, महावीरप्रसाद पराणा, सुशील जैन आरामशीन, महेन्द्र चंवरिया, सुनील भाणजा, दिनेश गिन्दोडी, त्रिलोक सिरस, राजेश सांवलिया, सत्यनारायण जैन मोठूका, विष्णु बोहरा, नेमीचंद जैन, प्रदीप जैन, विमल झिलाय, हेमचंद संघी, पारस जैन प्रेस, विमल दलाल, लालचंद जैन, पदमचंद बहड, नीरा जैन, शकुंतला भाणजा, अनीता गोयल, पदमा जैन, पिंकी कठमाणा, मीनाक्षी जैन, हेमलता जैन, मेना पराणा, प्रियंका जैन सिरस सहित कई श्रद्धालुओं ने जमकर भक्ति नृत्य किया।

जैन मंदिर में आयोजित सिद्ध चक्र मण्डल विधान में श्रद्धालुओं ने पूजा-अर्चना की।

## शेखावत समाज रत्न से सम्मानित

**श्रीमाधोपुर,** (निसं)। माावा की शस्य श्यामला धरती पर उज्जैन जिले के बड़नगर कस्बे में स्थित श्री महाराणा प्रताप राजपूत बोर्डिंग परिसर में दहेज विरोधी क्षत्रिय संघ में आयोजित सम्मान समारोह में राजस्थान प्रदेश उपाध्यक्ष सीकर श्रीमाधोपुर महावीर सिंह शेखावत को समाज रतन से सम्मानित किया गया।

शेखावत को यह सम्मान अमेठी डॉक्टर नरेंद्र सिंह राजावत, राष्ट्रीय संगठन मंत्री अखिल भारतीय शिवदान सिंह, सिंगरा मुल्तान महाराजेढ, रघुवीर सिंह, हमीरगढ़ राव युग प्रताप सिंह सैलाना, राजकुमार दिव्यराज सिंह रावले विजेंद्र सिंह चौहान ,मध्यप्रदेश शासन कैबिनेट मंत्री सुल्तान सिंह शेखावत ने शेखावत को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस मौके पर दहेज विरोधी क्षत्रिय संघ के संस्थापक महेंद्र सिंह राठौड, जाखली राष्ट्रीय अध्यक्ष गणपत सिंह राठौड ,देवेंद्र सिंह मऊ ,यशपाल सिंह सिसोदिया, महेंद्र सिंह पवार ,मध्य प्रदेश लाल सिंह , पूर्व विधायक भगवान सिंह एड. व मध्य प्रदेश मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश हजारों की संख्या में लोग उपस्थित हुए।

# न्यायपालिका कानूनी अधिकारों की सुरक्षा करने के लिए तत्पर: शर्मा

**फागी,** (निसं)। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं जिला एवं सैशन न्यायाधीश हरेन्द्र सिंह, अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के निर्देशानुसार राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर जिला के संयुक्त तत्वावधान में वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट फागी शालिनी शर्मा के निर्देशानुसार 'एम्पावरमेंट ऑफ सिटिजन्स थ्रू लीगल अवेयनेस एण्ड आउटरीच कैम्पेन' एवं 'हक हमारा भी तो है 75 अभियान' के तहत मंगलवार को फागी उपखण्ड मुख्यालय के जयपुर भीलवाडा मेगा हाईवे पर स्थित खेल मैदान परिसर में प्रात: 7 बजे से 8 बजे के मध्य मिनि मैराथन का आयोजन किया गया।

जिसकी शुरुआत फागी एसीजेएम शालिनी शर्मा द्वारा हरी झंडी दिखाकर की गयी। लीगल एड प्रभारी सुरेंद्र सिंह ने बताया कि आज के मिनी मैराथन का उद्देश्य लोगों को यह संदेश देना था कि न्यायपालिका लोगों के कानूनी अधिकारों की सुरक्षा करने के लिए तत्पर है और यह कार्यक्रम आने वाले विधिक साक्षरता अभियानों का आगाज है, जिसमें आने वाले समय में ऐसे विधिक साक्षरता शिविरों का आयोजन किया जायेगा और लोगों को उनकें कानूनी अधिकारों से संबंधित व्यवहारिक जानकारी दी जायेगी। उक्त मैराथन में न्यायिक अधिकारी के अतिरिक्त कर्मचारी गण राकेश जैन, रोहित कुमावत, विष्णु सैनी, ओम प्रकाश शर्मा, सौरभ खोरवाल, अभिषेक गुप्ता, राधा किशन शर्मा होमगार्ड अजीत सिंह, सोनपाल गांधी अधिवक्तागण बार एसोसिएशन अध्यक्ष फागी हनुमान सहाय सियाग,सचिव सत्यदेव सिंह नरूका, उपाध्यक्ष अशोक ब्रह्मभट्ट, एडवोकेट बद्री नारायण शर्मा, प्रेमचंद शर्मा, अनुपम शर्मा, संजीव पारीक व अन्य अधिवक्ता गण के अतिरिक्त फागी क्षेत्र स्थित रेसलर डिफेंस एकेडमी,भगत सिंह डिफेंस एकेडमी तथा टाइगर डिफेंस एकेडमी के छात्र सहित फागी क्षेत्र के आमजन भी मौजूद रहे।

फागी उपखंड मुख्यालय के स्टेडियम पर आयोजित मैराथन में युवाओं ने भाग लिया।

- मैराथन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

## संक्षिप्त

### रामअवतार बने तहसील अध्यक्ष

**निवाई,** (निसं)। शिवाजी कॉलोनी स्थित तेजाजी मंदिर परिसर में मंगलवार को तहसील माली समाज की बैठक जिला अध्यक्ष माली समाज कैलाश मोरी की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में सर्वसम्मति से रामअवतार सैनी को तहसील अध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया गया। इसके बाद शहर अध्यक्ष के पद पर रामसहाय मुंशी, पूर्व तहसील सम्मेलन समिति के अध्यक्ष पद पर पूर्व पालिका उपाध्यक्ष दुर्गालाल सैनी, माली समाज विकास संस्था के अध्यक्ष पद पर मूलचंद सैनी, माली समाज विकास संस्था के कोषाध्यक्ष पद पर पार्षद बाबूलाल सैनी को सर्व सम्मती से नियुक्त किया गया। इसके बाद सभी पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाकर 15 दिन में कार्यभार संभालने का निर्णय लिया गया।

### करंट लगने से युवक की मौत

**कोटपूतली,** (निसं)। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम टमोरीवास में मंगलवार अल सुबह कृषि कार्य करते वक्त करन्ट लगने से एक युवक की मौत हो गई। पुलिस के अनुसार राजेश पुत्र बनवारी लाल गुर्जर ने दर्ज करवाया कि उसका भाई रामकिशन (20) मंगलवार सुबह करीब 8 बजे घर से खेत में कृषि कार्य के लिए गया था। जहाँ पाईप लाईन बदलते वक्त खेत में से जा रही 11 हजार केवी की विधुत लाईन का तार अचानक उस पर टुट कर गिर गया। जिससे वह घायल हो गया। जिसे परिजन यहां के राजकीय बीडीएम अस्पताल लेकर पहुंचे जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक के शव का पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया।

### लंबित प्रकरणों के निस्तारण के निर्देश

**टोंक,** (निसं)। जिला कलेक्टर चिन्मयी गोपाल की अध्यक्षता में मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में राजस्व अधिकारियों की बैठक आयोजित हुई। जिला कलेक्टर ने राजस्व से सम्बन्धी विभिन्न बिंदुओं की उपखंडवार समीक्षा की। जिला कलेक्टर ने वसूली, एलआर एक्ट, धारा 91 के प्रकरण, गैर खातेदारी से खातेदारी, पीएलपीसी में दर्ज प्रकरण सहित सिवायचक एवं चारागाह भूमि में किये गए अतिक्रमण को हटाने को लेकर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान सीईओ एवं कार्यवाहक एडीएम देशलदान, एडीएम बीसलपुर प्रभाती लाल जाट सहित सभी उपखंड अधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार मौजूद रहे।

### प्रकाश अडाले का स्वागत किया

**कोटपूतली,** (निसं)। राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के नवनियुक्त सदस्य प्रकाश अडाले व अलवर नगर परिषद के पूर्व सभापति मुकेश सारवान का मंगलवार को अलवर जाते वक्त नगर परिषद पार्षद ताराचंद वाल्मिकी के नेतृत्व में स्वागत किया गया। इस मौके पर बड़ी संख्या में वार्डवासियों ने उनका माला व साफा पहनाकर अभिनंदन किया। इस दौरान डॉ. सुन्दर घोंघले, एड. अशोक, किशन लाल, नीटु, अमरनाथ, मालसिंह, विकास, मनीष, पवन, शिवा, रामलाल, जीतु, मनमोहन व अनुराज वाल्मिकी सहित अन्य लोग मौजूद थे।

### मिनि मैराथन दौड़ का आयोजन

**कोटपूतली,** (निसं)। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली व जिला एवं सैशन न्यायाधीश हरेन्द्र सिंह के निर्देशानुसार राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर जिला के संयुक्त तत्वावधान में तालुका विधिक सेवा समिति अध्यक्ष एडीजे प्रथम भारत भूषण शर्मा के निर्देशानुसार हक हमारा भी तो है आजादी 75 अभियान के तहत मंगलवार को तालुका मुख्यालय स्तर पर राजकीय एलबीएस पीजी महाविधालय में मिनि मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य न्याय पालिका लोगों के कानूनी अधिकारों की सुरक्षा करने के लिए तत्पर है। इस दौरान अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम निलेश चौधरी, एएमजेएम मीनाक्षी अग्रवाल, एसआई रविन्द्र कुमार, पनियाला एसएचओ हितेश शर्मा, एएसआई रामसिंह, नरेश कुमार, रामचन्द्र, हैड कानि. दयाराम, रामसिंह, विक्रम, नागेश प्रसाद, मनीष कुमार गुर्जर, कुलदीप सिंह, संदीप, रमेश यादव, मुकेश कुमार, अनिल कुमार, राजेश कुमार, बहादुर सिंह, रामफूल, जगत, मनोज, विनोद कुमार, अभिभाषक संघ अध्यक्ष अशोक कुमार यादव, राजकमल बसीठा, दीक्षा शर्मा, महेश सैन, सत्यदेव शर्मा सहित अन्य मौजूद रहे।

# शादी समारोह में गये युवक की संदिग्ध मौत का मामला गहराया

**कोटपूतली,** (निसं)। कस्बे के बानसूर रोड पर विगत 4 नवम्बर की मध्य रात्रि को मौहल्ला बड़ाबास निवासी एक युवक की संदिग्ध अवस्था में मौत हो जाने का मामला लगातार तूल पकड़ता जा रहा है।

मामले को लेकर मृतक युवक विकास (20) के पिता प्रकाश चंद कुमावत ने स्थानीय थाने में विगत 5 नवम्बर को नामजद मामला दर्ज करवाया था। हालांकि पुलिस द्वारा दोनों नामजद आरोपियों सहित अन्य 4-5 युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई है। लेकिन घटना के चार दिन बीत जाने के बावजूद भी अभी तक कोई कार्यवाही सामने नहीं आई है।

जिसको लेकर एक बार फिर मंगलवार को मृतक युवक के परिजनों सहित राजस्थान कुम्हार महासभा के पदाधिकारियों व वार्डवासियों ने स्थानीय थाने का घेराव कर मामले में जल्द से जल्द निष्पक्ष कार्यवाही की मांग की। इस सम्बंध में राजस्थान कुम्हार महासभा के प्रदेशाध्यक्ष किशोर दूल्हेपुरा, सेवानिवृत आरएएस बीएल बासनीवाल, प्रदेश सचिव हेमराज प्रजापत व मृतक के पिता प्रकाश चंद कुमावत ने एएसपी विधा प्रकाश व एसएचओ सवाई सिंह को ज्ञापन सौंपकर अवगत करवाया कि मामले में आरोपी ऊंची राजनैतिक रसुखात वाले हैं। जिसके चलते गहनता से जांच व कार्यवाही नहीं की जा रही है। मृतक युवक का पिता एक फैक्ट्री में मजदूरी करता है, जिसके 4 पुत्रियों सहित एक पुत्र है जिसकी हत्या कर दी गई है। पूर्व में भी सर्वसमाज के लोगों ने राजकीय बीडीएम अस्पताल व कोटपूतली थाने पर धरना प्रदर्शन किया था। जिस पर यह आश्वासन मिला था कि मामले में जल्द ही कार्यवाही होगी।

परिजनों का आरोप है कि मामले में ना तो पुलिस द्वारा निष्पक्ष जांच की जा रही है और ना ही आरोपीयों से सख्ती से पूछताछ की जा रही है। परिजनों का यह भी आरोप है कि मृतक युवक के शरीर पर ना केवल चोट के निशान थे बल्कि मृतक युवक के जूते, मोजे, अण्डरवियर तक गायब थे जिसमें पुलिस ने मृतक के जूते व मोजे तो बरामद कर लिये है लेकिन अभी तक मृतक की अण्डरवियर तक बरामद नहीं की गई है। आरोप है कि आरोपीयों ने मृतक को अस्पताल में लावारिश बता कर भर्ती करवाया जबकी उसकी कथित हत्या के बाद आरोपीयों ने उसका मोबाईल भी फेंक दिया। लेकिन पुलिस अभी मृतक युवक की मौत के बारे में किसी भी तरह की जानकारी देने से बच रही है। जिसको लेकर लोगों में आक्रोश की स्थिती बनी हुई है। कुम्हार महासभा के पदाधिकारियों ने चेतावनी दी कि अगर दो दिवस में कोई कार्यवाही नहीं की गई तो सर्वसमाज द्वारा धरना प्रदर्शन कर कोटपूतली बंद का आह्वान किया जायेगा। इस दौरान राजा दक्ष प्रजापति छात्रावास के अध्यक्ष मामचंद ठेकेदार, धर्मपाल प्रजापत, दयाराम प्रजापत, पार्षद प्रतिनिधि मुखिया पायला, मनोज पायला, मुकेश, चन्द्र प्रजापत, महावीर प्रजापत, सुनील कुमावत, एड. टिंकु प्रजापत, बलवीर गुर्जर समेत अन्य मौजूद थे।

आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर कुम्हार महासभा के पदाधिकारियों ने थानाधिकारी को ज्ञापन सौंपा।

- कुम्हार महासभा के पदाधिकारियों के नेतृत्व में लोगों ने थाने का घेराव किया
- जल्द से जल्द निष्पक्ष कार्यवाही की मांग की

### सर्विस रोड के नाले कचरे से भरे

**पावटा,** (निसं)। नगरपालिका पावटा प्रागपुरा शहर के राजमार्ग 48 पर बने दोनों तरफ बने सर्विस रोड के बरसाती नाले कचरे से अटे हुए हैं।

नगरपालिका के अधिकारियों द्वारा नालों की सफाई के दावे किए जा रहे हैं, लेकिन इन दावों से हकीकत कोसों दूर है। खासतौर पर पुराने शहर के बरसाती नाले बदहाल हो चुके हैं। नालों की सफाई के साथ इनकी मरम्मत करने की भी जरूरत है। लेकिन सफाई के नाम पर हो रही खानापूर्ति को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि मानसून की वर्षा के दौरान शहर के क्या हालात होंगे। शहर के नालों में कचरा भरा है। इनकी सालाना सफाई फर्ज अदायगी तक सिमटी है। ऐसे में इस बार भी बारिश में जल भराव के चलते सर्विस रोड सहित मुख्य बाजार की सडके टापू बन जाती है। पावटा प्रागपुरा नगरपालिका क्षेत्र में राजमार्ग 48 पर बने दोनों तरफ बने सर्विस रोड के बरसाती नालो की वार्षिक सफाई की जिम्मेदारी नगरपालिका की है। तकरीबन सभी नाले अतिक्रमण की चपेट में हैं। आधुनिक जीवन शैली और प्लास्टिक के अधिक प्रयोग के चलते सारा कचरा नालों में डाला जाता है। स्थिति यह है कि दोनों किनारों पर नाले चोक हैं।

# सिद्ध चक्र महामंडल विधान में हुए विभिन्न कार्यक्रम

**मालपुरा,** (निसं)। अग्रवाल समाज आम चौरासी एवं वर्षायोग समिति डिग्गी के तत्वावधान में अग्रवाल सेवा सदन डिग्गी में आयोजित सिद्ध चक्र मंडल विधान के अन्तर्गत विभिन्न आयोजन हुए। विमल जैन कठमाणा ने बताया कि आचार्य इन्द्रनन्दी महाराज ससंघ की उपस्थिति में आयोजित सिद्ध चक्र महामंडल विधान के अन्तर्गत मंगलवार को धर्म आराधना करते हुए जैन भजनों की स्वर लहरियों के साथ-साथ शांतिनाथ भगवान को 1024 अर्द्धय समपित किये गये। बुधवार को प्रात: 7 बजे ने नित्या अभिषेक, शांति धारा पूजन एवं 108 कुण्डीय विश्व शांति महायज्ञ का आयोजन होगा। दोपहर साढे बारह बजे वर्षायोग समापन पर पिच्छिका परिवर्तन मंगल कलश के सौभाग्यशाली पात्र का चयन किया जायेगा।

डिग्गी में आचार्य इन्द्रनन्दी महाराज के ससंघ के सानिध्य में विशेष पूजा अर्चना हुई।

### दो हजार का इनामी बदमाश गिरफ्तार

**बहरोड़/मुंडावर,** (निसं)। जिला पुलिस भिवाड़ी क्षेत्र के मुंडावर थानाधिकारी संजय शर्मा के नेतृत्व में गठित टीम ने 10 जून 2022 को पुलिस जाब्ते पर रात्रि के समय हमला करने वाली व मोटरसाइकिल लूट गैंग के 2000 रुपए के इनामी बदमाश को गिरफ्तार किया।

गौरतलब है कि 10 जून 2022 को रात्रि के समय अजरका पुलिस चौकी के जाब्ते के साथ मारपीट कर मोटरसाइकिल लूटने की घटना हुई थी।

जिसका पर्दाफाश करते हुए मुंडावर थानाधिकारी के नेतृत्व में गठित द्वारा 2000 रुपए के इनामी बदमाश विकेश उर्फ विक्की पुत्र सूरत सिंह जाट निवासी पनवाड थाना बावल जिला रेवाड़ी हरियाणा को गिरफ्तार कर अनुसंधान किया जा रहा है।

वहीं शेष आरोपी गीलू उर्फ अजय जाट पुत्र सुरेश निवासी बावल जिला रेवाड़ी तथा गौरव पुत्र रोहिताश जाट निवासी मांगा का माजरा थाना कोटकासिम जिला अलवर एवं तीसरे आरोपी विशाल पुत्र उदय जाट निवासी रेवाड़ी जिला रेवाड़ी हरियाणा की तलाश जारी है।

### 'भारत जोड़ो यात्रा की जनसभा ग्रामीण क्षेत्र में होगी'

**अलवर,** (निसं)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग एवं कारागार मंत्री टीकाराम जूली ने बताया कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी की आगामी माह की 19-20 दिसम्बर को प्रस्तावित भारत जोडो यात्रा की ऐतिहासिक विशाल जनसभा अलवर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र में आयोजित की जाएगी।

उन्होंने बताया कि 19 दिसम्बर को भारत जोडो यात्रा राजस्थान के दौसा जिले के बसवा के रास्ते होते हुए अलवर जिले में प्रवेश करेगी। आज कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारियों के साथ मालाखेडा में राज्य स्तरीय सभा के लिए जगह चिन्हित करने के लिए मौका मुआयना किया गया। उन्होंने बताया कि राज्य की सबसे बडी विशाल जनसभा मालाखेडा में आयोजित की जाएगी। उन्होंने बताया कि यात्रा के राजस्थान संयोजक मंत्री गोविन्दराम मेघवाल एवं राहुल गांधी की यात्रा की जिम्मेदारी संभाल रहे उनके निजी सचिव सुशांत सिंह व पार्टी पदाधिकारियों के साथ राहुल गांधी की यात्रा के दौरान किए जाने वाले रात्रि प्रवास को लेकर मालाखेडा, राजगढ, सुरेर व रामगढ क्षेत्र का दौरा किया। टीम ने तैयारियों का एक रोड मैप तैयार किया है। रोड मैप पर मंथन कर व्यवस्थाओं व कार्यक्रम को शीघ्र ही अंतिम रूप दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि 4 दिसम्बर को राजस्थान प्रदेश के कोटा, झालावाड के रास्ते यह यात्रा राजस्थान में प्रवेश करेगी। तत्पश्चात् रामगढ नौगांवा होते हुए भारत जोडो यात्रा हरियाणा पहुंचेगी। उन्होंने बताया कि कन्याकुमारी से शुरू हुई इस यात्रा से पूरे देश में उत्साह का माहौल है। ना केवल कांग्रेसी बल्कि सभी भारत वासियों में भारत जोडो इस यात्रा से एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है।

### प्रत्याशी चयन के लिए बनाई कमेटी

**लालसोट,** (निसं)। नगर पालिका क्षेत्र के वार्ड नंबर 30 में पार्षद के देहांत के बाद रिक्त हुई सीट पर होने वाले चुनाव में प्रत्याशी चयन को लेकर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री परसादी लाल मीणा द्वारा एक कमेटी का निर्धारण किया गया है। प्रदेश स्वायत शासन संस्था के उपाध्यक्ष एवं नगर पालिका लालसोट के पूर्व चेयरमैन दिनेश मिश्र ने बताया कि चिकित्सा मंत्री मीणा द्वारा बनाई गई कमेटी में पूर्व पीसीसी सदस्य रामविलास शर्मा, ब्लॉक अध्यक्ष जगदीश राडा, शंभू बेरवा होंगे। नगर पालिका लालसोट के वार्ड नंबर 30 के लिए प्रत्याशी चयन के लिए चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा के द्वारा कमेटी बनाई गई। वार्ड के लोगों से संपर्क कर प्रत्याशी का पैनल बनाकर 12 नवंबर तक अपनी रिपोर्ट मंत्री मीणा के समक्ष पेश करेगी।

### सर्वश्रेष्ठ परिणाम देने वाले विद्यालयों को 42 लाख स्वीकृत

**दौसा,** (निसं)। कृषि विपणन राज्यमंत्री मुरारीलाल मीणा ने स्थानीय विधायक कोष से बोर्ड परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ परिणाम देने वाले विधानसभा क्षेत्र के 6 विद्यालयों को 42 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की है।

इधर विधायक की अनुशंषा पर जिला परिषद ने 42 लाख रुपये की वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृति जारी कर दी है।

जिला निष्पादन समिति के सदस्य अक्षय सक्सैना ने बताया कि राज्यमंत्री मुरारीलाल मीणा ने बोर्ड परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों को विधायक कोष से राशि देने की घोषणा की गई थी। उन्होंने बताया कि बोर्ड परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ परिणाम देने वाले राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मलवास को ग्यारह लाख रुपए, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खानवास को नौ लाख रुपए, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खूरी कला को सात लाख रुपए, आनंद शर्मा राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय दौसा को पांच लाख रुपए, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चांदराना को तीन लाख रुपए तथा संस्कृत शिक्षा विभाग में बोर्ड परीक्षा का सर्वश्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने पर राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय मानपुरिया कोठया को सात लाख रुपए की राशि दी गई है। उन्होने बताया कि जिला परिषद द्वारा प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी कर दी गई है।

- राज्यमंत्री मुरारीलाल मीणा ने विधायक कोष से 6 विद्यालयों को राशि स्वीकृत की

# नगर परिषद दस्ते ने छावनी चौराहे से अतिक्रमण हटाया

**टोंक,** (निसं)। छावनी चौराहे के समीप इंदिरा रसोई के उद्घाटन से पूर्व नगर परिषद ने रसोई परिसर के आसपास सड़कों पर सब्जी, फल-फ्रूट के ठेलों को बल प्रयोग कर हटा दिया गया।

जानकारी के अनुसार इंदिरा सर्कल के पास परिषद द्वारा इंदिरा रसोई के संचालन के लिय फुटपाथ पर अस्थाई निर्माण कर मंगलवार को इसका उद्घाटन किया जाना था। ऐसे में नगर परिषद की आयुक्त अनीता खीचड़ के नेत्तृव में परिषद के दस्ते ने आसपास सड़क किनारे कई सालों से शब्जी, फल-फ्रूट बेचते आ रहे लोगों को वहां से हटने के लिय कहते ही लोगों ने परिषद की कार्यवाही का यह कहकर विरोध करना शुरू कर दिया कि वह लोग बरसों से यहां रोजी-रोटी कमा रहे हैं।

लोगों ने यह भी आरोप लगाया कि इंदिरा रसोई के लिय परिषद ने खुद नियम कायदे ताक में रखकर फुटपाथ पर ही रसोई के लिय अस्थाई निर्माण कर दिया है। लोगों का विरोध बढ़ते देख मौके पर पहुंचे पुरानी टोंक थानाधिकारी उदयवीर सिंह, यातायात पुलिस आदि जाप्ते की मदद से नगर परिषद ने हल्का बल प्रयोग कर शब्जी-ठेले वालों को वहां से खदेड़ दिया।

जिसके बाद लोग और आक्रोशित हो गये तथा कहने लगे कि उन्हें हटाने से पहले कोई सूचना या नोटिस तक नहीं दिये गये हैं। इधर इस मामले में टोंक नगर परिषद आयुक्त अनिता खींचड का कहना है कि नगर परिषद द्वारा सड़क व फुटपाथ से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई है, उन्होंने कहा की नगर परिषद की ओर से शहर में अलग-अलग स्थानों पर भी अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जाएगी।

नगर परिषद ने रसोई परिसर के आसपास की सड़कों से अतिक्रमण हटाया।

- इंदिरा रसोई का फुटपाथ पर अस्थाई निर्माण कर उद्घाटन किया जाना था
- आक्रोशित लोगों ने सूचना या नोटिस तक नहीं देने का लगाया आरोप

### एसटी मोर्चा की कार्यकारिणी घोषित

**टोंक,** (निसं)। भारतीय जनता पार्टी एस टी मोर्चा गहलोद मंडल की कार्यकारिणी की घोषणा मंडल अध्यक्ष लोकेश कुरेडा ने की। नवनियुक्त पदाधिकारियों का कार्यकर्ताओं ने फूलमालाओं से स्वागत किया।

मंडल लोकेश मीणा ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया, अनुसूचित जनजाति के प्रदेश अध्यक्ष जितेंद्र, जिला संगठन प्रभारी सऊदी सैनी, जिला अध्यक्ष राजेंद्र पराना, जिला महामंत्री प्रभु बाडोलिया, अनुसूचित जनजाति जिला अध्यक्ष राजकुमार मीणा के आदेश अनुसार गहलोद मंडल एस टी मोर्चा की कार्यकरणी घोषित की है।

इसमें महामंत्री मोहन लाल मीणा देवरी, राजेश मीणा नानेर, उपाध्यक्ष कमलेश मीणा सिसोला, रामभजन मीणा मुडिया, सुरेश मीणा पासरोटिया, कन्हैया लाल मीणा मालपुरा , मंत्री राजेश मीणा कुरेडी, नारायण मीणा किशनपुरा, राजेश मीणा किशनपुरा, प्रवक्ता प्रहलाद मीणा कुरेडा के रूप में की गई। साथ में पार्टी हित में कार्य करने के निर्देश दिए गए।

## सार-समाचार

### नहर लाने की पदयात्रा का स्वागत

**बहरोड़/मुंडावर,** (निसं)। अलवर जिले की नव घोषित नगर पालिका क्षेत्र नीमराना तथा नजदीकी गांवों में मुंडावर के पूर्व विधायक स्वर्गीय मेजर ओपी यादव की पत्नी कविता यादव के नेतृत्व में वरिष्ठ क्षेत्रीय नेताओं के द्वारा मुंडावर में कृषि भूमि हेतु नहर का पानी लाने के पद यात्रियों का स्वागत किया। गौरतलब है कि अलवर जिले के मुंडावर क्षेत्र में नहर का पानी लाने के पदयात्री जैसे ही नीमराना क्षेत्र के नाघोड़ी, सिलारपुर आदि गांवों में पहुंचे तो मुंडावर के पूर्व विधायक स्वर्गीय मेजर ओपी यादव की पत्नी के नेतृत्व में मोजीराम यादव तथा सैकड़ों ग्रामीणों ने पद यात्रियों को चौपाल ले जाकर पारंपरिक रूप से स्वागत करने के बाद जब नवघोषित नगरपालिका नीमराना में बावड़ी पर पदयात्रा पहुंचे तो पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष अशोक मुद्गल व पूर्व सरपंच सतीश मुद्गल नीमराना के नेतृत्व में सैकड़ों किसानों ने साफा और मालाओं से जोरदार स्वागत किया।

### माण्डकला मेला का शुभारंभ

**टोंक,** (निसं)। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर माण्डव ऋषि की तपोभूमि मिनी पुष्कर माण्डकला में आयोजित विशाल पशु व व्यापारिक मेला 2022-23 का शुभारम्भ टोंक जिला प्रमुख सरोज बंसल व जिला परिषद सदस्य हंसराज गुंजल, सरपंच नगरफोर्ट बंटी सोयल, वार्ड पंच ने ध्वजारोहण कर किया। जिला प्रमुख टोंक सरोज बंसल ने पवित्र सरोवर पर देव दर्शन एवं पूजा अर्चना कर क्षेत्र की खुशहाली की कामना की। जिला प्रमुख टोंक ने मेले में लग रही दुकानों का अवलोकन कर मेले में खरीददारी भी की। जिला प्रमुख का मेला स्थल पर पहुंचने पर पुष्प वर्षा कर, माला पहनाकर व शॉल ओढाकर भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर उनके साथ जिला परिषद सदस्य हंसराज गुंजल, सरपंच नगरफोर्ट बंटी सोयल, कार्यवाहक तहसीलदार दशरथ सिंह मीना, ग्राम विकास अधिकारी आलोक माहेश्वरी, वार्ड पंच कमलेश गौत्तम, वार्ड पंच प्रतिनिधि हनुमान साहू, लालचन्द बसंल, छितर सैन सहित ग्रामीण उपस्थित थे।

### थानाधिकारी ने पदभार संभाला

**नारायणपुर,** (निसं)। नारायणपुर थानाधिकारी अजय सिंह शेखावत के स्थानान्तरण के पश्चात नए लगे थानाधिकारी शिवशंकर चतुर्वेदी ने नारायणपुर पुलिस थाने का पदभार ग्रहण कर कार्यभार संभाला हैं। थानाधिकारी चतुर्वेदी के पदभार ग्रहण करने पर पूर्व पंचायत समिति धुडाराम यादव के सानिध्य में कस्बे के लोगों ने साफा और माला पहनाकर मिठाई खिलाकर भव्य स्वागत किया। इस मौके पर थानाधिकारी चतुर्वेदी ने बताया कि अपराधियों में भय, आमजन में विश्वास तथा क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखना पहली प्राथमिकता रहेगी। इस मौके पर सतीश शर्मा, राकेश सैनी, अंकित शर्मा आदि लोग मौजूद थे। इधर ब्राह्मण समाज के लोगों ने भी थानाधिकारी का माला व स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया।

### ब्राह्मण समाज की इकाई गठित

**पावटा,** (निसं)। ग्राम भांकरी परिक्षेत्र इकाई गठन के लिए तहसील पावटा ब्राह्मण महासभा के पदाधिकारियों की बैठक का आयोजन तहसील ब्राह्मण महासभा पावटा अध्यक्ष राजेश शर्मा की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में बालिका शिक्षा, समाज में व्याप्त कुरीतियां एवं शिक्षा के स्तर को सुधारने संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई। वहीं तहसील ब्राह्मण महासभा पावटा की सर्वसम्मति से भांकरी परिक्षेत्र इकाई का गठन करते हुए भांकरी तहसील ब्राह्मण महासभा इकाई का संरक्षक मुरारीलाल शर्मा को नियुक्त कर कार्यकारिणी गठित करने के लिए विचार विमर्श किया गया। इस मौके पर विप्र समाज से शंभू दयाल शर्मा, मोहनलाल शर्मा, शंकर दत्त शर्मा, शशिभूषण भारद्वाज, सुभाष चंद शर्मा, सतीश कुमार शर्मा, गजानंद टीलावत, एडवोकेट विष्णु कुमार, ओमप्रकाश शर्मा, योगेश शर्मा, जितेंद्र शर्मा सहित विप्रो जनों ने कार्यकारिणी का गठन किया।

### गौ सेवा कर जन्मदिन मनाया

**पावटा,** (निसं)। संकल्प हरियाली गौ सेवा समिति के कार्यकर्ताओं ने गौ सेवा कर समिति के वरिष्ठ सदस्य का जन्मदिन मनाया। जानकारी के अनुसार मंगलवार को समिति के वरिष्ठ सदस्य सीए रमन सैनी के जन्मदिवस के अवसर पर समिति के सदस्य बडनगर स्थित श्रीकृष्ण गौशाला पहुंचे और गौ सेवा कर सीए रमन सैनी का जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर संकल्प हरियाली समिति संयोजक नीरज सैन ने कहा कि गौ सेवा ही सच्ची सेवा है। सीए रमन सैनी ने कहा कि समिति सदस्यों द्वारा इस प्रकार गौ सेवा करते हुए जन्मदिन मनाया बहुत अच्छा लगा। इस अवसर पर सरपंच रामकरण यादव, संकल्प हरियाली समिति के संयोजक नीरज सैन, संकल्प हरियाली गौ सेवा समिति संयोजक सुभाष यादव, पंकज जिन्दल, रोहित शर्मा, राहुल सिंघल, निलेश चौधरी, उमेश अग्रवाल, बलवीर यादव, राव मुकेश यादव, गोशाला प्रबंधक गोकुल सारण, हनुमान सारण, प्रभूराम, थालोड, सूरजाराम जाट, बाघाराम जाट सहित बडी संख्या में समिति सदस्य एवं गोशाला समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

### आत्महत्या के मामले में पति गिरफ्तार

**मालपुरा,** (निसं)। रिंडलिया ग्राम पंचायत के पीमुण गांव स्थित मोग्या ढाणी में सोमवार को विवाहिता की गोली लगने से हुई मौत के बाद विवाहिता के पिता की ओर से दी गई रिपोर्ट पर थाना पुलिस ने पति को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी भूराराम खिलेरी ने बताया कि बीते दिन सोमवार को मोग्या ढाणी निवासी ललीता उर्फ मोना पत्नी रामजीलाल की छाती में बंदुक की गोली लगने से हुई मौत के बाद मंगलवार को मालपुरा अस्पताल में पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंपा गया। थानाधिकारी ने बताया कि विवाहिता की मौत के बाद पिता की ओर दी गई रिपोर्ट में पति द्वारा पत्नी को आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाते हुए दी रिपोर्ट व मौके से बरामद की गई बिना लाईसेन्स की दुनाली बंदुक रखने की विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर आरोपी पति रामजीलाल मोग्या को गिरफ्तार किया गया।

### क्षमता वर्धन कार्यक्रम आयोजित

**निवाई,** (निसं)। ग्राम पंचायत पहाडी में रक्षण परियोजना के तहत एक दिवसीय ग्राम पंचायत विकास योजना विकसित करने हेतु जनप्रतिनिधियों एवं ग्राम सभा सदस्यों का क्षमता वर्धन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें पहाड़ी सरपंच आशा देवी जाट, वार्ड पंच मौसमी मीणा, रमेश जाट, उपसरपंच सीताराम बलाई, ग्राम विकास अधिकारी ज्योति मीणा, समस्त आंगनबाडी कार्यकर्ता, आशा सहयोगियों, पंचायत सहायक भंवरलाल बैरागी सहित ग्राम सभा सदस्यों की भागीदारी रही। जिसमें ग्राम पंचायत विकास योजना जीपीडीपी के बारे में बताया गया। इसके साथ ही ग्राम पंचायत को बाल हितेषी पंचायत बनाने स्वच्छ व हरित पंचायत बनाने, स्वच्छ पेयजल से युक्त एवं हिंसा मुक्त ग्राम पंचायत बनाने के लिए सरकार की 9 थीम पर चर्चा की गई।

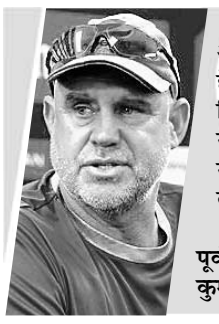

अगर आप अब तक टूर्नामेंट को देखें तो मुझे लगता है कि उपमहाद्वीप के खिलाड़ी, सूर्यकुमार जैसे खिलाड़ी जो बीच के ओवरों से अंतिम ओवरों तक खूबसूरत खेल दिखा रहे हैं, उनमें चारों तरफ शॉट खेलने की क्षमता है और अपने खेल में नयापन लाकर वे खतरा बन गए हैं। - मैथ्यू हेडन

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी, सूर्य कुमार यादव को लेकर।

# खेल जगत

आज का खिलाड़ी

**मिताली राज**

भारत की पूर्व कप्तान मिताली राज अगले साल होने वाली महिला आईपीएल टूर्नामेंट में खिलाड़ी, मेंटोर (मार्गदर्शक) या टीम की मालिक बनने के लिए अपने विकल्पों को खुला रख रही हैं। भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने हाल ही में घोषणा की थी कि महिला आईपीएल के शुरुआती सत्र को अगले साल मार्च में आयोजित किया जायेगा, जो पुरूषों के आईपीएल से पहले होगा। मिताली ने साक्षात्कार में कहा, मैं इस लीग के लिए अपनी भूमिका को लेकर विकल्पों को खुला रख रही हूं, यह चाहे एक खिलाड़ी के रूप में हो या एक फ्रेंचाइजी में किसी तरह से जुड़ाव के तौर पर।

**क्या आप जानते हैं ?...** क्रिकेट इतिहास के 1877 में सबसे पहले टैस्ट में खेलने वाले एडवर्ड ग्रेगरी, उनके पुत्र सिड ग्रेगरी और उनके भतीजे जैक ग्रेगरी ने अपने टैस्ट जीवन की शुरुआत शून्य (0) से की।

# सेमीफाइनल के लिए आज भिड़ेंगे पाकिस्तान और न्यूजीलैंड

सिडनी, 8 नवंबर। मेहनत से ज्यादा किस्मत की बदौलत टी-20 विश्वकप के सेमीफाइनल में पहुंची बाबर आजम के नेतृत्व वाली पाकिस्तान की टीम बुधवार को सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में न्यूजीलैंड के खिलाफ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के इरादे से उतरेगी।

दोनो टीमो के बीच पहला सेमीफाइनल मुकाबला नौ नवंबर को दोपहर 1.30 बजे से खेला जायेगा। आंकड़ो के लिहाज से पाकिस्तान का पलड़ा भारी दिखता है मगर विश्वकप में अब तक शानदार प्रदर्शन कर रही न्यूजीलैंड के खिलाफ उसकी राह कतई आसान नहीं होगी। दोनो टीमो के बीच अब तक खेले गये सभी टी-20 विश्वकप में यह सातवीं भिड़ंत होगी। टी-20 विश्वकप मुकाबलों में अब तक कीवी टीम के खिलाफ पाकिस्तान के सिर चार बार जीत का सेहरा बांधा है जबकि दो बार उसे हार का सामना करना पड़ा है।

मौजूदा टी-20 विश्वकप से ठीक पहले न्यूजीलैंड को उसके घर में हरा कर त्रिकोणीय श्रृखंला जीतने वाली बाबर की टीम पहले ही मनोवैज्ञानिक बढ़त हासिल कर चुकी है। सेमीफाइनल में पाक टीम इसका फायदा उठाने की पुरजोर कोशिश करेगी। शनिवार शाम तक पाकिस्तान के सेमीफाइनल में पहुंचने की संभावनाये काफी क्षीण बनी हुयीं थी मगर रविवार की सुबह उनके लिये आशा भरी किरण लेकर आयी जब नीदरलैंड ने जबरदस्त उलटफेर करते हुये मजबूत दक्षिण अफ्रीका को 13 रन से हरा दिया। अब पाकिस्तान के लिये सेमीफाइनल में पहुंचने के लिये सिर्फ बांग्लादेश को हराना था और महत्वपूर्ण मैचों में जीत की आदत रखने वाली बाबर आजम की टीम ने इसे संभव कर दिखाया। पाकिस्तान की मौजूदा विश्वकप अभियान की शुरूआत बेहद निराशाजनक थी जब टीम अपने चिर प्रतिद्धंदी भारत से हारने के बाद कमजोर जिम्बाव्वे से भी पिट गयी थी जिसके बाद विश्वकप की रेस से उसके बाहर होने की संभावनायें गहरा गयी थी मगर टीम ने अगले तीन मुकाबले जीत कर जबरदस्त वापसी की। सेमीफाइनल में पहुंचने वाली पाक टीम को अब खिताब का प्रबल दावेदार माना जाने लगा है। वहीं अब तक चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा करने में महती भूमिका अदा करने वाले मध्यक्रम के बल्लेबाज शान मसूद, इफ्तिखार अहमद और शादाब खान पर एक बार फिर प्रशंसको की उम्मीदें टिकी होंगी।

## पाकिस्तान के खिलाफ गेंदबाजी ही रहेगी हमारा मुख्य हथियार : विलियम्सन

सिडनी, 8 नवंबर। न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियम्सन ने मंगलवार को कहा कि आस्ट्रेलिया में मौजूदा टी-20 विश्व कप में अब तक उनकी पूरी टीम खासकर गेंदबाजों की भूमिका अहम रही है और उम्मीद है कि पाकिस्तान के खिलाफ सेमीफाइनल में भी गेंदबाजों का उत्कृष्ट प्रदर्शन टीम की जीत का मार्ग प्रशस्त करेगा। सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में बुधवार को पाकिस्तान के खिलाफ खेले जाने वाले टी-20 विश्व कप सेमीफाइनल मुकाबले की पूर्व संध्या पर विलियम्सन ने कहा वे हमारे लिए अनुभवी खिलाड़ी हैं। उन्होंने हमारे लिए लंबे समय तक खेला है, चाहे वह विकेट लेना हो या विशेष रूप से उन परिस्थितियों में तालमेल बैठाना जो निश्चित रूप से हमें विश्व कप जैसे बड़े आयोजनों में आने के लिए चाहिए। कल हम एक और टीम के खिलाफ उतरेंगे और हमें उन समायोजनों को फिर से करना होगा। न्यूजीलैंड ने इस विश्व कप में पांच गेंदबाजों को लेकर उतरा है जिनमें तीन का इकॉनमी रेट सात से कम है। टिम साउदी ने 6.35, मिशेल सेंटनर ने 6.43 और ईश सोढ़ी ने 6.78 की इकानमी के साथ शानदार प्रदर्शन किया है हालांकि लॉकी फर्ग्यूसन (8.13) और ट्रेंट बोल्ट (7.18) थोड़े महंगे साबित हुये हैं। एससीजी को लेकर विलियम्सन ने कहा मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है, हमने यहां पहला मैच खेला, विकेट बहुत अच्छा था और फिर दूसरी बार जब हम यहां खेले तो यह बदल गया था। कभी-कभी आप शायद वह ले सकते हैं जिसकी आप उम्मीद कर रहे थे कि विकेट ऐसा होगा। पहले गेम में और लगता है कि यह उसी तरह से व्यवहार करेगा।

## हेडन को उम्मीद, खास पारी खेलेंगे बाबर

सिडनी, 8 नवंबर। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के मेंटर (मार्गदर्शक) मैथ्यू हेडन ने टी20 खराब लय में चल रहे कप्तान बाबर आजम का समर्थन करते हुए उम्मीद जतायी कि वह मौजूदा विश्व कप के नॉकआउट चरण में 'कुछ खास' करेंगे। पिछले टी20 विश्व कप के बाद से इस प्रारूप में सबसे ज्यादा रन बनाने वालों की सूची में चौथे स्थान पर काबिज बाबर मौजूदा टूर्नामेंट में बल्ले से पूरी तरह से विफल रहे है। इस टी20 विश्व कप में बांग्लादेश के खिलाफ 33 गेंदों में 25 रनों की पारी पिछले पांच मैचों में उनकी सर्वश्रेष्ठ पारी रही है। हेडन ने न्यूजीलैंड के खिलाफ बुधवार को खेले जाने वाले सेमीफाइनल मैच की पूर्व संध्या पर संवाददाता सम्मेलन में कहा, " आपने अगर अब तक शानदार खेल नहीं देखा है तो आश्चर्यचकित होने की जरूरत नहीं क्योंकि बेहतरीन खिलाड़ियों को ज्यादा समय तक खामोश नहीं रखा जा सकता।"

## अभ्यास के दौरान रोहित को लगी चोट

एडिलेड, 8 नवंबर। इंग्लैंड के खिलाफ एडिलेड में टी-20 विश्वकप के सेमीफाइनल मैच खेलने की तैयारी कर रहे भारत के कप्तान रोहित शर्मा नेट प्रैक्टिस के दौरान चोट खा बैठे। क्रिकइंफो के अनुसार रोहित थ्रोडाउन विशेषज्ञ की गेंदो को खेल रहे थे कि इस बीच एक गेंद उनके हाथ पर लगी जिसके बाद वे दर्द से कराह उठे।

टीम के फीजियो ने उनका हल्का उपचार किया जिसके बाद भारतीय कप्तान दोबारा अभ्यास के लिये नेट पर लौटे मगर एक गेंद खेलने के बाद उन्होने बल्ला किनारे कर लिया। वेबसाइट द्वारा जारी वीडियो में रोहित एक आइस बाक्स पर बैठ गये जहां चोटिल रोहित से मेंटल कंडीशनिंग कोच पैडी अप्टन ने बात की। गौरतलब है कि दस नवंबर को भारत टी-20 विश्वकप के सेमीफाइनल में इंग्लैंड से भिड़ेगा जबकि नौ नवंबर को पहले सेमीफाइनल में पाकिस्तान की टक्कर न्यूजीलैंड से होगी।

## बीडब्लूएफ रैंकिंग : लक्ष्य करियर की सर्वश्रेष्ठ छठी पायदान पर

कुआलालंपुर, 8 नवंबर। भारतीय स्टार शटलर लक्ष्य सेन बीडब्ल्यूएफ द्वारा जारी ताजा विश्व रैंकिंग में दो स्थान की छलांग के साथ पुरुष एकल वर्ग में छठी पायदान पर पहुंच गये हैं जो उनके करियर में अब तक का सर्वश्रेष्ठ है।

पिछली जनवरी में इंडिया ओपन बीडब्ल्यूएफ सुपर 500 टूर्नामेंट और मार्च में प्रतिष्ठित ऑल इंग्लैंड ओपन सुपर 1000 टूर्नामेंट में रजत पदक जीतने के बाद सेन ने इस साल की शुरुआत में शीर्ष 10 में अपनी जगह बनायी थी। बीडब्लूएफ की मंगलवार को जारी पुरूष एकल रैंकिंग में किदांबी श्रीकांत 11वें और फार्म में चल रहे एचएस प्रणय 12वें स्थान पर हैं।

महिलाओं में पीवी सिंधु एकल वर्ग में पांचवें स्थान पर रही, जबकि सात्विकसाईराज रैंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की पुरुष युगल जोड़ी ने अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ विश्व नंबर सात का रूतबा हासिल किया है। साईराज और चिराग ने फ्रेंच ओपन खिताब जीतने के बाद सुपर 750 टूर्नामेंट जीतने वाली पहली भारतीय युगल टीम बनकर इतिहास रच दिया है। महिला युगल में, अश्विनी पोनप्पा और एन सिक्की रेड्डी की अनुभवी जोड़ी दुनिया में 21वें नंबर पर बनी हुई है। गायत्री गोपीचंद और त्रेसा जॉली की उभरती युवा जोड़ी पांच पायदान चढ़कर दुनिया की 23वें नंबर की खिलाड़ी बन गई है। मिश्रित युगल में तनीषा क्रास्तो और ईशान भटनागर दो पायदान के फायदे से 28वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

## गर्सिया ने जीता डब्ल्यूटीए फाइनल्स का एकल खिताब

फोर्ट वर्थ, 8 नवंबर। फ्रांस की कैरोलिन गर्सिया ने आर्या सबलेंका को 7-6 (4), 6-4 से हराकर डब्ल्यूटीए फाइनल चैंपियनशिप का एकल खिताब जीत लिया है। 29 वर्षीय गर्सिया ने इस साल खेले गए सभी फाइनल जीते हैं। सबलेंका के खिलाफ हालांकि पहले सेट में उन्हे कड़ा संघर्ष करना पड़ा मगर दूसरा सेट उन्होने आसानी से अपने नाम कर लिया। मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में गर्सिया ने कहा यह निश्चित रूप से बहुत बड़ी खुशी है। पूरे साल हमने जो काम किया, उस पर वास्तव में गर्व है। यह एक शानदार मैच था। मैं अपना सबसे बड़ा खिताब जीतकर वास्तव में खुश हूं।

## मनन के गोल से जगुआर ने सिटी को हराया

दिल्ली, 8 नवंबर। फुटबाल दिल्ली सीनियर डिवीजन लीग में खेले गए मैच में मंगलवार को नेहरू स्टेडियम पर जगुआर एफसी ने सिटी फुटबाल क्लब को मनन बलूनी के एकमात्र गोल से हरा कर पूरे अंक अर्जित किए। उतार चढ़ाव वाले मुकाबले में जगुआर के गोल कीपर यश कुलकर्णी ने कई सुंदर बचाव किए। पुरस्कार स्वरूप यश को मैन आफ द मैच आंका गया। विजेता टीम ने पांच मैच खेल कर पहली जीत अर्जित की है। तीन हार और एक ड्रॉ के साथ जगुआर ने चार अंक जुटाए हैं। सिटी ने छह मैचों में दो जीत और तीन हार के साथ सात अंक बनाए हैं। लीग मुकाबले आधे से ज्यादा सफर तय कर चुके हैं ,जिनमें सीआईएसएफ प्रोटेक्टर चार जीत, एक ड्रॉ और एक हार के साथ 13 अंक जुटा कर सबसे आगे है। गढ़वाल डायमंड ने पांच में से चार मैच जीते और एक हार मिली है। गढ़वाल के 12 अंक हैं। दिल्ली टाइगर्स और शास्त्री ने छह छह मैच खेले हैं और क्रमश: 12 और 10 अंक जोड़े हैं।

## रियाल मैड्रिड को मिली स्पेनिश लीग में पहली हार

मैड्रिड, 8 नवंबर। रियाल मैड्रिड को स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लिगा के वर्तमान सत्र में अपनी पहली हार का सामना करना पड़ा जिससे वह शीर्ष पर पहुंचने से चूक गया। रायो वालेकाना ने 3-2 से जीत दर्ज करके रियाल मैड्रिड के छह मैचों से चला आ रहे विजय अभियान पर रोक लगाई। इस हार से रियाल का फिर से शीर्ष पर पहुंचने का सपना भी चकनाचूर हो गया । रियाल मैड्रिड अब अपने चिर प्रतिद्वंदी बार्सिलोना से दो अंक पीछे दूसरे स्थान पर है। रियाल मैड्रिड की यह वर्तमान सत्र में सभी प्रतियोगिताओं में केवल दूसरी हार है। इससे पहले उसे चैंपियंस लीग के ग्रुप चरण में लिपजिग से हार का सामना करना पड़ा था। रियाल मैड्रिड ने इस सत्र में जो पहले 19 मैच खेले थे उनमें से 15 में उसने जीत दर्ज की थी जबकि तीन मैच ड्रा रहे थे। रायो ने पूरे मैच के दौरान बेहतर खेल दिखाया तथा रियाल मैड्रिड पर 21 मैचों में अपनी दूसरी जीत दर्ज की। इससे पहले उसने 2019 में रियाल मैड्रिड को हराया था।

## हरमनप्रीत ने कहा, हमें कार्ड लेने से बचना होगा

नयी दिल्ली, 8 नवंबर। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह को खुशी है कि एफआईएच प्रो लीग के मैचों में मजबूत प्रतिद्वंद्वियों के सामने गलतियां करने के बावजूद उनकी टीम ने संयम बनाए रखा लेकिन उन्होंने कहा कि उनके खिलाड़ियों को कार्ड लेने से बचना होगा। भारतीय टीम ने पिछले सप्ताह भुवनेश्वर में प्रो लीग के मैचों में ठोस प्रदर्शन किया। उसने न्यूजीलैंड को 7-4 से करारी शिकस्त दी जबकि स्पेन को पेनल्टी शूटआउट में 3-1 से हराया। इस टूर्नामेंट में भारत की अगुवाई करने वाले हरमनप्रीत ने कहा कि आगामी विश्वकप से पहले कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें टीम सुधार कर सकती है। विश्व कप अगले साल 13 जनवरी से भुवनेश्वर और राउरकेला में खेला जाएगा। हरमनप्रीत ने हॉकी इंडिया की विज्ञिप्त में कहा," टीम ने इन मैचों में अच्छा प्रयास किया लेकिन हम कार्ड हासिल करने से बच सकते हैं। क्योंकि इससे हम एक खिलाड़ी को गंवा देते हैं और ऐसे में अन्य खिलाड़ियों को अतिरिक्त प्रयास करने होते हैं।" उन्होंने कहा," एक खिलाड़ी के कम होने पर हम अपनी टीम का संयोजन कैसे तैयार करें इसको लेकर हम अभ्यास करते हैं। इसलिए कार्ड मिलने के बावजूद हमने अच्छी तरह से बचाव किया लेकिन फिर भी कार्ड लेने से बचना महत्वपूर्ण है।"

## सबलेंका को हराकर गर्सिया ने जीता डब्ल्यूटीए फाइनल्स का खिताब

फोर्ट वर्थ, 8 नवंबर। कैरोलीन गर्सिया ने आर्यना सबलेंका को सीधे सेटों में हराकर डब्ल्यूटीए फाइनल्स टेनिस टूर्नामेंट का एकल खिताब जीता। गर्सिया को पहले सेट में जूझना पड़ा लेकिन आखिर में उन्होंने सबलेंका पर 7-6 (4), 6-4 से जीत दर्ज की। छठी वरीयता प्राप्त गर्सिया सत्र की आखिरी प्रतियोगिता को जीतने वाली दूसरी फ्रांसीसी खिलाड़ी बन गई है। उनसे पहले 2005 में एमेली मौरेस्मो ने यह चैंपियनशिप जीती थी। वह इससे पहले आखिरी साल था जब अमेरिका में इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इससे पहले वेरोनिका कुद्रमेतोवा और एलिस मर्टेंस ने मौजूदा चैम्पियन बारबोरा क्रेजिसिकोवा और कटरीना सिनियाकोवा को 6-2, 4-6, 11-9 से हराकर युगल खिताब जीता। कुद्रमेतोवा और मर्टेंस टाईब्रेकर में एक समय 7-2 से पीछे चल रही थी लेकिन इसके बाद उन्होंने लगातार छह अंक बनाकर खिताब अपने नाम किया। क्रेजिसिकोवा और सिनियाकोवा ने इस साल जिन तीन ग्रैंड स्लैम प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था उनमें उन्होंने खिताब जीता था लेकिन वह अपने सत्र का शानदार अंत नहीं कर पाए।

# नीदरलैंड के स्टीफन मायबर्ग ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से लिया सन्यास

एडिलेड, 8 नवंबर। टी-20 विश्वकप में दक्षिण अफ्रीका को सेमीफाइनल की रेस से बाहर करने वाली नीदरलैंड टीम के सलामी बल्लेबाज स्टीफ़न मायबर्ग ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की है।

मायबर्ग ने सोमवार को इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट में लिखा, 'हैंगिंग अप द बूट्स...। ईश्वर महान है। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि मैं विश्व कप में अपना करियर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ जीत के साथ समाप्त करूंगा। यह याद हमेशा ताजा रहेगी। मैं केएनबीसी क्रिकेट और नीदरलैंड का आभारी हूं। जीसस,दोस्त, परिवार, प्रायोजक और सभी समर्थकों को मैं केवल धन्यवाद कह सकता हूं।

उन्होने कहा कि मैने अपने परिवार के साथ अधिक समय बिताने के लिए सन्यास का मन बनाया है। हालांकि वह क्लब स्तर पर खेलते रहेंगे। गौरतलब है कि पिछले रविवार को टी-20 विश्वकप के अपने अंतिम लीग मैच में नीदरलैंड ने दक्षिण अफ्रीका को जबरदस्त उलटफेर करते हुये 13 रन से हरा दिया था। इस मैच में 38 वर्षीय मायबर्ग ने मात्र 30 गेंदों में 37 रन बना कर अपनी टीम को मजबूत आधार दिया जिसकी बदौलत नीदरलैंड चार विकेट पर 158 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा कर सकी थी। प्रिटोरिया में जन्मे मायबर्ग ने 2011 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया और अपने करियर में 22 वनडे और 45 टी-20 मैच खेले हैं। उन्होने इस साल की शुरुआत में न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज के बाद वनडे से संन्यास ले लिया था। मायबर्ग ने अपने टी-20 करियर में 21.78 के औसत और 114.51 के स्ट्राइक रेट से 915 रन बनाये हैं। वह मैक्स ओडॉव और बेन कूपर के बाद टी-20 इंटरनेशनल में नीदरलैंड के लिए तीसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं।

## एमआई केपटाउन 'एसए20' लीग के शुरुआती मैच में पार्ल रॉयल्स की मेजबानी करेगा

केपटाउन, 8 नवंबर। एमआई केपटाउन की टीम एसए20 लीग (दक्षिण अफ्रीका की नयी घरेलू टी20 लीग) में 10 जनवरी को यहां के न्यूलैंड्स क्रिकेट मैदान में खेले जाने वाले शुरुआती मैच में पार्ल रॉयल्स के खिलाफ अपने अभियान को शुरू करेगी। दक्षिण अफ्रीका की इस शीर्ष टी20 लीग के शुरू होने से दो महीने पहले छह स्थानों पर खेले जाने वाले 33 मैचों के पूर्ण मैच कार्यक्रम की घोषणा मंगलवार को की गई। अंतरराष्ट्रीय सितारों से सजी एमआई केपटाउन अपने घरेलू मैदान न्यूलैंड्स में दर्शकों को लुभाने की कोशिश करेगा। इस टीम में स्थानीय दिग्गज कागिसो रबाडा, अफगानिस्तान के स्पिनर राशिद खान, बड़े शॉट खेलने वाले इंग्लैंड के लियाम लिविंगस्टोन और दक्षिण अफ्रीका के उभरते हुए खिलाड़ी डेवाल्ड ब्रेविस जैसे खिलाड़ी शामिल हैं। रॉयल्स की टीम में भी सितारों की कमी नहीं है। इंग्लैंड के सीमित ओवरों के प्रारूप के कप्तान जोस बटलर के अलावा 2019 विश्व कप विजेता टीम के साथी जेसन रॉय और इयोन मोर्गन रॉयल्स का हिस्सा है। पूर्व खिलाड़ी जेपी डुमिनी इस टीम के मुख्य कोच है जिसमें डेविड मिलर, लुंगी एनगिडी और तबरेज शम्सी की स्थानीय तिकड़ी भी मौजूद है। इस लीग के सभी मैच भारत में वायाकॉम 18 स्पोर्ट्स पर प्रसारित होंगे। लीग आयुक्त ग्रीम स्मिथ ने कहा, एसए20 के शुरूआती सत्र के लिए कार्यक्रम की घोषणा करना हम सभी के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।"

# एआईएफएफ की 80,000 रुपये मासिक वेतन पर 50 पेशेवर रेफरी रखने की योजना

नयी दिल्ली, 8 नवंबर। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) देश में रेफरी के स्तर को ऊपर उठाने के उद्देश्य से अनुबंध के आधार पर 50 रेफरी नियुक्त करने और उन्हें मासिक वेतन के रूप में 'अच्छी' राशि का भुगतान करने की तैयार कर रहा है। एआईएफएफ की कोशिश है कि रेफरी को आजीविका के लिए किसी और काम का सहारा ना लेना पड़े। एआईएफएफ के अध्यक्ष कल्याण चौबे ने कहा कि रेफरी के स्तर में तभी सुधार किया जा सकता है जब भारतीय रेफरी अपने परिवार को चलाने के लिए पर्याप्त कमाई कर सके और इस पेशे को पूर्णकालिक काम की तरह करे।

इंडियन सुपर लीग टीमों के विदेशी कोच भारतीय रेफरी की उनकी 'त्रुटियों' के लिए आलोचना करते रहे हैं। चौबे ने मंगलवार को पीटीआई-भाषा से कहा, "आईएसएल, आई-लीग या संतोष ट्रॉफी जैसे बड़े टूर्नामेंटों में रेफरी के गलत फैसले से जुड़ी शिकायतें मिलती रही है। इससे टीमों का प्रदर्शन प्रभावित होता है।"

उन्होंने बताया, मौजूदा समय में रेफरी का पारिश्रमिक बहुत कम है। राज्य लीग में एक रेफरी को 2500 से 5000 रुपये और राष्ट्रीय लीग में 8000 से 10,000 रुपये तक मिलते हैं। यह सालाना ढाई लाख रुपये से तीन लाख रुपये होते हैं जो आजीविका चलाने के लिए काफी कम हैं। "

उन्होंने कहा, हमने इस मुद्दे को सुलझाने के लिए तय किया है कि 50 रेफरी नियुक्त किए जाएंगे और उनमें से प्रत्येक को 50,000 से 80,000 रुपये प्रति माह का वेतन दिया जाएगा, जो एक रेफरी के लिए अपने परिवार के खर्चों को चलाने के लिए पर्याप्त होगा।" उन्होंने कहा कि ऐसा होने पर रेफरी पूरी तरह से अपने काम पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

## चंद्रपॉल, कादिर और एडवर्ड्स आईसीसी हाल ऑफ फेम में शामिल

दुबई, 8 नवंबर। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने मंगलवार को गुजरे जमाने के तीन महान खिलाडियों शिवनारायण चंद्रपॉल, चार्लोट एडवर्ड्स और अब्दुल कादिर को आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल किया है। आस्ट्रेलिया के सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2022 के पहले सेमीफाइनल में खेल शुरू होने से पहले तीनो खिलाडियों को सम्मानित किया जायेगा। इनमे से पाकिस्तान के अब्दुल कादिर को मरणोपांत यह सम्मान दिया जायेगा। आईसीसी के मुख्य कार्यकारी ज्योफ एलार्डिस ने कहा, आईसीसी हॉल ऑफ फेम उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों का जश्न मना रहा है जिन्होंने क्रिकेट के इतिहास को आकार दिया है। शिवनारायण, चार्लोट और अब्दुल के स्थायी योगदान को याद करना अद्भुत है। क्रिकेट के इन तीन दिग्गजों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर जबरदस्त सफलता मिली और वे आईसीसी हॉल ऑफ फेमर्स के रूप में अपनी स्थिति के बड़े पैमाने पर हकदार हैं।

## भारतीय फुटबॉल को आगे बढ़ाने के लिए जमीनी स्तर पर निवेश एकमात्र तरीका : भूटिया

बेंगलुरू, 8 नवंबर। भारत के पूर्व फुटबॉल कप्तान बाइचुंग भूटिया का मानना है कि देश में खेल को आगे ले जाने के लिए जमीनी स्तर पर विकास में निवेश ही एकमात्र रास्ता है। भूटिया ने कहा कि देश में सभी उम्र के फुटबॉलरों को अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए पर्याप्त प्रतिस्पर्धी मैच खेलने का मौका मिलना चाहिए।

भूटिया ने मंगलवार को एक कार्यक्रम के इतर से कहा, "आपको युवाओं, जमीनी स्तर के विकास में निवेश करने की जरूरत है और फिर इससे खिलाड़ियों और क्लब को फायदा होगा। इसी तरह देश में फुटबॉल का विकास होता है। अगर आप भारत में फुटबॉल को वास्तव में आगे ले जाना चाहते हैं तो यही एकमात्र तरीका है।"

उन्होंने कहा, "हमें ग्रामीण इलाकों, जिलों और राज्य स्तर पर बच्चों तक पहुंचना होगा। दुख की बात है कि हम उन्हें प्रतिस्पर्धा का मौका नहीं दे रहे। बच्चे अपने स्वयं के आयु वर्ग के भीतर प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम नहीं हैं। यह सबसे बड़ी चुनौती है।" अपने जमाने के दिग्गज स्ट्राइकर भूटिया ने यूरोपीय क्लबों द्वारा अपनाए जाने वाले फॉर्मूले को अपनाने की भी वकालत की जो युवा प्रतिभाओं में निवेश करते हैं और उन्हें स्तरीय खिलाड़ी बनने के लिए तैयार करते हैं।

उन्होंने कहा, "इस मॉडल को भारतीय फुटबॉल क्लबों द्वारा अपनाया जाना चाहिए। इस तरह आप जमीनी स्तर पर निवेश करते हैं। अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में बहुत सारे क्लब जमीनी स्तर से युवा प्रतिभा को अपने साथ जोड़ते हैं, उन्हें प्रशिक्षित करते हैं और फिर उन्हें यूरोप के बड़े क्लबों में बेचते हैं। वे वापस जाते हैं और अपने देश के लिए खेलते हैं और यहीं से देश को भी प्रतिभा का लाभ मिलता है।" भूटिया ने कहा, "इस तरह फुटबॉल बढ़ता है।

# सूर्यकुमार ने लंबा सफर तय किया, उम्मीदों से बेहतर कर रहा : एबी डिविलियर्स

नयी दिल्ली, 8 नवंबर। ऑस्ट्रेलिया में खेले जा रहे टी20 विश्व कप के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजों में से एक सूर्यकुमार यादव ने '360 डिग्री' बल्लेबाज के तौर पर एबी डिविलियर्स से अपनी तुलना को अपरिपक्व कहा था लेकिन दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज ने इसे उचित करार दिया। क्रिकेट में मैदान के हर तरफ शॉट लगाने की काबिलियत के कारण डिविलियर्स को मिस्टर 360 डिग्री के उपनाम से जाना जाता है। सूर्यकुमार ने मौजूदा विश्व कप के पांच मैचों में 225 रन बनाये हैं जिसमें उन्होंने तीन अर्धशतकीय पारियां खेली हैं। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 193.97 का रहा है। उन्होंने मैदान के हर कोने में शॉट लगाने की अपनी क्षमता से विशेषज्ञों और प्रशंसकों को आश्चर्यचकित किया है। इस 32 साल के खिलाड़ी ने बल्लेबाजी के लिए मुश्किल परिस्थितियों में भी मन मुताबिक रन बटोरे।सूर्यकुमार ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पर्थ में ऐसी ही पारी खेली थी। डिविलियर्स से अपनी तुलना को खारिज करते हुएसूर्यकुमार ने कहा था कि सिर्फ एक ही खिलाड़ी 'मिस्टर 360 डिग्री' जैसे तमगे का हकदार है लेकिन दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान ऐसा नहीं मानते। उन्होंने कहा, मैं सूर्यकुमारके लिए बहुत खुश हूं। मुझे लगता है कि वह बहुत लंबा सफर तय कर चुका है। मुझे उम्मीद नहीं थी की वह इतना बेहतर करेगा।" डिविलियर्स ने कहा, "वह शुरुआत में

संभल कर खेलने के बाद गेंदबाजों पर दबदबा बनाता है। यह देखना दिलचस्प है और उसका भविष्य शानदार है।" डिविलियर्स से जब पूछा गया कि क्या समय आ गया है जब सूर्यकुमार यादव की तुलना उनसे की जाये तो उन्होंने कहा, "हां, वह मेरी तरह ही खेलता है। उसे सिर्फ अपने प्रदर्शन में निरंतरता पर ध्यान देना होगा। उसे अगले पांच-दस साल तक ऐसा ही करना होगा।" इस 38 साल के पूर्व खिलाड़ी ने कहा कि टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में चार सर्वश्रेष्ठ टीमें पहुंची है लेकिन अंतिम चार के फैसले के लिए और अधिक मैच खेले जाने चाहिए थे। भारत, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान की टीमें सेमीफाइनल में पहुंच चुकी हैं। इस टूर्नामेंट में कई उतार-चढ़ाव देखने को मिले। क्वालीफाइंग चरण के बाद बारह टीमों ने सुपर 12 चरण का गठन किया जिन्हें छह-छह टीमों के दो ग्रुप में बांटा गया। लीग चरण में टीमों ने पांच मैच खेले और डिविलियर्स के लिए यह संख्या के पर्याप्त नहीं है। उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि दुनिया की शीर्ष चार टीमें विश्व कप के सेमीफाइनल में हैं। मै यह भी मानता हूं कि इसे तय करने के लिए और अधिक मैच खेले जाने चाहिए थे।" उन्होंने कहा कि मुख्य चरण में हर टीमों को एक दूसरे का सामना करने का मौका मिलना चाहिए था और फिर आईपीएल की तर्ज पर अंतिम चार का आयोजन होना चाहिये। उन्होंने कहा, "मेरे मुताबिक यह सही होगा। इससे 99 प्रतिशत बार आप सर्वश्रेष्ठ टीम को फाइनल में पहुंचते देखेंगे।"

# ई.डब्ल्यु.एस. कोटे पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को चुनौती देंगे स्टालिन

## तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के स्टालिन ने अन्य पार्टियों का समर्थन पाने के लिए 12 नवम्बर को सर्वदलीय बैठक बुलाई

- **मुख्यमंत्री स्टालिन ने कहा है कि, कोर्ट के इस फैसले से 100 सालों से लड़ी जा रही लड़ाई को बहुत बड़ा आघात पहुंचा है, और इसके कारण सामाजिक समरसता को नुकसान पहुंचेगा।**

चेन्नई, 8 नवंबर (वार्ता)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एवं सत्तारूढ़ द्रविण मुन्नेत्र कषगम (द्रमुक) अध्यक्ष एम.के.स्टालिन ने 12 अक्टूबर को सभी विधायक दल के नेताओं की बैठक बुलाई है जिसमें इकोनॉमिकली वीकर सैक्शंस (ई.डब्ल्यू.एस.) को आरक्षण को लेकर आगे की कार्रवाई पर चर्चा होगी।

स्टालिन ने उच्चतम न्यायालय द्वारा ईडब्ल्यूएस के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण को बरकरार रखने के एक दिन बाद यह बैठक बुलाने का निर्णय लिया है।

मंगलवार को जारी आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया कि, बैठक 12 नवंबर को पूर्वाह्न 10.30 बजे राज्य सचिवालय के नमक्कल कविनार मालिगई में होगी।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि चूंकि यह आरक्षण सामाजिक न्याय और समानता को बनाए रखने और सामाजिक न्याय की नीति के खिलाफ है, इसलिए 12 अक्टूबर को सभी विधायक दलों के नेताओं की एक बैठक बुलाई गई है, ताकि आगे की कार्रवाई पर चर्चा की जा सके। मुख्यमंत्री ने सभी विधायक दलों के नेताओं को बैठक के लिए आमंत्रित करने के लिए पत्र भेज दिया है। बैठक में प्रत्येक पार्टी के दो प्रतिनिधियों को बैठक में भाग लेने की अनुमति है।

उल्लेखनीय है कि शीर्ष अदालत ने सोमवार को ईडब्ल्यूएस के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण को बरकरार रखने का फैसला किया है। इस फैसले पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए स्टालिन ने इसे सामाजिक न्याय को बनाए रखने के लिए सदियों पुराने संघर्ष के लिए एक झटका करार दिया।

स्टालिन ने कहा कि द्रमुक 2019 में अगड़ी जातियों को ईडब्ल्यूएस को 10 फीसदी आरक्षण की सुविधा देने वाले केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए कानून के खिलाफ कानूनी लड़ाई का नेतृत्व कर रही है। उन्होंने कहा कि इस मामले में आज दिए गए फैसले को सामाजिक न्याय को बनाए रखने के लिए सदियों पुराने संघर्ष के लिए एक झटका माना जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ईडब्ल्यूएस के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण के खिलाफ हमारी लड़ाई को आगे बढ़ाने के लिए अगला कदम पूरे फैसले का अध्ययन करने और कानूनी विशेषज्ञों के परामर्श के बाद तय किया जाएगा।

## झारखण्ड इनकम टैक्स छापे में 100 करोड़ रु. की सम्पत्ति बरामद हुई

नई दिल्ली, 8 नवंबर (वार्ता)। आयकर विभाग ने झारखंड में दो राजनेताओं और उनके सहयोगियों के यहां की गयी छापेमारी में दो करोड़ रुपये से अधिक की नकदी जब्त करने के साथ ही 100 करोड़ रुपये से अधिक के बेहिसा लेनदेन और निवेश किये जाने का पता लगाया है।

विभाग ने आज यहां जारी बयान में यह जानकारी देते हुये कहा कि गत चार नंबवर को यह कार्रवाई की गयी थी। दो राजनेताओं और उनके सहयोगियों के कोयला कारोबार, परिवहन, ठेका, लौह अयस्क खनन और कच्चे लौहे के उत्पादन से जुड़े कारोबार को लेकर यह छापेमारी की गयी। विभाग ने एक साथ रांची, गोड्डा, बेरमो, दुमका, जमशेदपुर, इाईबासा, पटना, गुरूग्राम और कोलकाता स्थित 50 परिसरों पर छापेमारी की।

इस दौरान जो साक्ष्य मिले उससे पता चला है कि इन समूहों ने कर चोरी के लिए विभिन्न तरीकों को अपनाया और व्यय को बहुत बढ़ा चढ़ा कर दिखाया।

# राजेश शर्मा को राष्ट्रीय ब्राह्मण शिरोमणि अवॉर्ड

*राष्ट्रदूत के सम्पादक राजेश शर्मा जी को सर्व ब्राह्मण महासभा ने राष्ट्रीय ब्राह्मण शिरोमणि अवॉर्ड से सम्मानित किया।*

- **सर्व ब्राह्मण महासभा द्वारा नई दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में आयोजित कार्यक्रम में, निरंजन पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरी महाराज ने यह अवॉर्ड दिया।**
- **सर्व ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश मिश्रा, हाई कोर्ट की पूर्व जस्टिस ज्ञान सुधा मिश्रा भी कार्यक्रम में मौजूद थे।**

नई दिल्ली, 8 नवम्बर (कासं)। सर्व ब्राह्मण महासभा की ओर से नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में आयोजित राष्ट्रीय ब्राह्मण अधिवेशन में दैनिक राष्ट्रदूत समाचार पत्र के संपादक राजेश शर्मा को राष्ट्रीय ब्राह्मण शिरोमणि अवॉर्ड से नवाजा गया।

समारोह में मुख्य अतिथि निरंजन पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरि महाराज ने यह अवॉर्ड भेंट किया।

इस मौके पर विशिष्ट अतिथि कानूनविद् एडवोकेट एच.सी. गणेशिया, उच्चतम न्यायालय की पूर्व न्यायाधिपति जस्टिस ज्ञान सुधा मिश्रा, सर्व ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. सुरेश मिश्रा, संयोजक राकेश के. शुक्ला और मेहंदीपुर बालाजी ट्रस्ट के शिक्षा सचिव सुदीप तिवाड़ी मौजूद थे।

इस राष्ट्र स्तरीय समारोह का संचालन जानी-मानी कलाकार रमा पाण्डे और आचार्य राजेश्वर तथा पं. अभिषेक अवस्थी ने किया। महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष दिनेश शर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में देशभर से 25 राज्यों के प्रतिनिधि शरीक हुए।

जिनमें आईएएस, आईपीएस, फिल्म निर्माता, कानूनविद, चिकित्सा, ज्योतिष, संगीत-साहित्य, गौ सेवा और पत्रकारिता सेवा से जुड़े लोग भी शामिल थे।

## रिज़ल्ट...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

है जिससे सभी कार्य नहीं हो पा रहे हैं। अभिभावक बार- बार स्कूलों में जाकर जानकारी लेते हैं लेकिन स्कूलों के संस्था प्रधानों से संतोषजनक जबाब नहीं मिल पा रहा है। कक्षा पांचवीं में 14 लाख व 53 हजार और कक्षा आठवीं में 12 लाख 63 हजार विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी। अंकतालिका कब तक आयेगी इसके बारे मे कोई जानकारी नहीं है। राज्य में इतना समय तो कक्षा 10 व 12वीं की अंकतालिका आने में भी नहीं लगता है। शिक्षक संघ रेसटा के प्रदेशाध्यक्ष मोहर सिंह सलावद का कहना है कि राज्य के लाखों विद्यार्थियों को समय पर अंकतालिका नहीं मिलना खेद का विषय है। इससे विद्यार्थियों को मिलने वाली योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है। शिक्षक संघ रेसटा की राज्य के शिक्षा मंत्री व निदेशक से मांग है कि इस मामले में तुरंत संज्ञान लेते हुए स्कूलों में अंकतालिकाएं भिजवाई जाएं।

## 'जो नेता...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

जिम्मेदारी है। अगर वे अपनी नैतिक जिम्मेदारी नहीं निभाते हैं तो समय किसी का गुलाम नहीं है। जब समय आएगा तो अपने आप फैसला होगा। पार्टी अब भी हर बात को नोट कर रही है। चाहे प्रदेश कांग्रेस कमेटी हो या फिर ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी। गलत बयानबाजी करने वाले हर नेता की बात नोट की जा रही है। चाहे मंत्री हो या विधायक इस तरह नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि अगर जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग कुछ बोलकर पार्टी नुकसान करते हैं तो जनता और कार्यकर्ता उन्हें माफ नहीं करेंगे।"

## बाल श्रम के...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

बताया कि, अभियुक्त मोहम्मद सय्यूम उन्हें यहां लेकर आया है। बच्चों ने बताया कि, वह उनसे जबरन चूड़ियां बनवाने का काम करवाता है। करीब पंद्रह घंटे काम कराने के बाद भी उन्हें भरपेट भोजन भी नहीं दिया जाता। इसके अलावा न तो उन्हें बाहर आने-जाने दिया जाता है और ना ही किसी व्यक्ति से बातचीत करने देता है। इस पर पुलिस ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर अदालत में आरोप पत्र पेश किया।

## चीन के राष्ट्रपति शी यूक्रेन में न्युक्लियर बम...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

यही इंगित किया है कि वह परमाणु हथियारों का प्रयोग कर सकती है।"

"इसके साथ ही उसने कई बार यह भी कहा है कि वह परमाणु हथियारों का प्रयोग नहीं करेगा। अत: इस मामले में रूस की स्थिति स्पष्ट नहीं है, लेकिन वह फिर भी चिन्ताजनक है। आप परमाणु हथियार को खिलौने की जैसे इस्तेमाल नही कर सकते।" अमेरिका ने कहा है कि ऐसा कोई संकेत नहीं है कि रूस परमाणु हथियारों के उपयोग की तैयारी कर रहा है, लेकिन उसने मॉस्को की परमाणु हथियारों की बात को भयाक्रांत करने वाला बताते हुए उसकी आलोचना की। वॉशिंगन और ग्रुप 7 के अन्य देशों ने भी मॉस्को के इस दावे को खारिज किया है कि कीव ने उसकी भूमि पर "डर्टी बम" का प्रयोग करने की योजना बनाई थी। डर्टी बम एक रेडियोएक्टिव विस्फोटक होता है जिसका उद्देश्य भारी जनहानि करने के बजाए प्रदूषण फैलाना होता है।

व्लादिवोस्तोक स्थित फार ईस्टर्न फैडरल यूनिवर्सिटी में इन्टरनेंशन स्टडीज़ के एक एसोसिएड प्रोफेसर ऑर्टोम ल्यूकिन झाउ की इस बात से सहमत हैं, कि यूक्रेन में परमाणु हथियारों को लेकर शी के विरोध के बावजूद रूस के साथ चीन के संबंध खराब नही होंगे। उन्होंने कहा कि "रूस ने अपने पूर्व उन अन्तर्राष्ट्रीय बयानों से कभी कि नारा नहीं किया कि परमाणु हथियारों का इस्तेमाल कभी नहीं करना चाहिए और यह कि परमाणु युद्ध कभी नहीं जीते जा सकते तथा इन्हें कभी नहीं लड़ा जाना चाहिए।" उन्होंने कहा कि इसलिए शुल्ज़ को दिया गया शी का बयान मॉस्को की स्थिति के अनुरूप है, लेकिन रूस ने नाटो को सैनिक भेजने से डराने के लिए पश्चिमी देशों के खिलाफ इन हथियारों के संभावित प्रयोग का इशारा किया था और वह अब भी इनके इस्तेमाल की धमकी दे रहा है। ईस्ट चाहना नॉर्मल यूनिवर्सिटी के सैन्टर फोर रशियन स्टडीज़ के एक एसोसिएट प्रोफेसर वॉन क्विनसांग ने भी कहा कि परमाणु हथियारों के इस्तेमाल के प्रयोग का विरोध करने से दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंध खराब नहीं होंगे क्योंकि परमाणु हथियारों के संचालन नियमों को तय करने में रूस की भी भूमिका थी।

## भारत-फ्रांस के...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

हैं। यहां के आसमान में गूंजती राफेल, सुखोई और तेजस जैसे एडवांस्ड फाइटर जेट की आवाजें दुश्मनों को डराने के लिए काफी हैं। गौरतलब है कि इन दिनों यहां भारत और फ्रांस की एयरफोर्स के बीच गरुड़-7 युद्धाभ्यास किया जा रहा है।

करीब दस दिन से जारी इस युद्धाभ्यास में आज दोनों देशों के एयर चीफ ने भी फाइटर जेट्स में करीब एक घंटे तक उड़ान भरी। इस अभ्यास में हवा में फ्यूल भरने से लेकर वैपन सिस्टम के नए सिरे से यूज करने की प्रैक्टिस की गई। मंगलवार को एक साथ 10 फाइटर जेट और एक ट्रांसपोर्टर एयरक्राफ्ट ने एयरबेस से उड़ान भरी। ये सभी फाइटर जेट हवा में प्रैक्टिस करते रहे, वहीं ट्रांसपोर्टर एयरक्राफ्ट ने हवा में विमानों में फ्यूल भरने की प्रैक्टिस की।

मंगलवार को सुबह 11 बजकर 20 मिनट पर जोधपुर एयरबेस से राफेल, सुखोई और तेजस फाइटर जेट ने उड़ान भरी। खास बात यह भी रही कि इस युद्धाभ्यास में भारतीय वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी.आर चौधरी ने राफेल और फ्रांसीसी एयरफोर्स फ्रेंच आर्मी डे एयर के चीफ जनरल स्टीफन ने सुखोई में को-पायलट के तौर पर उड़ान भरी।

ये दूसरा मौका है जब जोधपुर एयरबेस पर गरुड़ युद्धाभ्यास के दौरान दोनों देशों के चीफ ने एक दूसरे के फाइटर उड़ाए। इससे पहले साल 2014 में गरुड़ के 5वें संस्करण के दौरान भारतीय वायुसेना के तत्कालीन चीफ अरूप राहा और फ्रांसीसी चीफ डेनिस मेर्सियर ने उड़ान भरी थी।

जोधपुर में भारत और फ्रांस की एयरफोर्स का संयुक्त युद्धाभ्यास 26 अक्टूबर से शुरू हुआ। यह 12 नवंबर तक चलेगा। इस वॉर प्रैक्टिस के जरिए दोनों देशों की एयरफोर्स के पायलट्स एक-दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा कर रहे हैं। दोनों देशों की एयरफोर्स के बीच गरुड़ सीरिज के पहले छह युद्धाभ्यास हो चुके हैं, उनमें से तीन भारत में और तीन फ्रांस में हुए हैं। इससे पहले वर्ष 2014 में जोधपुर में यह युद्धाभ्यास हो चुका है।

## नीतीश, गुजरात...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

गुजरात में एक राजनैतिक ताकत के रूप में जे.डी.यू. पतनोन्मुखी रही है। 2002 में, जे.डी.यू. ने गुजरात की 29 सीटों पर चुनाव लड़ा था तथा केवल 2 सीटें जीती थीं, जबकि उसके 27 उम्मीदवारों की जमानतें जब्त हो गई थीं। 2007 में, पार्टी ने 35 सीटों पर अपने प्रत्याशी खड़े किये थे तथा केवल 1 सीट जीती थी। 2017 के चुनावों में जिन 28 सीटों पर उसने चुनाव लड़ा था, उनमें से एक भी सीट वह नहीं जीत पायी थी।

पिछले वर्षों में, वसावा ने विभिन्न राजनैतिक दलों की तरफ मित्रता का हाथ बढ़ाया है। 2017 के गुजरात चुनावों में, उन्होंने कांग्रेस के साथ गठबंधन किया था, जिसने बी.टी.पी. को 5 सीटें आवंटित की थीं।

इनमें से बी.टी.पी. दो सीटों पर जीती थी- डेडिया पाड़ा से महेश वसावा तथा भरूच जिले के झगाड़िया सीट से स्वयं छोटूभाई चुनाव जीते थे। इस साल के शुरु में, वसावा ने आप के साथ चुनाव-पूर्व गठजोड़ की घोषणा कर दी थी, लेकिन यह समझौता उन्होंने एकपक्षीय रूप से मई में खत्म कर दिया था।

# भारत जोड़ो यात्रा अब तीन दिन पहले, 3 दिसंबर को आएगी राजस्थान में

## पिड़ावा से राजस्थान में प्रवेश करेगी, 6 जिलों से होते हुए मेवात में जायेगी, मालाखेड़ा में बड़ी सभा होगी

- **पायलट, गहलोत, डोटासरा सहित सभी नेता यात्रा में मौजूद रहेंगे।**
- **जिन 6 जिलों में भारत जोड़ो यात्रा जाएगी, वो पायलट की मजबूत पकड़ वाले क्षेत्र माने जाते हैं।**

जयपुर, 8 नवम्बर (का.प्र.)। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा का कार्यक्रम राजस्थान में कुछ बदलाव के साथ जारी होगा क्योंकि जो यात्रा 6 दिसंबर को राजस्थान में प्रवेश करने वाली थी वह अब 3 या 4 दिसंबर को ही राजस्थान में आ जाएगी। यात्रा को लेकर यह तय है कि रूट में बड़ा बदलाव नहीं है। वह झालावाड़ के बाद कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, दौसा और अलवर होते हुए मेवात में जाएगी। इस दौरान अलवर के मालाखेड़ा में राहुल गांधी की बड़ी आमसभा होगी।

बदलाव के बाद संभावित कार्यक्रम के अनुरूप यात्रा अब 3 से 4 दिसंबर की मध्यरात्रि झालावाड़ जिले के पिड़ावा से राजस्थान में प्रवेश करेगी।

यहां मध्यप्रदेश और राजस्थान की सरहद पर इसका स्वागत मुख्यमंत्री अशोक गहलोत करेंगे। इस मौके पर पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट, प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिहं डोटासरा, सभी मंत्री और विधायकों सहित पार्टी पदाधिकारी भी उपस्थित रहेंगे। यात्रा की तैयारियों के सिलसिले में जयपुर आए विभाकर शास्त्री ने बताया की यात्रा का रूट एक दो दिन में फाइनल कर दिया जाएगा और उसके बाद विस्तृत कार्यक्रम जारी किया जाएगा।

इससे पहले मुख्यमंत्री गहलोत ने शुक्रवार को खान मंत्री प्रमोद जैन भाया से मुलाकात कर यात्रा की तैयारियों के संबंध में जानकारी ली। मध्यप्रदेश की सरहद तक राहुल के साथ वहां के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और कमलनाथ भी आएंगे।

दिग्विजय सिंह तो राजस्थान में भी यात्रा के साथ रहेंगे लेकिन कमलनाथ वापस लौट जाएंगे। संभावित कार्यक्रम के अनुसार यात्रा के दौरान कांग्रेस पार्टी की ओर से विभिन्न कॉलेजों और यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं से भी राहुल गांधी की मुलाकात करवाई जाएगी। यात्रा प्रमुख रूप से झालावाड़-बारां, कोटा-बूंदी के गुर्जर बाहुल्य क्षेत्रों के साथ सवाईमाधोपुर, दौसा अलवर होते हुए मेवात में प्रवेश करेगी। इस क्षेत्र की सभी गुर्जर बहुल सीटों पर सचिन पायलट का खासा प्रभाव माना जाता है।

कांग्रेस पार्टी और सरकार इस यात्रा के जरिए जनता को यह संदेश भी देना चाहेगी कि पार्टी पूर्णत: एकजुट है और सरकार या पार्टी में कहीं कोई गुटबाजी या अस्थिरता का माहौल नहीं है।

यात्रा की तैयारियों का जायजा लेने राहुल के प्रतिनिधि सुशांत मिश्रा व उनकी टीम झालावाड़ पहुंच चुकी है। मिश्रा राहुल की यात्रा के रूट प्रबंधन और मीटिंग का काम देख रहे हैं। मिश्रा ने झालावाड़ के पिड़ावा क्षेत्र का शनिवार को दौरा किया था।

# कांग्रेस का ट्विटर हैण्डल ब्लॉक नहीं होगा

## कर्नाटक हाई कोर्ट ने बैंगलुरु की स्थानीय अदालत के इस संबंध में दिये गये फैसले पर तत्काल रोक लगाई

- **जैसा कि विदित है कि, के.जी.एफ. चैप्टर-2 फेम म्यूज़िक कंपनी ने सोमवार को कांग्रेस के खिलाफ उनकी फिल्म के गानों एवं वीडियो को बिना इजाजत इस्तेमाल करने के आरोप लगाये थे जिस पर बैंगलुरु की कॉमर्शियल कोर्ट ने कांग्रेस व भारत जोड़ो यात्रा, दोनों के ट्विटर हैण्डल को ब्लॉक करने का आदेश दिया था।**

बैंगुलुरु, 8 नवम्बर। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने मंगलवार को कांग्रेस पार्टी और उसकी भारत जोड़ो यात्रा के ट्विटर अकाउंट को ब्लॉक करने वाले विशेष अदालत के एक आदेश को रद्द कर दिया। बेंगलुरु शहरी जिले की एक विशेष अदालत ने सोमवार को ट्विटर को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) और इसकी 'भारत जोड़ो यात्रा' के 'हैंडल' को सुनवाई की अगली तारीख तक "ब्लॉक" करने का निर्देश दिया था। हालांकि अब कर्नाटक हाईकोर्ट ने इस फैसले को रद्द कर दिया है। बेंगलुरु शहरी जिले की एक विशेष अदालत का आदेश एमआरटी म्यूजिक द्वारा एक वाद दायर किए जाने के बाद आया था। एमआरटी म्यूजिक 'केजीएफ चैप्टर 2' फिल्म के 'साउंड ट्रैक' का कॉपीराइट धारक है। इसने अदालत में वाद दायर करते हुए आरोप लगाया कि कांग्रेस ने अपने 'आईएनसी इंडिया' और 'भारत जोड़ो' ट्विटर हैंडल से कुछ वीडियो ट्वीट किए थे जिनमें हिट फिल्म केजीएफ-2 के म्यूजिक का इस्तेमाल किया गया था।

कोर्ट ने अपने फैसले में कहा था कि अगर साउंड रिकॉर्ड्स के अवैध इस्तेमाल को प्रोत्साहित किया गया तो इससे म्यूजिक लेबल को नुकसान होगा और बड़े पैमाने पर पाइरेसी को बढ़ावा मिलेगा। कोर्ट ने आगे कहा, 'शिकायतकर्ता ने विशेष रूप से सीडी पेश की और अवैध रूप से इस्तेमाल किए गए गानों के संस्करण के साथ ऑरिजिनल गाने को दिखाया।

## भारत जी-20 का अध्यक्ष

नई दिल्ली, 8 नवम्बर। एक दिसंबर से भारत जी-20 की अध्यक्षता संभालेगा। इससे पहले प्र.मंत्री नरेंद्र मोदी ने आज वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए भारत के जी-20 प्रेसीडेंसी के, थीम और वेबसाइट का अनावरण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि इस लोगो और थीम के जरिए हमने एक संदेश दिया है। उन्होंने कहा, मैं भारत की जी20 अध्यक्षता के ऐतिहासिक अवसर पर देशवासियों को बधाई देता हूं। वसुधैव कुटुम्बकम विश्व के प्रति भारत की करुणा का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि जी-20 ऐसे देशों का समूह है, जिनका आर्थिक सामर्थ्य, विश्व की 85 जीडीपी का प्रतिनिधित्व करता है। जी-20 उन 20 देशों का समूह है, जो विश्व के 75 फीसदी व्यापार का प्रतिनिधित्व करता है।

## कर्नाटक में कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष ने मणि...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

ने यह नाम भारतवासियों का उपहास करने के उद्देश्य से दिया था तथा बहुत से लोगों ने इसे चुनौती भी दी थी। अपनी बात पर दृढ़ता से अड़े हुये जर्कीहोली ने कहा कि "हिन्दू" शब्द का अर्थ बहुत गंदा है तथा उन्होंने अपनी इस टिप्पणी को वापस लेने के कांग्रेस नेतृत्व के हुक्म के आगे सिर झुकाने से इंकार कर दिया। जब मीडियाकर्मियों ने कांग्रेस नेतृत्व के आदेश पर उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही, तो उन्होंने मीडियाकर्मियों से कहा, "मैं सही हूँ, वे भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि हिन्दू शब्द फारस से आया है। मैंने तो किसी की आलोचना भी नहीं की है, और हिन्दूओं की तो बिल्कुल भी नहीं। इसलिये माफी माँगने का या बयान को वापस लेने का प्रश्न ही कहाँ उठता है। अगर मैं गलत सिद्ध हो जाऊं, तो क्षमा माँगने की तो बात ही क्या है, मैं पार्टी विधायक पद से इस्तीफा दे दूँगा।"

उन्होंने रविवार को कर्नाटक के बेलागावी जिले की एक जनसभा को संबोधित करते हुए वस्तुत: कहा था कि "हिन्दू" एवं "हिन्दू धर्म" शब्दों की उत्पत्ति या मूल पर चर्चा होनी चाहिये, क्योंकि ये शब्द "हमारे" नहीं हैं। उन्होंने कहा, "हिन्दू शब्द की उत्पत्ति कहाँ से हुई? क्या यह शब्द हमारा है? यह फारसी है।" उन्होंने कहा कि तत्कालीन फारस आज इराक, ईरान, कज़ाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के रूप में हैं। कांग्रेस महासचिव तथा कर्नाटक प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला ने जर्कीहोली के बयान की निन्दा की तथा उनकी टिप्पणी से पार्टी को अलग रखने की कोशिश की। लेकिन जो नुकसान हो सकता था, वह हो चुका है क्योंकि भाजपा नेता कांग्रेस पर सीधा हमला बोल रहे हैं तथा इसे हिन्दू-विरोधी बता रहे हैं।

भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि यह संभव है कि अल्पसंख्यक समुदाय के वोट प्राप्त करने की कोशिश में, राहुल गांधी ने, अपनी भारत जोड़ो यात्रा के कर्नाटक से गुजरते समय ये टिप्पणियाँ अपनी पार्टी नेताओं तक पहुँचाई हों। भाजपा नेता का मकसद साफ था- ऐसे समय पर, जब राजनीति एवं राज्य व्यवस्था साफ तौर पर बँटी हुई है, कांग्रेस को हिन्दू-विरोधी तथा अल्पसंख्यक-समर्थन पार्टी के रूप में प्रस्तुत करना।

इस बात को भाँपते हुये, कांग्रेस की कोशिश है कि वह स्वयं को इस पूरे विवाद से अलग रखे, लेकिन इस मुद्दे को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने की भाजपा की दक्षता के चलते, कांग्रेस ने भाजपा को एक ऐसा मुद्दा थमा दिया है कि वह कांग्रेस को कहीं का नहीं छोड़े। भाजपा ने, अधिकृत रूप से, ट्विटर पर कांग्रेस के लिये एक जटिल प्रश्न रखते हुये, उससे पूछा कि क्या कर्नाटक के कार्यकारी अध्यक्ष सतीश जर्कीहोली की टिप्पणी कांग्रेस पार्टी का विचार है।

इधर कांग्रेस नेता सुरेजवाला ने एक ट्वीट में कहा है: "हिन्दू एक जीवन-शैली एवं सभ्यता से जुड़ी एक वास्तविकता है। कांग्रेस ने हमारे राष्ट्र का निर्माण इस रूप में किया है कि वह प्रत्येक धर्म, आस्था एवं धार्मिक मत का सम्मान करे। यह भारत का सारतत्व है। सतीश जर्कीहोली से जुड़ा बयान अत्यधिक दुर्भाग्यपूर्ण तथा खारिज किये जाने योग्य है। हम (कांग्रेस) साफ तौर पर इसकी भर्त्सना करते हैं।"

## कुलदीप कुमार कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता बने

नयी दिल्ली, 8 नवंबर (वार्ता)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं हिमाचल प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष कुलदीप कुमार को राष्ट्रीय प्रवक्ता नियुक्त किया है।

कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पार्टी महासचिव संगठन तथा संचार विभाग के महासचिव ने इस पद के लिए कुमार के नाम की संस्तुति दी है और उन्हें पार्टी का राष्ट्रीय प्रवक्ता नियुक्त किया गया है। उन्होंने बताया कि कुमार हिमाचल प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष रहे हैं। उन्हें तत्काल प्रभाव से राष्ट्रीय प्रवक्ता के तौर पर काम शुरू करने के लिए कहा गया है।

# भारत का पहला प्राइवेट रॉकेट जल्द लॉन्च होगा

## हैदराबाद स्थित निजी कंपनी "स्काईरूट एयरोस्पेस" ने घोषणा की कि, रॉकेट अपने साथ तीन लोगों को स्पेस (अंतरिक्ष) में ले जायेगा, इसकी लॉन्चिंग 12 से 16 नवम्बर के बीच होगी

- **स्काईरूट एयरोस्पेस देश की पहली निजी कंपनी है जो अपना खुद का स्पेस मिशन लॉन्च करने जा रही है।**
- **गौरतलब है कि, 2020 में भारतीय स्पेस प्रोग्राम को निजी कंपनियों के लिए खोलने की घोषणा हुई थी, इतने कम वक्त में इस कंपनी ने अपना खुद का रॉकेट तैयार कर लिया है, यह कंपनी के लिए एक खास उपलब्धि है।**

नई दिल्ली, 8 नवम्बर। भारत का पहला प्राइवेट रॉकेट विक्रम-एस 12 नवंबर से 16 नवंबर के बीच लॉन्च के लिए तैयार है। हैदराबाद स्थित अंतरिक्ष स्टार्टअप स्काईरूट एयरोस्पेस ने मंगलवार को यह घोषणा की। स्काईरूट एयरोस्पेस का पहला मिशन, जिसका नाम प्रारंभ है, तीन लोगों को ले जाएगा। इसे श्रीहरिकोटा में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के लॉन्चपैड से लॉन्च किया जाएगा। स्काईरूट एयरोस्पेस के सीईओ और सह-संस्थापक पवन कुमार चंदना ने कहा, "अधिकारियों ने 12 नवंबर से 16 नवंबर के बीच लॉन्च विंडो को नोटिफाई किया है। मौसम की स्थिति के आधार पर अंतिम तारीख तय की जाएगी।

इस मिशन के साथ ही, स्काईरूट एयरोस्पेस भारत की पहली प्राइवेट कंपनी बन जाएगी जिसने अंतरिक्ष में रॉकेट लॉन्च किया हो। इसे एक नए युग की भी शुरुआत माना जा रहा है और इसे साल 2020 में प्राइवेट सेक्टर के लिए खोला गया था। स्काईरूट एयरोस्पेस के सीईओ नागा भरत डाका ने कहा," विक्रम-एस रॉकेट एक सिंगल-स्टेज सब-ऑर्बिटल लॉन्च व्हीकल है जो तीन लोगों को ले जाएगा और अंतरिक्ष लॉन्च वाहनों की विक्रम श्रृंखला में अधिकांश तकनीकों का परीक्षण और सत्यापन करने में मदद करेगा। चंदना ने कहा कि इसरो और इन-स्पेस (इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथराइजेशन सेंटर) के अमूल्य समर्थन के कारण ही स्काईरूट इतने कम समय में विक्रम-एस रॉकेट मिशन को तैयार कर सका। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के संस्थापक और प्रसिद्ध वैज्ञानिक विक्रम साराभाई को श्रद्धांजलि के रूप में स्काईरूट के लॉन्च वाहनों का नाम विक्रम रखा गया है। हैदराबाद में स्थित, स्काईरूट अंतरिक्ष में कमर्शियल सैटेलाइट्स को लॉन्च करने के लिए अत्याधुनिक अंतरिक्ष लॉन्च व्हीकल बनाता है।

राष्ट्रदूत ( एच.यू.एफ. ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908